गिनीज बुक सारू

(राजस्थानी व्यंग संग्रै)

डॉ मदन केवलिया

समरपण

राजस्थानी हिन्दी अर उर्दू रा व्यंग्यकार–कवि
अग्रज श्री ओम केवलिया

श्री ओम केवलिया

अर अग्रजा श्रीमती राधा देवी पुरोहित
नै घणैमान रा् म्हारी आ सबदाजळी
श्रद्धाजळी रै रूप मैं,
सागै ई धर्मपत्नी डॉ प्रतिमा केवलिया
अर
बलगोठी डॉ नरेन्द्र भानावत अर श्री अमरनाथ कश्यप
री ओळ् मैं समरपित है।

म्हनै पूरो पतियारो है

'गिनीज बुक सारू' डॉ मदन केवलिया री तैंतीस व्यंग्य रचनावा री अेक टाळवीं पोथी है। लेखक आपरी झीणी सलीकेदार अर बिना लागलपेट री दीठ सू जिकी टरकाळ रचनावा दी है वै व्यंग्य साहित्य में अेक निजू अर निरवाळी ठौड राखै। व्यंग्य में नीं तो अळूझाण है अर नीं वडबोलोपण, नीं अणूंतो विस्तार है अर नीं दुरभावना सू जाणबूझ'र किणी नै नीचो दिखावण अर खिल्ली उडावण रा भाव। अस्लीलता फूहडपन अर चलताऊ ढर्रै रै बरखिलाफ ओ अेक साफ-सुथरो अर सलीकेदार व्यंग्य है।

बात नै कैवटण अर परोटण री सैली इती अनूठी है कै उणरो अेक ई नाव हुय सकै - केवलिया सैली। इणरै सागै म्हैं जे हिन्दी रो अेक सब्द 'केवल' लगाय दू तो इणनैं "केवल केवलिया सैली" कैयी जाय सकै। इणमें नीं तो किणी दूजै ख्यातनाँव व्यंग्य लेखक रै सिरजण रो पडबिम्ब है अर नीं कोई दूजो लेखक सोरै सास इयाफलै ढाळै री रचनावा लिख ई सकै। जागासर चोट करणवाळी मरम नै भेदण वाळी अनुभूति री तीख वाळी अर पळपलाट करती अबोट व्यंग्य रचनावा नै जै पढण रो चाव हुवै तो 'गिनीज बुक सारू' पढिया पाठक नै निराश कोनी हुवणौ पडै। अनुशासन विहूणी फूहड अर कोरी फुरफुरी जगावण वाळी व्यंग्य रचनावा तो आपनै घणी ई मिल जावैला पण सोच नै सवारण वाळी हिवडै में अनुगूंज छोडण वाळी अर सबखी व्यंग्य रचनावा रो सिरजण तो कोई इसो लेखक ई कर सकै जिकैरी भाषा चुस्त भाव मंजियोडा दीठ ऊंडी अर चौतरफी हुवै। केवलिया जी राजस्थान रा सिरैनाँव व्यंग्य लेखक है अर आ पोथी इण बात री साख भरै।

विसगतिया सू छळियोडै आज रै जुग में अेक सरवरै अर धारदार व्यंग्य री घणी जरूरत है। डाक्टर रै हाथ रै नस्तर ज्यू चीरफाड हुवता थका भी आछै व्यंग्य रा भाव सुधारकरण रा होवै न कै डाकू ज्यू खजर लेय'र हत्या करण रा। दूध रो दूध अर पाणी रो पाणी ज्यू बात चौघडदी सामनै आवणी चाइजै फेर जे दोसी मिनख माय रो माय तिलमिलावै चिरमिराट करै या तरला खावै तो भलाई खाओ पण व्यंग्य री तासीर इसी हुवणी चाइजै कै माय सू आह भरता थका भी बारै सू तो 'वाह' ई कैवणो पडै। आ ई तो रळकवीं भासा कैवणगत री सैली सधियोडै लेखन अर समाजू सरोकार वाळी दीठ री खासियत हुया करै। इणनै जे कला रो नाव दियो जाय सकै तो केवलिया जी अेक नामी कलाकार है।

'गिनीज बुक सारू' रो पैलो पाठक होवण रै नातै म्हैं केय सकू कै आ पोथी व्यंग्य साहित्य री आपरै ढगढाळै अर लकव री अेक अलग ई तासीर री न्यारी निरवाळी पोथी है जिकी दूजी भासावा रै जोडाजोड छाती ताण'र माथो ऊचो कर'र ऊभी हुय सकै।

पोथी री केई विसेतावा है। पैली तो आ कै इणमें जबरदस्त सबद सयम अर कसावट है। नीं तो कठैई भरती रो मसालो है अर नीं आलतू-फालतू विस्तार। दीठ सिकारी ज्यू चिडी री आख माथै टिकियोडी है। सधियोडा हाथ नीं हुवै तो व्यंग्य तो हेठै आय पडै अर चिडी फुर्र दैणी सी'क उड जावै। दूजी आ कै इण में भात-भात री रगत अर भात-भात री विधावा री भेळप है। कठैई रेखा चितराम वाळी रजकता है तो कठैई सस्मरणा री ओळख कठैई ललित निबन्ध वाळा आस्वाद है तो कठैई आपबीती रै ताण आत्मकथा रै किणी अस रो दरसाव कठैई कहानी वाळो प्रवाह है तो कठैई ताजातरीन उपमावा अर प्रतीका री छटा में कविता वाळी मौलिकता कठैई ललित निबन्ध री छिव है तो कठैई तर्क अर दरसण रै भेळप रा दरसाव। लेखक रो अनुभव-ससार रो फैलाव तो अचूभै में डालण जिसो है। माळीपाणा चढियोडै चै'रा रो मायलो बिडरूप देखावण में तो लेखक नै जाणै कोई पी-एच डी ई मिलियोडी है।

तीजी विसेसता अनूठी अर बिरली मौलिकता रै सागै कथ्य रै चुणाव री है। अेकदम नुवा अटग अछूता अर दूजा सू साव न्यारा विसय लेय'र व्यंग्य नै केवटणो कोई हँसी-खेल कोनी। अै विसय है 'बोर रस री शास्त्रीय व्याख्या' 'शोध निर्देशक रो दस नम्बरी कार्यक्रम' 'पाछी आयोडी रचनावा माथै रिसर्च' 'भाडा सस्कृति' अर 'आ भी एक कला है'। इया लागै जाणै भरत मुनि अर मम्मट जिसा जूना विद्वाना री आत्मा आय'र केवलिया जी में परपीजगी व्है। 'बोर रस री शास्त्रीय व्याख्या' री जिसी बारीक विवेचना हुई है उण

जोड़ री दिवेचना आपने आखे व्यंग्य लेखन में कोनी मिल सकै। केवलिया जी चावै तो इण आलेखा रो पेटेण्ट कराय सकै जियां लोग हल्दी नीम अर बासमती चावल रो पेटेण्ट करावै।

चौथी बात आ कै पोथी में समूळे परिपेख री सबळी व्यंग्य रचनावां है फगत मनोविनोद अर बेतुकै हास्य री चासणी वाळी रचनावां कोनी। जठै कठैई हास्य रो सायरो लियो गयो है बठै हास्य सोनै में सुहागै वाळो काम करै व्यंग्य माथै हावी होवण सारू आमीं सामी पाळा कोनी मांडै।

पांचवी विसेसता सोच रा सरूवर देवण री है। हरेक व्यंग्य री पूठ में कोई न कोई रास्तो मानव मोल या फिर रैवण वाळी सोच है। यू लागै जाणै अै सोचप्रधान रचनावां मोतिया सूं भरियोड़ी थाळी ज्यूं पाठक रै सामीं मेल दी गई हुवै।

छठी विससता लिखणगत री सैली री है। माल आछो हुवै तो माल पुरसण रो ढब भी तो आछो होवणो चाइजै। औ ढब इंर्ण रचनावां में है।

अेक और विसेसता चणखरी रचनावां में लेखक री निजू या प्रतीक रूप मौजूदगी री है। जद लेखक धुन माथै ई व्यग्य करण मे कोनी चूकै तो फेर दूजां माथै दड़ाछट व्यग्य री छूट तो आपै ई मिल जावै। पोथी में साहित्यकारां शोप निर्देशकां आलोचकां प्रोफेसरां अर नेतावां माथै आडैकर व्यग्य किया गया है पण खासियत आ है कै किणी मिनख विशेष माथै नीं होय'र समूह माथै है प्रकृति माथै है चालू ढग ढाळै माथै है। केवलिया जी किणी सू आट काढण सारू व्यग्य रो सायरो कोनी लेवै।

यूं तो सगळी बतीस रचनावां में कीं न कीं नुवी बात है इण सारू नमूनै रै नाव माथै किणनै छाटू अर किणनै छेडूं वाळी बात सामी आवै। फेर भी प्रवृत्तिमूलक कीं ओळ्या नीचै मुजब है - (१) आपा रै देस में नकल रो भविष्य ऊजळो है। भाषा में नकल करण हाळा केई छात्र बाद में भाषा निदेशक/अधिकारी बणग्या। (तरीका नकल रा) (२) 'लोगबाग पी-एच डी करावण सारू घणा पीसा लेवै अर स्टुडेण्ट उणारा चोटीकटूधा सिस्य बणिया रैवै। म्है २१ पी-एच.डी मुत में कराई अर डिग्री मिलण रै बाद बै सगळा जणा ईंया गायब होता गया जियां काव्यगोष्ठी में श्रोता गायब होता जावै। (भाड़ा संस्कृति) (३) 'एक दफा म्है अेक ऊचै अफसर नै पूजा में रत देख्यो। बै मई (विनीत) अर भगती-भाव सूं भरित भगवान री पूजा कर रैया था। म्है बचपन सू जाणतो हो, बो कट्टर नास्तिक हो अर ई टेम म्है घमगूगो दाई बीनै देखतो रैयो। म्हारो सिर झुक्योड़ो हो, बीं म्हारी ओर देख्यो अर कैयो "आखा दिन जनता नै तो मूरख बणावा ही हा थोड़ा टैम भगवान नै ई " अर बो मुळक्यो।' (बै पुजाघर में है) (४) "म्हैं सरूपोत रो डाक्टर हू। आज तो "कुटीर उद्योग री कृपा सूं घणा ई डाक्टर बणग्या। (म्हनै सभापति बणावो) (५) आपा माय सू आदर्शवादी हा कै नीं आ दूजी बात है, पण मुखौटा आदर्शवाद रा लगा'र बारै जावां। अेक दफा लोक सेवा आयोग में इन्टरव्यू री टैम जद अेक उम्मीदवार रो नाव लियो गयो तद अेक विशेषज्ञ (इन्टरव्यू लेवणियो) आ बात कैय'र बारै गयो परो कै 'म्हारै नालायक बेटे भी फार्म भरयो हो म्हनै कैयो ई कोनी। म्हैं बेटै रो इन्टरव्यू कोनी लेवू अर बीं रो 'नालायक बेटो चुणीजग्यो। (सिफारिश सूं परहेज)। (६) 'बीं नै सगळा फूठर जी कैवै अर बो राजी हुवै। बीं नै नांव पसद है। इया बीं रो मूंडो तवै सूं कटजोड करै, आंख्या 'लुकिंग लदन टॉकिंग टोकियो जिसी है केस अकाल रै घास सरीखा माय घाव हुसी तो बींसू लोई दी जागा कोलतार ई बारै आसी कोई बींरी हसी नै बाज्ळा माव चमकण आळी बीजली री ओपमा देवै पण फूठर जी नै ई बातां सू कोई मतलब नीं है।" (अेक तो बाबाजी फूठरा घणा)। (७) अर "म्हारी जात आळा आदमी अकादमी में है बांसू ठाह पड़ी कै आपरै कनै म्हारी पोथी आई है। आपा अेक ई जातरा हां। देख्या इण आगळी सू आ आगळी ज्यादा नजदीक है। थे समझ गया होवोला। (जात पात पूछै नहिं कोई)

कुल मिलाय'र कैयो जाय सकै कै केवलिया जी रै व्यग्य लेखन में अेक सजोरोपण है। दोधाचींती में पडियोडे मिनख री भावनावा नै समझण में अर विसगतियां सै मेट'र मिनखाचारै री आब नै उजलावण में अै रचनावा कारगर हुवैला - म्हनै पूरो पतियारो है।

भवानी शकर व्यास 'विनोद'
१-स-६, पवनपुरी बीकानेर

म्हारा दो आखर

व्यग्य चोखै मिजाज री व्यजना है। ओ इसो हथियार है जको गुलाब री परता माय ढक र चलायौ जावै पण इण री चोट खासी प्रभावशाली हुवै। व्यग्य गजबी चीज है इण रै गजबोह सू मिनख अर समाज नै मायली टाकर नैं सभालणौ मुस्किल व्है जाय। व्यग्य री टकोर बडे–बडे महारथिया री नींदडी खराब कर नाखै। व्यग्य रो गुजराण जे चोखै ढग सू कर्‌यो जावै तो ओ समाज–चेतना नै भी जगावण रो काम कर सकै है आजकल व्यग्य लिखण री चरस बधती जाय रैयी है क्यूकै राजनीति समाजू भ्रष्टाचार अर केई अनीतिया सारू चीर–फाड री आज मोकळी जरूत है। व्यग्य झूडण री क्रिया माय ई माय करै। अर बारै सू मुळकतो रैवै।

अबै हास्य सू व्यग्य अलगो होयग्यो है। अबै व्यग्य हसावण रो काम कोनी करै सिरफ चिउटी बोढै। जिण सू बडा बडा जगजूट भी चित्त व्है जावै। व्यग्य निरवाळी जिनस है। कई लोग व्यग्य नै समाज–सुधार रौ साधन भी समझै है पण म्हारो ख्याल है कै व्यग्यकार समाज मिनख अर देस री सगळी समस्यावा माथै व्यग्य तो करै ई है पण इण सू समाज–सुधार रो परतख सबध नीं है – परोख सू कोई सुधार जावै का खुद नै सोचण सारू त्यार कर लेवै – आ बीजी बात है पण व्यग्यकार री चित्या सिरफ समाज सुधार री नीं है।

पूरौ साहित्य ई जीवण सू जुडयोडौ है फेर व्यग्य विधा इण सू अळगी कीकर होय सकै है। व्यग्य जीवण अर समाज रै नेहडै रौ दरसाव है – यथारथवादी दरसाव। जीवण री तरिया व्यग्य रा विसय भी अनत है – हरि अनत हरि कथा अनता। चिउंटी सू लेयर आकास ताई इण री व्यापकता है।

राजस्थानी माय व्यग्य लिखण री स्वतत्र परम्परा हिन्दी दाई सुतत्रता रै पछै ई विगसित व्हैयी। इया तो साहित्य री दूजी विधावा मे व्यग्य री धार अर मार सरूपोत सू ई निजर आय रैयी है पण व्यग्य विधा रै पेटै इण नै छठै दसक रै बाद री विधा मानी जाय सकै है।

समकालीन राजस्थानी व्यग्य रौ भरपूर भडार निजर आवै है पण छप्योडी पोथिया बेसी कोनी। सायत प्रकासक भी व्यग्यकारा री चोट सू बचणा चावै है। व्यग्यकार तो किनै छोडै ई कोनी खुद माथै भी व्यग्य करै। पत्र–पत्रिकावा मे म्हारा

व्यग्य काफी पहला सू ई छपता आया है। इण माय सगळी राजस्थानी–पत्रिकावा रा सरावण जोगदान है खासकर विणजारो अर जागती जोत रो।

गिनीज बुक सारू व्यग्य सग्रै री त्यारी रै वगत म्हैं बेमार होय गयो जद कै इण व्यग्य मे लिख्यो हो कै दिसम्बर मे बेमार पडू। इण सारू प्रेस आद री भागादौडी बधगी। लाडैसर शरद ओ काम ढगसर कर्‌यो। सौ इन्दिरा बेमार री सेवा करी अर मन्मथ जाह्नवी (पोता–पोती) म्हारौं मनोरजन करयौ। इणा री वजह सू व्यग्य सग्रै रौ काम होय सक्यौ। इणा नै आशीर्वाद। सुनील जी भी टकसर काम नै खतम करण मे योगदान कियौ। वानै घणारग।

मोकळ–चोकळ साधुवाद

1 राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति अकादमी बीकानेर नै।
2 राजस्थानी रा सिरैनाँव हस्ताक्षर श्री भवानीशकर व्यास विनोद श्री अम्बू शर्मा श्री नागराज शर्मा श्री श्याम गोइन्का डॉ मनोहर प्रभाकर श्री प्रहलाद श्रीमाली श्री हरमन चौहान श्री श्याम जागिड डॉ तारा लक्ष्मण गहलोत श्री लक्ष्मीनारायण रगा श्री ताऊ शेखावाटी डॉ दयाकृष्ण विजय श्री पूरन सरमा (जयपुर) डॉ मनोहर लाल गोयल (जमशेदपुर) अर डॉ कन्हैयालाल शर्मा (कोटा) नै आपरा घणमोला विचार अर शुभकामनावा प्रगट करण खातर।
3 श्री सुनील तलदार अर प्रकाशक श्री बृजमोहन पारीक नै पोथी प्रकासण सारू।

(डॉ मदन केवलिया)
प्रतिमा सी–68 सादुलगज
बीकानेर – 334003 (राजस्थान)

विगत

जात-पात पूछै नहि कोई

आपारा सत कवि सूधा अर भोळा हा। उत्तर आधुनिकता का भूमण्डलीकरण सू परै हा। मिनख पणै रा ऐनाण–सैनाण पिछाणता हा। जणैईज वा कैयो जात–पात पूछै नहि कोई हरि कौ भजै सो हरि कौ होई। आज अपूठो क्रम होय गयो है। हरि नै भलैई ना भजो पण जात–पात री ओळखाण जरूरी है। राजनैतिक दला री लुगात मे तो जात–पात रस्सै सू ऊपर मॉडीज्योडी रैवै।

सदीव री तरह बी दिन भी किस्मत फोरी ही। म्हनै प्लॉट री लीज मनी जमा करावणी ही। दफ्तर माय इग्यारै बजी पूगौ तो इया लाग्यो कै आज छुटटी है पण याद आयो कै आज तो सोमवार है। सोच समझ'र दफ्तर रै सामी पार्क मे बैठग्यो। आपा लोग जेट स्पीड' सू कोनी चाला। होळै–हौळै रे मना होळै सब कुछ होय माली सींचे सौ घडा रितु आया फल होय। म्हैं भी जाण गयौ कै जल्दी करणै सू काम कोनी चालै। जल्दी रो काम सैतान रो काम हुवै' आ बात तो आपा नै ठा ई है। बारह बजी पाछो वीं दफ्तर माय गयो। दो चार मिनख ऊभा हा मतलब कै छुटटी नीं ही।

म्हने पीसा जमा कराणा है म्है पूछताछ आळी जागा ऊभै अेक मिनख सू कैयो। म्हनै भी सागी ई काम करणो है वो मुळक्यो पण पूछताछ हाळा वर्माजी तो हालताई आया ई कोनी। बी टैम अेक जणौ नौ दिन चालै अढाई कोस' री स्पीड सू बठै आयनै बैठयो। वर्माजी ने उडीकतो मिनख पूछयो – आज वर्माजी छुटटी पर है काई।

आईज समझो। दफ्तरा मे छुटटी लेवण री दरकार ई काई है। फेर कैयो – म्है भी वर्माजी हूँ।

या सू काम हो कै र वो मिनख चल्यो गयौ। म्हनै ठा पडी कै लीज मनी' जमा करण आळी कोई सरला वर्मा है। म्हैं सरलाजी कानी दूवयौ या मूडौ हेठै करनै कोई उपन्यास पढ रैयी ही। म्हनै लीज मनी जमा कराणी है म्हैं जोर सू बोल्यौ तद वीं देख्यो। अरे आ छोरी तो स्कूल मे म्हारी स्टूडेट ही। म्हैं पिछाण गयौ पण वा सवालिया दीठ सू म्हारै कानी देख'र वोली – फेर आया अवार म्हैं बिजी हूँ

म्हनै ओलख्यौ ? म्हैं हसरत भरी निगावा सू बी नै देख्यो।

पचासू लोग रोजीना आवै किण–किण नै औळग्यू ? अर वा पाना पलटण लागी।

आपरै कनै उपनगारा पढण सारू टेम है अर तीज गनी री रकम बतलावण सारू टेम कोनी। कमाल है। म्हैं सोचा करगौ। आज रा मिनख फजल-फूकळ री भाषा ई समझै। खनली मेज आळो कोई भलो मिनख हो। वो सरला सू रजिस्टर लेयर हिसाब-मिलान कर्‍यो अर कैयो कै आठ सौ चालीस रिपिया एक मुश्त जमा करार पींडो छुडायौ। अर स्लिप वणार म्हनै दे दी। म्हैं वानै साधुवाद देवण सारू वारी नेमप्लेट कानी देख्यो – अशोक वर्मा। म्हैं घणा रग देयर बारै आयो। दरवाजै रै पाखती भी मोकळी फाइला रुळ रैयी ही। 'इणा मे ई कठै भोलाराम रो जीव भी तडप रैयो होसी' आ सोचर म्हैं अकाउटैंट अर कैशियर रै कमरे कानी आयो। कैशियर श्रीलाल वर्मा बठै नीं हो – कैंटीन गयो हो।

अचाणचक म्हारै मूडै सू निसरयौ वा वर्माजी। चपरासी आयो – थे म्हनै बुलायौ। म्हैं कैशियर वर्मारी वात करी जणै ठा पडी कै आज कैन्टीन रो ठेको है अर वर्माजी आपरै सुपातर भाई नै दिरावण सारू भागदौड कर रैया है। जद ऊपर सू हेठै ताई भाई भतीजावाद चालै तो वर्माजी रो काई दोस है ? भाई ई भाई रै काम आवै। आपा एकई तो परिवार रा हा – वसुधैव कुटुबकम्। परिवार आळा ई तो दुख-सुख मे सगी साथी वणै। अेकलौ मिनख जिन्दगानी रा रस्ता भटक जावै।

पीसा ई आज री सजीवणी सगती है। म्हारौ अेक मितर कैवै कै जद दफ्तर माय कोई मिनख काम करण री हामी भरलै अर पीसा भी कोनी लेवै तो समझ लेणौ चाहिजै कै वो काम नीं करैलो। लूखी कुरसी सू क्लर्का नै वैर है। वै बठै अमूझ जावै। अग्रेज लोग आपारा कित्ता हेताळू हा आपा नै दफ्तर दिया क्लर्क दिया क्लर्का रा तौर-तरीका समझाया वा नै नागातूत वणण रो माहौल दियौ। दफ्तरा मे नाम सारू अधिकारी बैठाया। वानै काळो चश्मो अर काळो धन इकट्ठा करण री जरूरत समझावी।

म्हैं सोच रैयौ थो कै जिण तरिया फिल्मा रा नौकर 'रामू' ही वाजै उण तरह अठै दफ्तर रा वावू भी वर्माजी वाजै। सता तो जात-पात सू परहेज करता हा पण आज जात-पात सू परहेज करण आळी राजनैतिक पार्टी सोरी सास को लै सकैनी। अेक-अेक सदस्य रै चुणाव सू पहला ई जात-पात री अकगणित त्यार करणी पडै। टिकट देवण सू पैलाई बी जागा रा जातिगत समीकरण माथै बैठका व्है। किणी भी जात नै कोई भी पार्टी नाराज करण री 'रिस्क' कोनी लै सके अपूठी वा नै राजी राखण सारू सब्जबाग भी दिखाया जावै। जात-पात तो भारतीय लोकतत्र री आधारशिला है।

जिण तरह नेता लोगा री आदत समारोह थला पर देर सू पूगण री हुवै उण तरह कर्मचारिया री आदत भी दफ्तरा मे देर सू पूगण री हुवै। इण देस रा वासी घणा सहणसील है। भलैई कोई युद्ध का झगडो माड लै म्है तो सदीव युद्ध विराम ई पसद कराला।

म्हैं बैंचडी माथै बैठयो कैशियर वर्माजी रो इन्तजार करतो रैयो पण बै

पुरस्कारा दाई म्हारै कनै नी आया। चपडासी वर्मा भी वर्मा जी री तलाश मे गयौ पण 'बुद्धू दाई पाछा आय गयौ। म्हैं सोचयौ कै अफसरा सू वात करणी चाहिजै। पण सचिव नारायण दास वर्मा अर निदेशक का अध्यक्ष दीनदयाल वर्मा भी मौजूद नी हा। पूछयौ तो ठा पडयो कै वै वर्मा समाज रै फक्शन मे गया है। म्हैं रीसा बळतो बोल्यो – 'तो बाकी वर्मा लोग अठै झख मार रैया है ?

'वानै आज पटटा अलॉट करणा है। फक्शन में काई है। अठै तो पाचू घी मे है। वठै फक्शन मे तो वर्मा समाज रा सुपातर छात्र–छात्रावा रा सम्मान जात–समाज कानी सू होसी।

अै लोग ज्यादा सुपातर है। समाज नै भष्ट लोगा रा भी सम्मान करण री परम्परा घालणी चाहिजै। समाज इणा सू जिदो है अर अै जात समाज सू।

वारै आवतै ई म्हैं अेक जणै पूछयौ – आप डॉ केवलिया

हा फरमावो।

आपरै कनै पुरस्कार–समीक्षा सारू म्हारी पोथी आवैली। आप सिरदार जात का हो। म्हैं मुळक्यो। आ चोखी वात है कै म्हारै सरनेम सू म्हारी जात रो पतौ कोनी पडै। कई दफा म्हारै साम्हैं ई कई बुद्धिजीवी म्हारी जात नै गालिया काड जावै। म्है सिर्फ मुळकतो रैवू।

म्हारी जात आळा अकादमी मे है वा सू ठा पडी कै आपरै कनै म्हारी पोथी आई है। आपा अेक ई जात रा हा। देख्या इण आगळी सू आ आगळी ज्यादा नजदीक है। थे समझ गया होवोला।

✿ ✿

तरीका नकल रा

जिण तरिया हरेक कसूरवार जाणै कै कपडीजण रै पच्छै यी रो काई हश्र हुसी उण तरिया परीक्षा मे नकल करण आळा भी आपरौ चन्द्रमौ समझै। अब तेरा क्या होगा कालिया' री तर्ज माथै बीनै भी ठाह है कै यी रौ काई हुसी। जियाँ अपराधी आपरी आदता सू बाज नी आवै विया नकलची भी नकल रौ स्वाद नी छोडै। नकलची आपरै भविष्य नै दॉव माथै लगाय र भी रिस्क जरूर लैवै। आज रिस्क' छोरा अर छोरिया दोनू लैवै।

आजकाल परीक्षावा आखै साल चालती रैवै। कालेजा मे बठै री परीक्षावा तो कमती हुवै बैंक कम्पीटीशन इत्याद री दूजी परीक्षावा ज्यादा हुवै। इण सारू नकला रा भी नुवा–नुवा प्रयाग' हुवै। इणा प्रयोगा माथै ओक पोथी लिखी जाय सकै है पण म्हैं अठै बानगी रै रूप मे कुछ विशिष्ट प्रयोगा नै साम्है राखू। परम्परागत तरीका सू तो आप भी परिचित होवोला – प्रयोग भी करया हुसी।

अठै म्हू साची बात बता रैयो हू, कै चावतै थकै भी म्हैं कदेई नकल कोनी कर सकयौ। डरपोक तो टाबरपणै सू ई हो पण सागै ई आख्या भी बेहद कमजोर ही। आठवी क्लास ताईं बोर्ड माथै न देख र कनलै सहपाठी री कापी नै देख'र सवाल उतारतो। नवी मे मास्टर जी बारै काड दियो कै नकल करै' | फेर चश्मा लगा'र आयो तद किलास मे बैठ सक्यो। कमजोर आख्या रै पेटै कई बार चापट भी खावणी पडी।

नकल रो इतिहास सायत परीक्षा रै इतिहास जितो जूणौ है। पण नकल करणिया उस्ताद कमती ई होया है। म्हैं तो नकल सू पैली दफा 1951 मे परिचित हुयो। म्हारो गोठियो अर म्हैं विशारद रो इम्तिहान दे रैया हा। इण मे हिन्दी साहित्य रै सागै–सागै दो विषय और भी लेणा पडता हा। म्है इतिहास अर अर्थशास्त्र विषय लीधा। भारतीय इतिहास री परीक्षा ही। आधुनिक काल सू अेक प्रश्न आयो – विलियम बैंटिग रा सुधार। बो गोठियो पेपर देख र दु खी होयग्यो। इन्विजिलेटरा री जिया आदत हुवै बै दरवाजै सू बारै ऊभा गप्पा लडा रैया हा। म्हारौ वो गोठियो भारत का इतिहास – आधुनिक काल' पोथी लेय र म्हारै कनै आयौ बीनै इतिहास विषय लेवण री नेक सलाह' देवण री गलती म्हैं ही करी ही। वो परेसाण हो – बैंटिग रा सुधार ई पोथी मे कठै बळै? म्हे घवरा गयौ। इन्विजिलेटर वारै ई हा – बैंटिग रो ।५ उतार ले कठै न कठै सुधार भी मिल जासी म्हैं होळै सीक कैयो अर दिसम्बर

रै महीना मे भी पसीना पोछयो। वो राजी होय र गयौ अर बैटिंग रो पूरो अध्याय ई नोट कर लियो। वो पाच मे सू दो ई सवाल करण जोगो रैयौ। फेर म्हासू नाराज होयग्यौ।

साहित्यरत्न री परीक्षा ही। म्हैं गुजराती भाषा लीधी ही। परीक्षा भवन मे हिमालय नो प्रवास (काका कालेलकर) रो प्रश्न कर रैयो थो। आ दूजी कापी ही। देख्यौ पैलडी कापी तारा ज्यू परभाती गायब ही। म्है ऊभो होय'र पर्यवेक्षक जी सू कैयो – सर म्हारी कापी गायब है'। बी कैयो – 'सर रो सिर ना खा मिल जासी कॉपी बी टेम लारैसू आवाज आई – म्हारै कनै है दे देस्यू। चुपचाप बैठ जा। म्हैं चुपचाप बैठ र लिखण लागौ। इम म्हैं कुटीजण सू बच्यौ।

म्हैं छात्र जीवण मे इणा दो घटनावा सू जुडयौ पण कॉलेज मे अध्यापक बणण रै पच्छै तो हर साल नुवा–नुवा प्रयोग देखण रा महताऊ मौका मिल्या। म्है खुद तो लिखइ चुक्यौ हू, छोरा–छडा नै पकडण री हिम्मत कोनी करी पण दूजा जूनियर अध्यापका री हिम्मत रो श्रेय जरूर लियो।

नकलची कलाकार हुवै। वा रौ मनोवैज्ञानिक अध्ययन तो म्हैं कर लियौ पण वा री बखिया उधेडण रो काम घणो दोरौ हो। इण सारू म्हैं खुद नकलची नै पिछाण परो भी चुप रैंवतो बीजा कोई वानै कपडता तो म्हैं उछळकूद जरूर शुरू कर देवतो। म्हारै जिसा जबुक ताखडा' बण'र प्राचार्य री वाहवाही लूट लेवता।

अेक छोरो गरमी रै मौसम मे कोट पहर नै आयो हो – बुखार है कह र बैठ गयो। पेपर बटीज्या। वो छोरो कदैई कोट री जेब टटोलै अर कदैई पेट री। बो परेसाण हो फेर बिगर पेपर दिया ई घटे भर मे गयो परौ। बाद मे ठाह पडी कै सवाला रा उत्तर तो वीरै खूजा मे हा पण बीरी लिस्ट घरै छोड र आयो हो जिण मे आ सूचना ही कै किसै सवाल रो उत्तर किण जेब मे है ? इत्तो खरच करनै बो पेपर री ठाह भी करी पण लिस्ट सगळो काम खराब कर दियौ। किस्मत ही खराब ही। पण बाद मे बीरी किस्मत पढाई छोडण रै बाद चमकगी। आज वो अमेरिका मे बडो उद्योगपति है।

अेक बार अेक छोरी रूमाल मे सवाला रा उत्तर लिख'र लाई। आखरी पेपर हो पण बा कपडीजगी। बा बोली – जद म्हारो रूमाल तीन दिना ताई किणी नै नी देख्यौ तो आज क्यू देख रैया हो ? का तो पैले दिन ई देखता म्हारै सू दुश्मनी है काई ? बा छोरी भी आज लेक्चरर है। इण भात अेक नेता टाइप छोरौ परीक्षा भवन मे थैला भर'र पोथिया लायौ – पर्यवेक्षक टोक्यौ तो बी पूछ्यौ – आज किसो पेपर है ? दूजै छोरा बतायौ – यूरोप रे इतिहास रो। जणै वीं भारत रो इतिहास विश्व रो इतिहास इत्याद री पोथिया अेक छोरै नै देय'र कैयो – खाली यूरोप रै इतिहास नै ई राख रैयो हू बीं पर्यवेक्षण बी कमरै सू दूजै कमरे मे ड्यूटी लगवा ली। ओ छोरो बाद मे बडौ नेतौ बण्यौ। इसा सपूत ई तो शिक्षा रा आधार स्तम्भ है।

कुछ विद्यार्थिया रा हाथ परीक्षा रै दिना मे टूटया करै बै होशियार

नै ई नी लावै कमरौ भी एकात मे लेवै। घणकरा जूणा (नेता) छात्र इण बात रौ पूरौ फायदौ उठावै अर बी री बी ए ताई री थर्ड डिवीजन एम ए मे फर्स्ट डिवीजन मे बदल जावै।

आपारै देस मे नकल रौ भविष्य उजळो है। भाषा मे नकल करण आळा केई छात्र बाद म भाषा निदेशक/भाषा अधिकारी बण गया। हिन्दी/अग्रेजी रा नकलची इण भाषावा मे प्रोफेसर भी आसानी सू बण जावै। अपवाद तो प्रकृति रो नेम है। सगळा जणा 'वीर' को नी हुवै।

केई पर्यवेक्षक 'सरफरोशी री तमन्ना' लेय'र नकल करणिया नै कपडै चोखौ माहौल बणावै अर कई दिना ताई छोरा री नकल करण री हिम्मत ई नी हुवै। प्राचार्य मा'रै ई ओ माहौल निर्भर व्है।

रिटायरमेट रै पछै केई प्रोफेसर आपरी 'वीरगाथावा' रा बखान करै कै वानै देख'र छोरा रा रू-रू कॉंपता अर वै आपा रै नेडै ई नी आवता। अेक दफा इसी बात सुण'र मि नी म्हैं सू पूछ्यो – 'साची बात है काई ?

बिल्कुल साची' म्हैं जोर देय'र कैयो। वो प्रोफेसर घणो राजी हुयौ फेर म्हैं कैयो – आप रो आतक इतो हो कै छोरा-छडा आपरी किलास मे ई नी बढता हा।

पितृ-शोक - अेक मोटा अफसर नै

जिया डोकरा री आदत हुवै बै (घणकर) सरदिया मे ई चालता रैवै जिणसू आवण–जावण आळा नै फोडा कोनी पडै। मोटा अफसर रोहित जी रा पिताश्री भी धुध सू भरयोडी जनवरी री रात नै जद आखिरी सॉस लीनी तद मोटा अफसर मोटी घरनार रै सागै अफसरा दाई जीमण नै जाय रैया था। बापू बाथरूम जाय रैया हा पण अधबीच ई खिर पडया। घर रौ जूनो नौकर केशव (फिल्मा मे हुवतो तो रामू नाव होतो) हाका करयौ साहब दम्पती आयनै देखयौ अर डागदर नै फोन करयौ। डागदरा कनै कठै भी जावण रौ टेम कोनी हुवै (फिल्मा मे तो टेम हुवै) पण ऊचा अफसरा सारू हरेक नै ई टेम हुवै। डागदर साहब आया अर फिल्मा दाई 'सॉरी' कहनै गया परा बठै धौळी चादर नी ही नींतर चादर भी ओढा देवता।

अवै ? आला अफसर दम्पती रो मजो ई किरकिरो होय गयो। ईया नै अबार ई लोई पीवणी ई घरनार सोच्यो अर दोनू जणा आपरै कमरे मे गया परा। गाभा बदल'र साहब आया अर कई लोगा नै फोन करया खास तौर सू दफ्तर आळा सहायका नै। घणी ठड ही फेर भी बरफ री सिल आई। ठडो जल जिणनै गरमिया मे नसीब नी होय सक्यो थो बो अवै बरफ री सिल माथै सूतो हो – आखिरी दिना मे फ्रिज नै तालो जड'र बहूरानी कहती कै नौकर–चाकर फ्रिज सू चीजा खाय लेवै। डोकरै सारू मटकी ही। अवै बो ठाठ सू बरफ माथै सूतो हो।

रोहित जी रा दो सहायक रात भर बठै रह गया बापू कनै। रोहित दम्पती रा टाबर–टींगर हाइटैक स्कूला (दिल्ली) मे भण रैया हा वानै टेरण री जरूरत ई नी ही। वानै रोवणो अर रोळो–रप्पो पसद नी हो। हेठै दफ्तर रा मिनख अर नौकर–चाकर बापू रै शात सुभाव सहानुभूति मिनखपणो आद री चरचा करता रैया। रोहित जी हर मौकै माथै मिनखा नै केवटणो जाणतो हो। ईयाई इसै मौकै माथै लोग निलनिसी बोनम (मरण आळै रै बाबत चोखा विचार) नै मानै ई है। इया तो बापू दूजै बेटै हरीश रै अठै ई रिटायरमेट रै पछै रैंवता हा अठै तो दो महीना पहली ई आया हा। विधुर हा।

अखबारा मे शोक समाचार गया वा सूँ पहला ई पत्रकार साहब रै अठै पूग गया। बापू री फोटो जीवनी अर दूजी जरूरी बाता रोहित जी सू पूछी। रोहित जी श्रवण कुमार बण्या भर्‌योडै गलै सू (जुकाम री वजह सूं) 'पितृ–सेवा' रा सागोपाग

चितराम पेश कर रैया हा। पत्रकार अर दूजा मिनख बेहद प्रभावित हा। सगळा जणा जद बहीर होया तद दम्पती जीमण–जूठण कर्यो।

दिनूगै दाग रो कार्यक्रम अखवारा मे छप्यो। झुड रा झुड लोग वतळावण नै आवण लागा। रोहित जी कनै वापू री घणी जूनी फोटो ही जकै नै रात नै मडवार मेज माथै राख दी ही। पुष्प–पत्र भी राख दिया हा। कनै ई साहब बैठ गया – सफेद झक कुर्तो–पायजामो। केशव रात भर वठै ई हो दिनूगै सू पहला ई नाश्तो त्यार करनै साहब नै जिमा दियो। च्यारूमेर गाडिया ई गाडिया ऊभी ही। कलेक्टर साहब अर कमिश्नर साहब श्मशान (मसाण) घाट आवण रो टेम पूछ्यो। सात–आठ कारा रो इन्तजाम कर दियो। ट्रक भी आयग्यो हो।

रोहित जी काधौ दियो। लुगाया री रोवण री आवाज उठ र वद होयगी। वा बारै सू ई हाथ जोड दिया। ट्रक माथै माटी री देह राखी गई। साहब ट्रक रै लारै ऊभा हा अर लोगा री शोक–सवेदना स्वीकार कर रैया हा। राणी बाजार चौराहे माथै अरथी नै उतारयो गयो। साहब फेर काधौ दियौ लोग जय–जयकार कर रैया हा। वापू नै तो लोग ओळखता ई नी हा पण लोकप्रिय साहब रौ वार–वार गुणगान कर रैया हा। वीडियोग्राफी बरोबर चाल रैयी ही। कई फोटोग्राफर भी हा। अफसर पत्रकार साहित्यकार अर दूजा बुद्धिजीवी तो हा ई व्यापारी री लोग स्सै सू ज्यादा हा। साहब इन्कमटैक्स आयुक्त हो।

साहब पैदल ई परदेसिया री बगीची गया। वापूश्री नै मुखाग्नि देयनै मसाण रै अेक कानी बैठ गया। कलेक्टर साहब अर कमिश्नर साहब थोडा लेट आया अर मालावा चिता माथै चढा'र गया परा। वारै सागै वीडियोग्राफी अर फोटोग्राफी जरूर व्हैयी। दीनू, साहब रै काधै माथै हाथ रखनै सवेदना व्यक्त करी।

दाग पूरौ होवण सू पैला साहब पीए नै बुला'र की समझायो फाइला री चरचा भी व्हैयी फेर कैयो – डोकरै रै मरण सू घणौ आर्थिक घाटो हुयौ है इण री भरपाई बेगी करणी है। टैंडर मगवाणा है तो वेगा मगवावो। चलो पब्लिसिटी ठीक–ठाक होयगी है।

साहब मूडै लाग्योडै पीए कैयो पितृ–शोक री पब्लिसिटी मे तो आप अव्वल रैया हो। साहब मुळक उठया।

✿ ✿

कीर्ति वड़ा भाई साहवा री

राजस्थान रै वीर पुरुषा रण–वाकुरा अमर सेनानियाँ वीरागनावा इत्याद नै तो म्है याद करा पण इसा 'महापुरुषा' नै भूल जावा जका अेक क्षेत्र–विशेष मे इतिहास रच'र अमर होय गया है। वा रो इतिहास शिक्षा जगत् री थाती है। आप लोगा अमर कहाणीकार प्रेमचद री 'वडे भाई कहाणी पढी–सुणी होवैली वा मे वडा भाई साहव शिक्षा जिसे महताऊ विषय मे जल्दवाजी' सू काम कोनी लेवै। अेक–अेक किलास मे तीन'चार वरसा तक रहनै नींव मजवूत' करै। वी नै पास होवण री जल्दी नी है।

आपा रै अठै वडे भाईसाहव रा भी वडेरा वैठया है जका अेक–अेक किलास माय दस–इग्यारह साला तक वैठया रैंवता अर पास होवण री कोई चित्या नी ही। वा री आगै वधण री मशा विल्कुल नी ही अर ना ई घरवाळा नै कोई परेशानी ही। आज तो युनिवर्सिटी रा नियम वीजा वदल गया है अवै दो साल तक फेल होवण रै वाद कॉलेज में प्रवेश ई कोनी मिलै। बी टक इसी यात नी ही। मरजी आवै जितै साल तक भणाई–लिखाई करवो करो कोई आडी आवण आळा कोनी हा। वी टेम अेक फायदो और भी हो – पाठयक्रम समिति रै सदस्या नै जल्दी–जल्दी कोर्स वदलण री चित्या नी ही और ना ई वी वगत ब्रीफकेस सस्कृति' रो प्रचार–प्रसार हो पास वुका रा उदभव अर विकास भी नी होयो हो इण खातर सागी पोथिया केई–केई वरसा तक चालती ही कई दफा तो पीढी दर पीढी चालती ही। म्हनै याद है कै घोष एड डान' री गणित पोथी म्हारै सगळै परिवार पढी। आजकाल तो इसी सुविधा' नी है।

तो भाई साहवा री वात चल रैयी ही। म्हनै याद है कै 1942 ई मे जद म्हैं गरमी री छुट्टियाँ मे अपनी जलमभौम सू अठै आयो तद गली रै वडे भाई साहव म्हनै गोदी में लेय'र अेक स्कूल में दूजी कक्षा में भर्ती करायौ वै खुद नौंवी कक्षा मे पढता हा – यानी म्हासू सात किलास आगै। म्हैं फेर पाछो गयो परौ जव 1947 मे अठै आयो तो वडा भाई साहव दसवी मे हा अर कई वरसा री नाकाम मेहनत रै वाद वी वरस आजादी री खुशी मे वे प्रोमोट' होय गया हा। म्हैं बी टेम 7वीं कक्षा मे आयो हो – यानी वै म्हैं सू चार किलासा आगै हा। फर्स्ट इयर होम एक्जाम हो महाशय नै पास होणी ई हो फेर इटर मे गाडी रुकगी अर 1956 मे राजस्थान वणणै रै वाद खास 'ग्ग्वरा' री वजह सू पास होया। म्हैं फर्स्ट इयर मे हो। वी अे रै तीजै साल होम' परीक्षा

ही पण फाइनल इयर मे वै म्हारा सहपाठी बण गया। म्हैं अेमअे कर ली पण वै बी अे मे ई नींव मजबूत करता रैया अर म्हारा स्टूडेंट भी बण्या।

है इसो गजबी इतिहास निर्माता आप री निजरा में ? इसा वीर तो देस री शिक्षाप्रणाली री आधारशिला है। बाकी होशियार छात्र भी वारा लोहा' मानता हा। वै टाचकियोडा नी हा वै समाज मे अणभवी अर चिंतक छात्र गिणीजता हा। छोर्‌या इसा रिकार्ड बणावण मे असफल रैंवती ही। इसा 'फेल शिरोमणि' रो रौब जबर हो। कॉलेज खुलण रै पहला दिन इसा महारथी प्रिंसिपल बण'र नवै छोरा माथै रौब गाठता हा वारी रैगिंग भी इसा प्रिंसिपल' करावता हा। म्हैं खुद इणा रै धक्कै चढ चुक्यो हो। दस बारह बरसा ताई अेक ई कक्षा मे रैवणिया नवा छोरा कठै सू लागता – वा री बात रो खडण तो प्रोफेसर खुद नी कर सकता हा। इसा इतिहासज्ञ कालेज रा बेताज बादशाह हा।

छात्र समस्यावा रै हल सारू इसा वीर ही प्राचार्य जी कनै पूगता हा। वा रो नेतृत्व सर्वमान्य हो। अेक दफा विज्ञान री किणी प्रयोगशाला मे सामान री जरूरत ही। बडा भाई साहब रै नेतृत्व मे छोरा री टीम प्रिंसिपल कनै गई। भाई साहब कैयो – 'म्हैं ई कॉलेज मे लारलै 16 बरसा सू पढ रैयो हू -- छव साला रो कोर्स म्हैं हाल–ताई कर रैया हू, हरेक प्रिंसिपल साहब सू कैयो है पण काम फेर भी नही होयो।

नवै प्रिंसिपल मुलक'र कैयो – आपरी पढाई रै सतरहवे बरस मे ओ काम होय जासी। ओ म्हारो वादो है।

जिदाबाद रा नारा लगावता छोरा पाछा आया। इसा मोकळा उदाहरण है।

जिका छोरा म्हारै बडै सू बडै भाई साहब रै सागै पढता हा बै म्हारै सागै भी पढया अर क्युइक तो छात्र भी बणया। इसा पढाका' समाज मे महताऊ ठौर राखता हा। वा री परीक्षा देवण री शैली भी न्यारी होवती ही। इण बाबत अलग सू लिख रैयो हूँ।

फेल होवणिया भाई साहब आपरै विषै मे तो पारगत होवता हा पण लेखण शैली कमजोर ही। अेक दफा अेक महारथी सू इतिहास रै प्रोफेसर कैया – थे इतिहास मे पास नी होय सको आ म्हारी शर्त है।

बडा भाई साहब जोर सू कैयो – किसी भोळी बाता कर रैया हो गुरुजी म्हैं आठ दफा इतिहास मे इणी क्लास मे पास होय चुक्यो हू। म्हैं तो अर्थशास्त्र मे फेल होऊ बळू।

प्रोफेसर साहब कनै काई जबाव हो ?

अेक दफा पेपर छोड र बारै आवण आळै सू म्है पूछयो -- भाया पेपर क्यू छोड दियो ?

वो रीसा वळतो बोल्यो – इग्यारह साल सू लॉ रो इम्तहान देय रैयो हूँ। इसो करड़ो पेपर कदैई कोनी आयो। बाळण नै परीक्षा देवतो काई ?

नुवा नियम बणण सू इसै वीरा री फसल उगणी ई बद होयगी है। अवै कैंकी तारीफा करा ? अेक साल भी अवै अेक कक्षा मे नीव मजबूत करण सारू त्यार नी है। अवै विसा धीर–वीर–गभीर पढाकिया कठै रैया है ? भूमडलीकरण रै जुग मे भी कोई भेलौ रैवणो पसद कोनी करे। किलासा री हाजरी भी खीण होय रैयी है। पहली जिसा कर्मठ अर अविचळ छात्र अवै कठै है ? आज भी जद जूणा 'बडा भाई साहब' मिलै तो वा दिना री यादा ताजा होय जावै। पण अवै इसा कीर्ति थरपण आळा कठै है ? दशरथ जी साची कैयो हो –

'वीर विहीन मही मैं जानी।

नारद जयंती

बी दिन अेक बाल गोठियो बोल्यो – भायला दुनिया भर रै महापुरुषा सता साहित्यकारा इत्याद री जयतिया आपा मनावा पण भारतीय परम्परा रै ऋषि–मुनिया री जयतिया भूल जावा।

म्हें कैयो – नी आपा परशुराम महर्षि दधीचि आद री जयतिया मनावा ई हा।

थे नारद जयती मनावो ? बो नाराज होय गयो।

म्है चुप होयग्यो। नारद जयती तो कदैई मनाई कोनी। बाकी ऋषि मुनिया री जयतिया भी आवै अर जावै परी।

कद है ? म्हें पूछयो।

ई सू काई फर्क पडै। ऋषि–मुनियॉ रै जलम दिन रो तो कैलेण्डरा सू ई ठाह पडै। अर फेर नियमा मे बधणो ठीक नी हैं। म्हारै दफ्तर मे अेक जणै अफसर सू कैयो – काल म्हारै टाबर रो बर्थ डे है। आप नै सपरिवार पधारणो है। अफसर कैयो – काल तो म्हें जयपुर जाय रैयो हूँ।

बो वीर घबरायौ कोनी – थे जद भी पाछा आवोला म्हें बी दिन ई बर्थ डे मना लेसा। आप रा पधारणा जरूरी है। ता भाया जलम दिन मनावण री बात तद तय करणी चाहीजै जद सुविधा हुवै तद।

फेर भी म्हा कैलेण्डर देख्यौ। नारद जयती मे हाल दो सप्ताह बाकी हा। म्हैं खुशी–खुशी प्राग्राम बणावण लागग्या। तय करयो कै साहित्यकारा री अेक गोष्ठी रो आयोजन कर्‌यौ जावै।

नारद जयती माथै किणा नै बुलायो जावै ? म्हू पूछयौ।

जका नारद री विचारधारा सू प्रभावित हुवै। भायलै कैयो इणा मे नेता व्यापारी लिखारा इत्याद सगळा आय जावै। इतो बडौ आयोजन किमकर हुसी ?

प्रतिनिधि लोगा नै ई बुला लेवा। म्हैं कैयो।

सगळा ई प्रतिनिधि है बी कैयो आपा हर तबके सू अेक–अेक प्रतिनिधि बुला'र सभा कर लवा। नुवी चीज रैसी।

नारद जयती रो कार्यक्रम तय होय गयो। सभापति सारू केई नाव साम्है आया – नेता निदक जी कविवर परछिद्रान्वेषी समाज सवी हल्ला बाल इत्याद।

सेठ खाऊमल नै प्रबन्ध व्यवस्था रो (खासकर जलपान) रो भार दियो गयो। आखिर मे निदक जी नै सभापति 'परछिद्रान्वेषी' जी नै मुख्य अतिथि अर 'हल्ला बोल' जी नै विशिष्ट अतिथि रै रूप मे फाइनल कर्‌यौ गयो। सचालन रो काम नेता 'धुरधर' जी नै दियो गयो।

भारतीय परम्परा मुजब कार्यक्रम 50 मिनट देर सू शुरू हुयो। सभापति निदक जी हालताई नी आया हा वारो ठाण छोड'र सभा री कार्रवाही सरू हुवी। सभा मे बैनर हो 'निदक नियरे राखिए' पण निदक जी नियर ई नी हा।

अेक नेता टाइप मिनख बोल्यो — इण सभा मे वै सगळा जणा आय गया है जका भारतीय सस्कृति नै मानै ई नी है। आपा नै सेंसर 'राखणो जरूरी है। ऋषिया-मुनिया रै इण देश मे विदेशी अपसस्कृति रो कुप्रभाव बढ रैयो है भाषा भ्रष्ट होय रैयी है अर फैशन वध रैयो है। आपा नै आज टीवी रै अभिशाप माथै वात करणी चाहिजै।

आज रो ओ विषै नी है। किणी लारै सू कैयो।

'तो काई विषै है ? म्है तो कदैई देखू ई कानी कै आज रो विषै काई है अर फेर काई फरक पड़ै ? आपनै तो बोलण सारूई तो बोलणो अर दूजै दिन अखबारो मे खुद रो नाम टटोलणो है और काई ?

सगळा जणा हँसण लागगया।

समाज सेवी अर शायर 'तीसमार खा' साहब फरमायो कै आज री लूठी समस्या बेरोजगारी है। म्हैं समाजू प्राणी हू। लोगा रै दुखदर्द नै चोखी तरिया सू समझूँ। भण्या-लिख्या मिनख आज आठूपहर भटक रैया है वारी समस्या रो समाधान भाषणा सू नी होसी। कैयो है —

इश्क को दिल मे जगह दे अकबर
इल्म से शायरी नहीं होती।

च्यारूमेर 'वसमोर' री आवाजा आवण लागी। धुरधर जी सगळा नै डॉट दियो। केई तो गया परा। केई बठै बैठा-बैठा ई सूता रैया। केई गप्प-शप्प (गमत) मे इत्ता व्यस्त हा कै आसै पासै रा लोग त्रस्त हो गया। निदक जी री उडीक ही।

जवरी रतनलाल कैयो — म्हनै पैली दफा बोलण रो मौकौ मिल्यो है। म्हैं ढगसर बोल नी सकूलो। आप लोग म्हनै माफ कर्‌या। म्हैं भाषण कला मे हमेसा सू कमजोर रैया हू। म्हारी घरआळी नै चोखो अभ्यास है बोलण रो म्हैं भी दो चार मीटिंगा रै बाद ढगसर बोलणो सीख जावूलो।

म्हनै घणी जूझल आय रैयी ही। प्रोग्राम तय करण आळो म्हारो भायलो हालताई निदकजी री तलाश मे हो। निदक जी री उडीक ही।

धुरधर जी नै किणी वारै बुलायो। अबै मच खुलो हो। मनमरजी सू आप'आप री बात कैवण लागा। फेर सगळी बात पुरस्कारा री आपाधापी माथै

रुकगी। पुरस्कार पावणिया तो वहीर होया अर उम्मीदवारा मे वाता री भाटा–जग सरू हुवी। अेक–दूजै नै ठठकारणो शुरू हुयो गरमागरमी वधी अर तीजी ताळ विधानसभा रो दरसाव निजर आवण लागो।

म्हैं बारै जा र धुरधर जी नै झाल लायौ। निदक जी री उडीक ही। धुरधर जी आवतै ई लोगा नै ठीक होवण री अपील करी। बी कैयो – आज हरेक बात माथै घाण–मथाण करण री जरूरत है। आपा री राह सोरी कोनी। आपा ने इण बात री धाटघड (चित्या) भी करणी है कै जात–पात निपटावणौ किण तरिया सू होय सकै ? म्हारा ख्याल है कैं आ समस्या ता रैसी ही आपा नै इणनै छोड'र दूजी समस्यावा री बात करणी चाहिजै।

लोग उठ–उठ र जावण लाग्गया। मचस्थ लोगा री बोलण री वारी ई कोनी आई ही। निदक जी री उडीक ही। सभा समाप्त होयगी।

लोग म्हनै सफल आयोजन सारू बधाइया देय रैया हा। सेठ जी री तरफ सू जलपान शुरू होयग्यो हो। अेकै साथै भीड माय आयगी। जलपान रै सागै–सागै अेक दूजे माथे व्यग्य–बाण भी सरू होयग्या। जिका उपस्थित नी हा वारो शिकार ज्यादा करयो गयौ।

नारद जी रो नाम किणही नी लियो।

दिनूगै री सैर

सैर । अर वा भी दिनूगै री। सुणण सू ई डील नीरोग व्हे जावै है। पत्रिकावा अखबार इण रै गुणा सू भरयोडा है। दिनूगे री सैर – सुणता ई सीतल मद सुगध हवा नथुना मे भरण लागै है अग–अग मुळक उठै है अर लागै हे कै जिया बुढापौ मोकळो परै है अर जे बुढापो आ ई गयौ है तो बेमारी घणी दूर है।

मितर घणै दिना सू कै रैया हा कै दिनूगै घूमण नै आया करो अबै तो रिटायर भी होय गया हो अबै तो आलस री पींडी छोडो। नौकरी मे तो कदैई बगत रो पाबद नी रैयौ क्यूकै सरकारी नौकरी ही पण अबै तो खोळिये री देखभाल करो। नीतर बो माचा झाल लैवेलो। म्हैं डर गयौ अर दूजै दिन सू ई घूमण रो प्रोग्राम बणाय लियौ।

भोर मे ई उठ गयौ क्यूकै आखी रात नीदडी ई कोनी आई। चित्या मे ई बगत गुजर गयौ। ढालडी माथै सूतो थो जिणसू बेगो उठ सकू, पण दिनूगै बेगा उठण री चित्या अर टडेरो (घर–गृहस्थी) रो फिकर – बस सोयो ई कोनी। घरनार इण दुनिया मे कोनी नीतर निकमे घणी नै इत्ती जल्दी उठता देख'र हैराण होय जावती। खैर म्हैं त्यार हुयो बेटे शरद नै जगार माय सू दरवाजो बद करणनै कह्यो। वो भी हैराण होय'र बाप नै देखते रैयो अर म्हू घूमण सारू निसरयो।

सरकार बहादुर पहला सू ई वृद्धजन भ्रमण पथ' बणा'र राख्यो है। म्हैं बठै जावण री सोची। बठै जाय'र देख्यो कै बठै तो सचिन–सौरभ टाइप छोरा क्रिकेट खेल रैया है। बॉल म्हारो पग छूनै गई परी। क्रिकेट आळी जागा घूमणो बेकार है सोच र म्हैं पब्लिक पार्क कानी बहीर हुयो।

सडक माथै दो–तीन मितर और मिल गया। जूनो मितर चेतन हो पण बीरै सागै अेक कुत्तो भी हो। म्हैं कुत्ता सू डरू दो दफा चौदह–चौदह इजेक्शन खाय र बैठयो हूँ। चेतन कैयो – कमाल है आज मरूस्थल माय दूब भी ऊगी ? थू भी घूमण वाळो होय गयौ है आखी जिदगानी तो माचै माथै काडी है – अबै काई हुयो है ? तद बीरो कुत्तो म्हारै कानी आवण लाग्यो – नो लुई नो कम बैक।

तद म्हैं कैयो – चेतन इत्ती अग्रेजी तो थू भी उम्र भर नी सीख सक्यो अबै थारो ओ गडकडो भी अग्रेजी समझण लाग्गयो है। कमाल हे। चेतन गडक नै लेय र बहीर हुयो। म्हारी बात सुण'र दो–तीन ओळखाण वाळा आय'र हाथ मिलायो। म्हैं वासू

कैयो – आपणै देस मे भापायी एकता तो गडका सू ई कायम है क्यूकै वै सिरफ अग्रेजी ई जाणै। वै हस्या अर रामा–सामा कैर वहीर हुआ।

पब्लिक पार्क मे दो मितर दीनदयाल अर लक्ष्मीचद मिल गया अर म्हा तींनू वठै घास माथै पसर गया। घणी रौनक ही। वठै बीजा मितर भी हा। दीनदयाल म्हारै बारे मे कैयौ – ओ दिनूगै नी तडके दस वज्या उठणवाळो है पण आज सू घूमण रो सौक सरू व्हैयो है। सगळा जणा मुलक्या तद नरेद्र आयो। बी कनै 10–15 नीम रा दातुन हा अर वो दातळो हो। वींरै जावते ई लक्ष्मी कैयो – दिनूगै री सैर रो आर्थिक लाभ भी है। ई नरेन्द्र कदैई टूथपेस्ट कोनी खरीदयो। आखो खानदान ई नीम रो फायदो उठा रैयो है। आम रा आम गुठली रा दाम।

भीड–भाड घणी ही। म्हैं कैयो – अठै भी शुद्ध हवा तो कोनी। दीनदयाल कैयो – यार आज पहली दफा आया हो अर मीन मेख काडण मे लागग्या हो। मितरा सू मिलो गपशप करो। चित्या ना करो।

म्हारै कनै ई अेक मिनख सूतो हो। आराम सू खराटो भर रैयो हो। सायत रात सू ई अठै सोयो हो। ठाडी हवा चाल रैयी ही। अेक कानी जूनो मितर वीरू भी बैठयो हो पर कीं उदास हो। म्हैं बीनै बुलायो। वो हौलै सीक आयनै बैठयो म्हैं दूजै मितरा सू परिचय करायो। थोडी जेज बाद वीरू वोल्यो – बात आ है कै म्हू भौत जल्दी आय जावू – म्हनै अठ बगो आवण रो फायदा भी हुवे। फेर हौल सीक कैयो – अठे रात मे आवण–जावण वाळा की न की चीज वस्त का रूपया रेजगारी भूल जावै टाबर रमतिया भूल जावै अर म्हैं दिनूगै चुग लू, पण आज की नी मिल्यो। वो फेर उदास होय गयो।

आज म्हैं जो आया बळयो हू म्है कैया अर सगळा जणा जोर सू हसण लागग्या। बठै दडी रमण आळा छोरा आपस मे मुक्का–मुक्की करण लाग्या। फिल्मी दरसाव देखण नै मिलयो पण मन खाटो होय गयो। ओ काई रासो है। घूमण नै आवा कै लडण भिडण नै।

मैं ऊभो होय र जावण लागो। दीनदयाल लक्ष्मी कैवण लाग्या कै वृद्धजन भ्रमण पथ फेर चाला। अबै वठै सायती होसी। पण म्हारो जी उचाट होय गयो थो। म्हैं केया के नी म्हू घरै जाय रैया हू। अरे दीनदयाल कैयो थारो नुवो मकान तो म्है देख्योई कोनी। चाल भई लक्ष्मी आज चाय बीजी बठै पीसा।

म्हैं लोग जद 'वृद्धजन भ्रमण पथ' सू मुडया तद पाच सात भायला दीनदयाल लक्ष्मीचद अर चेतन रा मिल गया। चेतन भी गडक सागै अजू तोडी घूम रैयो थो। म्हा तीनू जणा जद मुडया तद वै सगळा जणा आय'र दीनदयाल आद से पूछण लागग्या अबै सवारी कठीनै ?

म्हारो तो अेक भी परिचित नी हो क्यूकै रिटायरमेट रै बाद पैली दफा तो म्है
घूमण वळण नै निकल्यौ हो। दीनदयाल कैयो कै आज म्हैं नुवो मकान देखण नै जाय
रैया हा अर फेर म्हारा परिचै भी करायो। म्हैं रीसा बळतो चुपचाप ऊभो रैयो। दो तीन
जणा और आयग्या। कारवा बढतो गयो।

म्हैं जद घरै पूग्यो तद म्हारै सागै इग्यारा जणा हा अर चा बीजी पीवण नै
वेताव हा। म्हैं घणाई बहाना बणाया कै टावर हाल सूता है दूध भी देरी सू आवै
इत्याद पण वै तो अगद रा पग बण गया अर म्हारै घर री चौखट माथै ई पग रोप
दिया।

सगळा जणा म्हारै सू दिठावणो कर्‌यो कै अबै म्है रोजानी घूमण नै आवूलो
पण म्हैं घर आया मेरा परदेसी' गाणै नै याद करतो थको निश्चय करयो कै काल सू
दिनूगै रो घूमणौ बद।

✿ ✿

सनीमाघर रै सामै घर

सहर री गैला करण आळी भीड सू परै आलीशान कोठी मे रहवणियो अफसर वाजै अर सहर री भीड माय रहवणियो किलर्क का मास्टर वाजै। अफसर री कोठी माय कार अर कूकर री आवाजा आवै अर किलर्क का मास्टर रै घर सू महॅगाई रोशन आद री आवाजा आवै। अफसर सहर सू दूर रैवै क्यूकै अेक तो वीनै हाट--बाजार सारू खुद नै नीं जावणो पडै वीजा मिनख ओ काम कर दैवै दूजै ब्यौपार री बाता भी अळगै जाय र होय सकै – ई सारू वै लोग रूख इत्याद घणा ऊचा राखै जिण सू वीजा लोग वारी बाता नी सुण सकै। बापडो किलर्क का मास्टर नै तो सहर रै अध बिचाळै रैवणो पडै।

म्हारो घर भी सहर मे है – सनीमा रै सामै। हिन्दी रो मास्टर हू, ई खातर कोई ट्यूशन बीजी भी कोनी। बीं दिना मे घरआळी भी जींवती ही। थे जाणो ई हो कै सनीमा रै पाकती घरा मे की आफत व्है। एक दिन म्है सध्या मे होटल मे खाणो खावण नै जाय रैयो हो बी दिन इतवार हो। वी टैम गुप्ताजी आपणी श्रीमती अर पॉच टाबरा नै लेय'र पधारया। म्हानै पाछो बैसणो पडयो। वै लोग चा--नासता कर नै गया ई हा कै वर्माजी तीन टीगरा नै लेय'र आया। खातरदारी तो मेहमाना री करणी हीज पडै। टाबरा री तीग सू म्हारै अठै राख्योडा रमतिया नी वच सक्या अर बै लेय गया। म्हारी तीठ नै समझण आळो कोई नीं हो अर फेर घरै ई खाणो बणावणो पडयो। तद ताई गादोदिया जी पधार गया – भाया माफी चावू, आपनै तकलीफ दे रैयो हू, अबार सनीमा देखण नै जावतो हो कै तीन--चार मितर ओर मिलग्या। सौ--डेढ सौ री जरूत है म्हनै लाय'र दो। आपरो घर सनीमा रै सामै है – ओ ठीक है नीतर म्है कठै जावता ? सौ रिपिया ले र ई वै गया।

म्हू खुद री कमजोरी पिछाणू। म्हू आज री दुनिया रो मिनख कोनी क्यूकै न तो म्हानै चालाकी आवै अर न ई छळ--कपट। आज री दुनिया मे जीवण सारू धसळक अर धाड री जरूत व्है सीधो सादो मिनख तो च्यारूमेर मारयो जावै। दडाछट जीतब आळो मिनख ई तागडधिन कर सकै ताछो आळो मिनख करमठोक ई रैवै। गोटावाल करण आळो सुख पावै अर कर्तव्य मे बगत गारत करण आळो मिनख खिड जावै। शराफत रो केवी हर कोई है।

मिनख अणभवा सू सीखै पण म्हू अेक भी अणभव सू कोनी सीख्यो। बरोबर

मूरख बणतो रैयो हू। अणभवा रै सागै–सागै म्हारी मति भी कुण्ठित होय रैयी है। म्हारी पाडोसण श्रीमती शर्मा मे एक खासियत है जे कोई बीं सू कोई चीज–वस्त ले जावै अर पाछा करती बगत कैवै कै आपनै घणी तकलीफ दी' तद श्रीमती शर्मा कैवै – जद थे म्हारी तकलीफ नै जाणो तद चीज–वस्त लेय'र ई क्यू जावो ? इण भात वा'रै खनै अबै कोई नीं जावै – वा सुखी है। पण म्हारी कमजोरी सू मिनख ज्यादा परेसाण करै – किण भात म्हैं मना करू तो बानै चटको लागै।

पैली जनवरी ही। म्हैं सोच रैया हो कै नुवो बरस अर सागै ई म्हारो जलम दिन किमकर मनायो जावै – सलीमा देख'र मितरा नै बोर करनै होटल जायनै इत्याद पण सोचण रो मोकौ ई को मिळयो नी। पैली एक जोड़ो आयो अर मैटिनी सलीमा ताई बैठयो रैयो फेर दो जोड़ा आया अर दो टाबरा नै छोड'र सलीमा गया परा कै गली मे रमता रैसी'। अबै म्हैं किमकर बारै जावता ? वै दूजै शो' ताई बठै रैया पण अबै बारै जावण री आपा नै जरूरत ई नीं ही। वै लोग घा बीजी पी'र गया अर सागै कह भी गया – आप लोगा रा ठाठ है सलीमा घर सामै ई है रात ताई गाणा सवादा नै सुण'र मनोरजन करता रैवो। आपा नै डर है कै कठैई मनोरजन कर नी देवणो पड़ै।

एक दफा म्हारै एक मितर री साइकिल म्हारै अठै ई रहगी अर बो किण रै सागै सलीमा गयो परो फेर तो बीं रा घणकरा मितरा री साइकिल म्हारै अठै ई रैवण लागी। सलीमाघर मे टका लागै। इतवार रै दिन तो म्हारै अठै इती साइकला इत्याद निजर आवै कै पाड़ोसी समझै कै म्हैं साइकला राखण रो ठेको लेय'र राख्यो है।

मतलब ओ है कै अबै हर बगत म्हारै अठै फिलम अभिनेता–अभिनेत्री इत्याद री चर्चा रैवण लागी है बाकी सै काम ठप होयग्या है। सलीमा मे भी अबै चार–चार शो व्है ई खातर म्हारै अठै भी शो' बाजी निजर आवण लागी है। मिनख म्हनै चौरासिया–ठाकर समझण लागया है कै नेताजी ओ तो म्हू कोनी जाणू, पण घर रो चौलड़ो हार जरूर अबै अडाणै पड़यो है। म्हैं मकान छोड रैयो हू।

✿ ✿

अेक तो वावाजी फूठरा घणा ....

वींनै सगळा जणा फूठरजी कैवै अर वो भी राजी हुवै। वींनै ओ नाव पसद है। इया वीरो मूडो तवै सू कटजोड करै आख्या लुकिंग लदन टॉकिग टोकियो जिसी है केस अकाल री घास सरीखी माय घाव हुसी तो वीसू लोई री जागा कोलतार ई वारै आसी कोई वीरी हॉसी नै वादला माय चमकण आली वीजळी री ओपा देवै पण फूठरजी ने ईं वाता सू कोई मतलब नी है। वींरै चीकणै सरीर माथै आ वाता पाणी री वूद ज्यो तिसल जावै। जणैईज लोग कैवै के ईरी खाल गेडै जिसी है भलै ई कित्ती सुइयो चुभो द्यौ की असर कोनी हुवै।

फूठरजी गाव रै मिडिल पाठशाला मे मास्टर है जठै बीस छोरा–छोर्‌या पढै। फूठरजी कुवारो है हालताई। दिनूगै सू ई नुवा नकोर गाभा पैर काजल–सुरमा घाल'र दो चार केसा नै ढगसर सवार पाठशाला पूचै है। थैला मॉय काघसी–सीसो जरूर राखै है जींरी जरूत किलास मे बार बार पडै अर छोरा–छोरया नै कैवै भी – म्हैं घणी ऊमर रो कोनी केसा रै कारणै म्हू की खासी ऊमर रो लागू, नीतर आप लोगा री ऊमर रो ई हू। छोरया फूठरजी नै देखर मुळकै। वो ई मुलक रो न्यारो मुतलब लेतो अर कैंवतो – पैली म्हू फिलमा मे जाय रैयो थो पण म्हनै तो आप लोगा सू हेत है ईं खातर म्हू फिलमा मे नी गयो नी तो म्हू हीरो होतो। जे किणी छोरी री हासी फूट जावती तो फूठरजी कैतो – आप लोगा नै म्हारी वाता माथै विश्वास कोनी – ठीक है अबकै जद फिलमा आळा याद करसी तो फेर म्हू जासू परो फेर ना हाका कर्‌या म्हारै जिसा चोखा पढावण आळा आप लोगा नै दुनिया भर मे नी मिलसी म्हनै तो घणी चोखी नोकरी मिलती पण म्हैं तो आप लोगा खातर अठै रुक गयो हू, पण थे तो

फूठरजी नै नाटक रौ घणौ शौक है। वो नाटकीयो ई है। वाल–पणै सू ई रामलीला मे भाग लेतो आयो है। सरूपोत मे बीं नै पर्दो खेचण रो काम दियो गयो थो अर वाद मे बीरी तरकी हुवी अर वो राक्षसा रै बीच ओपण लाग्यो। अबै तो वो रावण रो पारट करै है अर मिनखा भी बीनै ईं नाव सू जाणै है पण वो खुस है कै मिनख वीनै जाणै तो है अर गाव मे बींरी निजु ओळखाण है। नीतर आज रै जमाने मे मिनख कठै ओळखाण करै।

फूठरजी आज रै बगत नै चोखी तरिया ओळखै। ईं सारू आज रै बगत मुजब कलाबाज्या दिखावै। शिक्षा भी बीरै सारू अेक बिजनेस है। परीक्षा रै दिना

मे पीसा लेय'र विद्यारथ्या नै पेपर आऊट कराणो पास कराणो खोटो–खरो काम कराणो चोखो डिवीजन दिराणो इत्याद बीरा खास धधा है। जे घर पर कोई छोरा–छडा की पूछण नै आ जावतो तो छोरै री हैसियत मुजब बीसू की न की झटक लेवतो का कोई काम करा लैंवतो। तीन चार छोर्या आ जावती तो झाडू पोचा बर्तन रा काम करा नाखतो। ईया बो दो टेम रा टुकड खुद ही बणा लेतो। आ न्यारी बात है कै घणकर बीरो जीमण छोरा रै घरै ई होवतो। जद छोरया रै मावा नै ठा पडती कै बै फूठरजी रै अठै गई है तो रिसाणी बळती कैवती रावण मुवै रै अठै बळण री काई दरकार ही फेर कदै गई परी तो टाग्या भाग नाखूली। बी रो तो मूडै काळो कर'र अठै सू काडणो है' तद छोर्या कैवती – मूडा काला करण री काई दरकार है अर खिल खिल करती बारै जावती परी।

केस गिणती रा है फेर भी फूठरजी बारै रख–रखाव माथै खास ध्यान देवै। कतरनी अर दो दो सीसा – आगै लारै राख'र वानै घटू सवारै अर ई चक्कर माय किलासा भी छूट जावै का बीनै पूरी स्पीड माथै भागणो पडै। जल्दबाजी मे बो हवाई चम्पल पहर ई शाला पूच जावै। बो चप्पल भी इत्ती घिसयोडी कै फूठरजी रै पगा मे आवतै ई रोवण लागै। अेक रोज बा भी टूटगी तो चप्पल नै थैला माय घाल'र घरै नागै पाव ई आयो। क्युइक छोरा देख्यो तो कैयो कै आज म्हूँ विनोबाभावै दॉई पदयात्रा कर रैयो हू। छोरा तो हकीकत जाणै ही था। दूजै दिन फूठरजी पगरख्या री फिजूल खर्ची माथै लम्बो चौडो भाषण दियो – सहर मे हजार दो हजार रिपिया रा जूता आवण लागग्या है जदकै आपणै देस माय हजारू परिवार इत्ता पीसा सू महीने भर को खर्चो चलावै। आज सू म्है भी सादा जीवण जीणै री कोसिस करूँलो म्हारा उच्च विचार तो थे जाणो ई हो। अबै आज सू वाक्य पूरा हुवण सू पैला ई किणी बारै सू छेडयो कै – मैं छोरा कै घरै ई जीमूला। छोरा हासण लागग्या फूठरजी तेजी सू बारै गयो पण बठै कुण हो ? पाछा आय'र कैयो – म्हारा साथी म्है सू बळै है क्यूकै म्है जिसा स्मार्ट फूठरा फरा लायक बीजा कोनी

फूठरजी नै होली रमण रो सौक तो है पण सिर माथै रग नी घलवावै। के जो खराब हुय जावै है – हा छोरया नै जरूर आ छूट देय राखी है। लारलै बरस व विदेशी पर्यटक इण गाव मे आया – बै अठैरी लोक सस्कृति लोक गाथावा अर लोव गीता माथै की चर्चा करणी चावता पण जिया कै दस्तूर है सहर रै अफसरा ई गाव री सफाई मिनखपणो खुशहाली री चर्चा तो कीनी पण लोक सस्कृति री चर्चा चालू हुवण सू बै मीटिंग इत्यादि मे व्यस्त होय गया। फेर बी पर्यटका नै गाव आळा सू सीधी बात–वतलावण करनी पडी। फूठरजी नै देख'र बै हैरान होयग्या कै ई गाव मे भी अफ्रीका रा मिनख रैवै। हकीकत सू बै बाद मे परिचित हुया।

फूठरजी नै हमेसा आ चित्या लागी रैवै कै गाव आळा बी रै फूठरपणै हवरियोपणै इत्यादि री चर्चा कोनी करै जदकै ई जिसो खिमावत खिलदार अर

ख्यात मिनख दूजो कोनी। ईं वात माथे वी नै खोफ आवै अर वीं नै खेडो खेदी निजर आवण लागै। मिनखा की नीरसता सू वो खसाखूद रैवै तद वी नै वा मे खोट ई खोट निजर आवण लागै जिका वी की शान मे दो सब्द भी कोनी कै वै। पनघट माथै लुगाया नै देख र बी नै केशवदास दाँई आपरा केस याद आवै फेर भी वावा री जागा मास्साव सुण र की सतोस मिलै। पण मृगलोचन्या सू शिकायत वरोवर है।

आ वात सही है कै फूठरजी खेडै रा सै सू पढया लिख्या मिनख है – अेम अे पी–एच डी है। किलास मे कैवै कै म्हनै यूनिवर्सिटी मे नौकरी मिली ही (छोरा मुळकै) पण म्हैं बठै गयो ई कोनी। सोने रो मैडल लेय'र भी म्हू गावा मे रैणो पसद करूँ। वो आपरी तारीफ मे पूरो पीरियड ही काड देवै ओ बी रो रोज रो नेम है। खुद रै बारे मे जद कैवण लागै तो कागसियो भी खूजै सू काड लेवै अर गिणती रा केस काडण लागै।

वीं दिन फूठरजी सागै चोट होयगी। खुद रै फुठरावै री मोकळी तारीख करनै तद बी वोर्ड माथै उज्जवल (उज्जवल) श्रीमती (श्रीमती) कृप्या' (कृपया) जिसा सबद लिख्या तो छोरा टक्का गण लिया। तद फूठरजी कैयो – म्हू आपरी जाच कर रयो थो' फेर रुक र कैयो – ईया आ सवद भी सुद्ध है। छोरा जद पोथी बतावी तद फूठरजी कैयो – पोथया मे खोटा लिखीजै। फेर फूठरजी प्रकासका री टिकडम बाजी माथै खासो लेक्चर दे दियो।

ईं घटना रै पाछै छोरा बासू व्याकरण भणणो ई छोड दियौ पर फूठरजी आपरी आदता सू–आपरी तारीफा करण सू बाज नही आवै ईं गाव रा तो रामजी ई रखवाळा है।

८।

उडीक उम्मीदवारां री

चुनाव सू जुडयोडो यो कार्टून तो साव झूठौ है कै चुनाव रो उम्मीदवार किणी मिनख (खासकर किसान) रै आगै हाथ जोडनै ऊभौ है अर वोट माँग रैयो है। आजकल रा नेता इतो टेम खराब नी करै कै अेक–अेक वोटर कनै जावै अर वोट चावै। आ वात तो पैली भी सभव नी ही आज तो बिल्कुल ई झूठी है। नेतागण 'गिरोहा' रै नेतावा सू जरूर वात करता व्हैला पण खुद अेक–अेक सू वात कोनी करै। नेतागण भीड री कीमत समझै मिनख री नी।

अवै फेर चुनाव आय रैया है। केई बेरोजगारा नै रोजगार मिलसी खाली ठौरा नै (चुनाव कार्यालय सारू) चोखा किराया मिलसी पेटरा नै काम अर नाम मिलती गुमनाम उम्मीदवारा नै नाम मिलसी अखबारा नै विज्ञापन मिलसी दूरदर्शना रा काम वधसी अर आखो देश व्यस्त अर आखी जनता त्रस्त होय जासी। चुनावा रा महातम तो म्है गिण ई नी सका।

म्हैं 1952 सू लेय'र आजताईं सगळै चुनावा रो साखी रैयो हूँ। अखबारा मे ई उम्मीदवारा री फोटूवा देखी है कै वै हाथ जोड'र मुलक रैया है। बस वारा दीदार अखबारा म ई होया है रूवरू कदै ई कोनी होया। अखबारा म ई पढया है कै नेता घर–घर जायनै वोट मागैला पण हकीकत मे इणा पच्चास वरसा मे म्है वारो कदेई खुद रै गरीबखान में वोट सारू पदार्पण कोनी देख्यौ। हर चुनाव मे अफवाह उडै कै अबकलै नेता गण हर घर में जायनै अपील करैला। मोहल्ला समिति री तरफ सू वारौ स्वागत भी होवैलो पण आपा नै कदै मोहल्ला समिति बुलायो ई कोनी अर आपा इतना खुद्दार हा कै विना बुलावे रै कठे कोनी जावाँ। अबै थे खुद ई समझ सकौ कै आपा नै उम्मीदवारा री उडीक तो उम्र भर रैवैली।

नेतागण फोटू खातर ई हाथ जोडै का टिकट खातर मुख्यमत्री साम्है हाथ भी जोडै अर पगचम्पी भी करै। साधारण जनता नै तो ऊजळा जुहार करै पण टिक्ट खातर आला कमान सू गुहिर गुहार करै। कार्यकाल री वगत गुललजावा (लुगायां) अर गुलहजावा रै सागै टेम काडण आळा केई नेता चुनाव रै पच्छै गुलाच खावता ई निजर आवै है। चुनाव रै दिना मे नेतागण फोटुवा मे ई कदै तो हसता हुआ नूरानी चेहरा' दिखावै अर कदै अपणाइत री मूर्ति निजर आवै तो कदै दीन–हीन कालोकुट निजर

आवै – इण बहरूपिया नै हर कोई समझ नी सकै। जीतै तो सारा रा पण हारै तो खाव रा।

म्हैं तो बरा इणा री उडीक है कै कद घरे पधारे अर कद म्हैं फोटो खिंचार राखूं अर वारै जीतण रै बाद फ्रेमगेर दिखातो फिरूं पण अठिया हरि दरसण री भूखी। थे समझो कै जद आ स्थिति चुनाव रै पैला री है तो बाद मे नाई हुसी? अब तेरा क्या होगा कालिया (केवलिया) संवाद दांई ओ सवाल तो सवाल ई रैसी जवाब देवण आळा कोई है ई नी।

कॉलेज रो रिटायर्ड प्राध्यापक हूं, इण सारू लोग म्हनै बुद्धिजीवी कह देवै पण आ बात साव साची है कै नेतावां नै चुनाव लडण सारू बुद्धिजीवियां री कदेई दरकार कोनी हुवै। चुनाव जीतण रै सारू भाषण बीजा लिखणियां सो मोकळा ई मिल जावै। चुनाव रै पछै जे कदै इणा नेतावां रै घरे इणा सूं मिलण री कोसिस भी करीजै तो ऐ दर्शन ई कोनी देवै चमचा-कड़छा पैली सूं ई मना कर देवै अर टेलीफोन माथै ऐक ई जवाब मिलै कै वै पूजाघर का बाथरूम मे है। ऐ दोनूं जगावां चुनाव रै बाद नेतावां री साधना-थळी बण जावै।

चुणावां रा दिन बडा जबर है। ऐ हाथ जोड़ण का हाथ तोड़ण रा दिन है टिकट नी मिलणै पर पार्टी सूं मुंह मोड़णै रा दिन है केई जूना मामला नै छोडण रा दिन है जीतण पछै उद्घाटनां री शिलावां माथै नाम कोरण रा दिन है। चुनाव री वेला म्हारै जिसा भी लोग होवैला जिणका धार राखी है कै जिण नेता रा दीदार घर मे होसी बीनै ई वोट मिलसी। म्हैं जाणूं भी हूं कै ना नौ मण तेल हुसी अर ना ई राधा नाचसी।

फेर भी उम्मीद माथै दुनिया जीवै।

आपरी किसी हॉबी है ?

जद आपसू पूछयो जावै कै आपरी हॉबी (शौक) किसी है तद आप पाच–सात हाबिया रा नाम जरूर गिणा देवो चाहै उणा हॉबिया री पूरी जाणकारी आपनै हुवै का नी। आप दबादब गार्डनिग टिकट सग्रै फोटोग्राफी स्केटिग इत्याद रा नाँव गिणा'र रोब नाख देओ।

गार्डनिग (बागबानी) जिसी हॉबी आजकाल घणा मिनख राख रैया है पण फूल–पत्ता–पेड आद री जाणकारी भी जरूरी है। म्हैं बी.एड मे कृषि विषय लियो सागै ई 'बुनियादी शिक्षा' (गाधी जी री बेसिक एज्यूकेशन) रो कोर्स भी करयो। बुनियादी शिक्षा री बात पैला – इण मे टाबरों सू ई विषय री भूमिका त्यार कराई जावै। अेक टीचर टाबरा ने चिडियाघर लेय'र गयो अर छोरा सू पूछयो –

ओ किसो जिनावर है ?

शेर' टाबरा अेकै साथै कैयो।

आज म्हैं शेरशाह रै बारे मे पढाला। इतिहास रो टीचर बोल्यो हा म्हैं कृषि विज्ञान भणावण सारू क्लास मे गयो। फल–फूला बाबत म्हारी जाणकारी बिती ई ही जित्ती जाणकारी घणकरे डाकदरा नै लेटेस्ट' दवाया का रिसर्च रै बारै मे हुवै। छोरा सू पूछयो –

किसी सब्जी स्सै सू ज्यादा खाईजै ?

आलू। म्हनैं भी आलू माथै पढावणो हो।

'शाबाश। म्हैं खुश हुयो। आज म्है आलू रै पेड रै मुजब पढाला। दूजी क्लास रा ग्रामीण छोरा चुप हा।

थू आलू रै पेड रै बारे मे काई जाणै ? म्है अेक छोटे छोरे नै डाटू। लाई रोवण लागग्यो फेर बोल्यो – आलू रो पेड तो हुवै ई कोनी।

म्है चिढ गयो – इसी नालायक क्लास नै म्हू कोनी पढावू। अर म्हैं बारै बघग्यो। थे भी गार्डनिग री हॉबी सोच समझ'र बताया। इया आपनै आ जाणकारी दे द्यू कै म्हनै कृषि विषय मे प्रथम श्रेणी रा अक मिल्या। आज रा छोरा ढगसर पढणो ई कोनी चाहै।

टिकट सग्रै री हॉबी भी जबर है इण खातर बडा–बडा मिनख भी परेसाण निजर आवै। फर्स्ट डे कवर सारू बै ताबडतोड कोसिस करै फेर भी नाकाम रहवै।

टिकटा सू आपरो सामान्य ज्ञान तो वधै ई ही सागै ई कई दफा इणा सू चोखी कमाई भी होय जावै। टिकटा सू भागालिक ज्ञान री भी वढोतरी हुवै। भूगोल री टीचर टिकटा भेली करणियै सू भूगोल बावत पूछयो – जर्मनी कठै है ? वी जवाब दियो – म्हारी टिकट एलवम रै दूजै पेज माथै।

पत्रमित्रता री हॉबी तो घणी चोखी है। कदै–कदै शादी रो भी जुगाड होय जावै। नीतर थे खता रै माध्यम सू दूजै पर रोव गालिब कर सको हो वानै दुनिया भर रा सब्जबाग दिखा सको हो थे वठै री इन्क्वेरी करण सू तो रैया। युगा पैला म्हैं भी आ हॉवी सरू करी ही। घणी बेताबी सू मितरा रै खता री उडीक रैंवती। जिण रोज खत आतो सागी टेम फिल्मी गीता सू भरपूर खत रो जवाब भी लिख देतौ दुनिया ई बदलगी ही। आज तो चिटठी–पतरी रो जमानौ ई नी रैयौ। वी टेम म्हारै जिसो कळावान कागज रूपी इमरत पान करण सारू इतकोसो भी इन्तजार नी कर सकतौ हो। डाकिये री आवाज सुणण सारू काना रा परदा खुला राखतो आज तो काना रा शटर बद ई रैवै पण बी बगत ओ गाणो काना मे बाजतो रहतौ – जरा सी आहट होती है तो दिल सोचता है कही ये वो तो नहीं। अेक नुवी दुनिया री रोसणी आख्या आग्गै चिळकती रैंवती। जे पत्र–मित्र काई मित्रो मरजाणी होवती तो फेर खूटारोप सबध बणावण री कोसिस करतो हालाकि इण मामले मे सफलता कदैई हाथ नी आई। अेक खत री बानगी पेस है – थारो कागज अबार–अबार नौकर रामू देय गयो है। म्हू कलर टी वी देख रैयी हूँ। रामू फल–फ्रूट लेवण सब्जीमडी गयो है दूजा नौकर शामू पापा रै सागै गयो है कार भी पापा कनै है। इण सारू तुरत जवाब कोनी लिख सकू स्कूटर दीदी लेय र गई ह – फ्रिज अर ए सी ठीक करावण मे मम्मी लाग्योडी है। मोबाइल भी खराब है। अर आपरै अठै तो फोन ई कोनी। अबै थे बताओ कै इसी मितरता' कद ताई चालती ? फेर भी म्है वठै गयो अर वी ढाणी टाइप घर नै देख'र सहगल रो गाणो गायो – आस निरास भई। बुद्धू पाछो आयग्यो।

कुछ लोग तैराकी नै आपरी हॉवी वतलावै पण कई तो भाठा दाई ई तैर सकै।

स्केटिग रो शौक राखणिया भी मोकळा है पण इसो शौक तो पहाडा माथै ई पूरा होय सकै। कुण देखै कै थे स्केटिग कर सको कै नी। बोलण मे किसो टको लागै।

फोटोगाफी री हॉबी बतलावणिया भी घणा लोग है। आ हॉवी मूगी है पण लोकप्रिय भी हे। हाईसकूल मे म्हैं विद द फोटोग्राफर' लेख पढ'र फोटोग्राफी री सोची ही नी। अेक बार म्है पाच दोस्त फोटू खिचावण नै स्टूडियो गया – स्टूडियो पहलडी मजिल पर हो। फोकस मिलातो बगत फोटोग्राफर वारी सू वारै जावण आळो ई हो कै म्है बीनै कपड लियो नीतर तिसल जावतो। सादी रै बाद घरआळी री फोटो खीचण

री नाकाम कोसिस करी पार्क मे तीन–चार फोटू लिया पण अेक भी को'नी आयो। म्हैं नम्बर बदलणो ई भूल गयो – अेक माथै दूजी फोटो चढगी। रील रा नम्बर नी बदलण सू अेक नेगेटिव मे तीन चार चित्र मार्डन आर्ट दाई लाग रैया था। आपारी फोटोग्राफी री कथित हाबी बठै ई दम तोडगी।

पढण–लिखण री हॉबी सरू सू ई है अर आज डाकदर री किरपा' सू आख्या खराब करनै बैठयो हूँ, फेर भी थोडी–घणी आ हाबी चाल रैयी है जणैईज ओ व्यग्य (?) लिख रैया हूँ। कई लोगा नै किताबा भेली करण री हॉबी भी हुवै। दूजै लोगा रै घरा सू लायोडी पोथिया उणा रै अठै सोभा पावै बै जाणै ई है कै अठै सज्योडी तो है यै तो रद्दी मे बेच नाखता। इणा उणा माथै उपकार ई कर्यो है। आज पोथिया नै चोखी पूजी कुण समझै है ? अध्यापका रै घर इण बेफालतू चीजा री जागा ई कोनी।

जीमण री हॉबी तो बीकानेर मथुरा जिसे शहरा मे जबर है। इसा–इसा जॉबाज अठै है कै बडा–बडा जीमणियार भी चित होय जावै। जीमण तजै न मारजा' री उक्ति तो अबै जूनी होयगी है। इया तो देस भर मे लोगा नै चरण आळा' मोकला जणा पैदा हायग्या है पण म्हैं तो सिर्फ भोजन आरोगण री बात कर रैयो हूँ। अेक खीण मिनख दो सौ रसगुल्ला जीमण री शर्त सू पहली 15–20 मिनट रो टेम माग्यो अर फेर बो 200 रसगुल्ला खाय नाख्यो। मितरा पूछया कै किसी दवा लेय र जीमयो है ? वो कैयो – दवा किसी ? म्हैं तो 200 रसगुल्ला खाय'र देख्यौ कै खा सकू का नीं। इण सारू टेम माग्यो हो। खावण री खिमता ही जणैहीज फेर खा बाळयौ। इसा धीर–वीर–गभीर मिनख कठै पडया है ?

आजकाल म्हनै अेक और शौक लाग्यो है – आत्मप्रशसा रो। इया तो म्हैं ईको अभ्यास (रिहर्सल) कॉलेज री अध्यापकी री टेम ही कर नाख्यो हो पण सार्वजनिक रूप सू अबै मैदान मे आयो हूँ। दमदार तरीके सू म्हैं खुद री तारीफ करू – सगळा जणा खूब प्रभावित हुवै – अेक शिष्य इण बात री हामी भी भरी कै आपरी बाता सू म्हैं घणो इम्प्रेपित' होयो हूँ। घणै दिनाताई म्हैं उडीकतो रैयो कै कोई म्हारी विद्वता रो जमाल पेश करसी पण नागोतूत मिनखा म्हारी परवाह ई कोनी करी। जणै पछै म्है तसफियो (फैसलो) कर्यो कै ओ नेक काम म्हैं खुद करूलो। अबै म्हू तरह्दार मिनखा दाई विसय माथै कम बोलू, खुद री तारीफ बेसी करू। श्रोता तरमराट भी करै तो भी म्हू परवाह कोनी करू। आज विज्ञापन रो जुग है फेर म्हैं खुद रो विज्ञापन क्यू कोनी करूँ ? हींग लगै न फिटकरी ... अहो रूप अहो ध्वनि' कहवण री बजाय खुद री प्रशसा करण मे ई सार है। खुद री तारीफ सत है सत बोल्या गत है। देस आत्मनिर्भर नी हो पाय रैयो है कम सू कम आत्मप्रशसा मे तो हाय सकै है म्हैं पथ–प्रदर्शक मौजूद हूँ। अबार तो 70 प्रतिशत सभै ई आत्मप्रशसा सारू राखू, फेर हौळै–हौळै शत–प्रतिशत आत्मप्रशसा माथै उतरूलो।

आत्मप्रशसा करण सू समाज अर देस रो भी कल्याण है। देस फालतू री समस्यावा सू जूझतो रैवै। आत्मप्रशसा सू देस रो ध्यान भी बीजी चीजा माथै नी जावैलो। बेकार मे आपा लोग मूगाई बेरोजगारी पेयजल समस्या आतकवाद इत्याद माथै बहस करता रैवा आत्मश्लाघा माथै ध्यान केंद्रित करण सू आपा री एनर्जी बेकार कोनी होवैली वक्तावा नै विसै री त्यारी बिल्कुल ई कोनी करनी पडैली (इयाई किसी त्यारी करै)। इण हॉबी मे लाभ ई लाभ है। म्हैं तो इण मामले मे अवै टच होय ग्यो हूँ। आप सिरदार म्है सू सम्पर्क कर सकौ। आपरो सुआगत है। फेर मती कहिजो कै म्हारी कोई हॉबी ईज कोनी।

स्टेशन रोड, डूंगरगढ़

ओलम्पिक टीम में म्हैं क्यू कोनी ?

सौ करोड सू वेसी री आबादी आळै ई देस मे ओलम्पिक टीम री त्यारिया तो लारलै ओलम्पिक रै पछै ई सरू होय जावै है पण टीम रो चयन घणी देर सू अर कदै कदै ऐन मौकै माथै हुवै है। केन्द्र सरकार बदलै तो बीं सरकार दॉई पूरी टीम ई बदल जावै है। टीम रै सेलेक्शन मे आठूगाँठ उठा–पटक चालती रैवै। इण बाबत म्हारो मुक्तक हाजिर है –

डोळ आपा म कठै सोने रो मैडल ल्या सका
छोटे देसा में कदै खुद री पिछाण बणा सका।
पण ओलम्पिक मे तो सगळा खेल है टटपूजिया
म्है तो भ्रष्टाचार मे हीरे रो मैडल ल्या सका।

इतिहास साक्षी है कै ओलम्पिक रै जलम सू लेय'र अजुतोडी आपा तीन (व्यक्तिगत) कास्य पदक तो लेय डूक्या हा। आ किसी कमती उपलब्धि है ?

पदक–विजेता देसा मे स्लोवाकिया लिथुआनिया कोस्टारिका इत्याद देस भारत सू भारी है अर एस्टोनिया जिसा देस बरोबर है। दूजा देस तो स्वर्ण पदका नै लूट रैया है पण खेलकूद मे ई आपा रै देस मे लूट तो है पण दूजै फील्डा मे। अवै आपा नै इण विसय माथै ठीमराई सू विचार करणो चाहिजै। इया तो आपा घणा उद्यमादी हा पण ओलम्पिक खेला रै परिणामा में उथलणो नी कर सका। कठै आपा रो सिर उदग्ग क्यू कोनी होय सकै ? इण रो भी कारण है – म्हारा जिसा अमीत मिनखा नै मोकौ नी देवणो। म्है लोग अभूत काम कर सका हा। बाकी खिलदार तो खेल'र आखरी ठौर माथै आवै म्हारै जिसा तो खिण में ही आखरी ठौर माथै आय जासी म्है लोग वगत री कीमत समझा। फालतू ई देस नै वै आसा बधावै कै अबकलै 'गोल्ड मैडल' ल्यासा। म्हैं तो सरू सू ई हकीकत बताय र जावाला। म्हैं जाणा कै म्है वठै गजबोह कोनी कर सका फेर भी दूजै खेलाड़िया दॉई जूझार बणण रो अभिनय नीं कराला। म्है गोटावाल काम नी कराला। रिकार्ड बणा लेसा। पर आम रो आम गुठलिया रो दाम।

की नाव री होयो खेला म (अतिम खिलाडी रै रूप मे) नाव तो होय जासी।

अवै भारत नै मैडल पावण सारू की और कठजोडा री शरूआत ओलम्पिका मे करवाणी चाहिजै। इणा मे भाग लेवण सारू भीतर खेल कैंपा री जरूरत है

ई प्रशिक्षण शिविरा री – आर्थिक दीठ सू भी इसा खेल भारत रै पख मे वातावरण वणावैला। इणा खेला माय देस गोल्ड मैडल ल्यावण मे लारै नी रैवेलो।

भ्रष्टाचार रै बारै मे की कहवणो सोने री लका नै बीटी दिखावणी है। इण फील्ड मे आपा री साख छलोछल है।

जीमण री प्रतियोगिता मे अेकलो बीकानेर ई सिरमोर है टीम मे मथुरा रा लोग भी सामिल करया जाय सके है। इण प्रतियोगिता मे स्वर्ण रजत कास्य सगळा मैडल आपा नै ई मिलसी।

सहणसीलता मे आपा कमती नी हा। सहणसीलता कायरता भी बाजै फेर भी म्हे दुनिया री परवाह कोनी करा। म्हैं तो एक गाल माथै लपड खाय र बीजा गाल भी सामे कर देवा। लपड बाबत फिल्मी गीत भी है – जो दे उसका भी भला जो ना दे उसका भी भला। सरकारी नौकरी तो बेजा ई सहनशील हुवे। नौकरी रै बगत दुनिया भर रा धमीडा सहवै ई हे पण रिटायरमेट रै बाद मरणे ताई पेशनर डायरी लेय र सहकारी दुकाना रै आग्गे भी आखा दिन ऊभा रैवै। दुकानदारा री डाट–फटकार वानै आक्सीजन देवै।

इणा खेला मे देस रै आजू–बाजू कोई देस नी टिक सके है। म्है कदैई सख्त कोनी बण सका – पर हित सरिस धरम नही भाई। म्है तो स्वर्णपदक लेवणो ई कोनी चावा दूजा देस बापडा काई करसी कठै तो वानै भी मोका मिलणो चाहिजै।

ओलम्पिक सारू आखरी सुझाव है कै बठै जनसख्या प्रतियोगिता भी राखी जाय सके हे। रजत पदक तो पक्को है ई चावा तो गोल्ड भी हथिया सका – ओ तो आपा रो राष्ट्रीय खेल है।

जे अै खेल शामिल होय गया तद आपा ने ओलम्पिक खेला री पदक–सूची मे खुद रो नाव देखण सारू खुर्दबीन री जरूरत नी पडेली।

दो व्यंग्यकार

अेक व्यग्य कवि री ख्याति देस--विदस मे ही। पैली वो किरणझाळ जिसी तेज कवितावा लिख्यौ करतो पण वो लोगा री प्रवृत्ति नै पिछाण गयो। याद मे हास्य--व्यग्य री कवितावा लिखण लाग्गयौ तद वो घणो लोकप्रिय भी होयो। किरणाळो वणणो आपा रै रगत मे ई कोनी आपा तो "मता री कराड मे ई चोखा। कवि भी कळकळणो छोड'र कळकठ बणग्यो।

विदेसा सू घणा कमा'र आयो। बठै जाती बगत वो खीण हो पण अबै खीच खबोड हो। झकाझक निजर आय रैयो थो। मुबई मे अेक व्यापारी मितर रै अठै रुकयो। विदेसा सू पीसा चीजबस्त इत्याद लायो हो। अेक दिन मुवई आराम करने गाव पूगण रो इरादो हो। मितर रै घर आळा री गिद्द दीठ कवि री इम्पोर्टेड चीजा माथै ही। व्यग्यकार री खूब खातरदारी करीजी। बीनै कई दिना ताई रोक्यो गयौ। छनाछन सू हर काई प्रभावित हुवै। कविगण भावुक अर लापरवाह भी बाजै।

घरै आय'र ठाह पडी कै व्यग्यकार रा काफी पीसा अर कई चीजा गायब है। बीनै घणो दु ख होयो कै मितर (का बीरै घर आळा) घणो धोखौ दीधो। कई दिना ताई वो परेसाण रैयो वै सामान माग लेता तो बीनै अफसोस तो नी हुवतो। मितर सू आ उम्मीद कतई नी ही। अबै वै राजी हाय रैयो होवैला।

व्यग्यकार अेक खत लिख्यौ --

प्रिय बधुवर

आज प्रेमचद जयती है। प्रेमचद उमर भर दोस्ता प्रकाशका अर दूजै मिनखा सू धोखो खायो अर आखिरी टेम ताई गरीबी री रेखा सू हेठै ई रैयो। लिखारा सु तो दुनिया जलमजात बैर काढै। कवि--लेखक रो मान--सम्मान दुनिया नै चोखो ई कोनी लागै। घणी स्वार्थी दुनिया है आ।

थे म्हारो जिण ढगसर सत्कार करयौ म्हू जि दगी भर कोनी भूल सकू। इसो चोखो सत्कार तो म्हारो हालताई कोनी होयो। आखो परिवार ई म्हारी देखभाल मे लाग्यो रैयो। म्हारी अेक--अेक चीज रो ख्याल राख्यो। इसी अपणायत आजकाल देखण मे कठै मिलै ? इया लागै कै लारलै जलम माय म्हारो आप ऊपर की कर्ज हो जिको आप आतिथ्य--सत्कार सू चुकायो। इत्ती बढिया खातरदारी कठै पडी है। बी बगत तो आपानै घूमण--फिरण री फुरसत ई नी ही आपरै परिवार सू घुळ--मिळ नी

सक्यो अर न ई वारी शौका सू परिचित होय सक्यौ इण वात रो म्हनै वेहद अफसोस है पण अवै काई कर्‌यो जाय सकै है ? अब पछताये होत क्या चिडिया चुग गई खेत। पण आ वात तो है कै आप लोगा म्हारो पूरो ध्यान राख्यो–उठण–बैसण सू लेय'र बहीर हुवण ताई म्हारी सगळी गतिविधिया री सार सभाल करी। इत्तो ध्यान कुण राखे ?

आप लोग इत्तो स्नेव दीनो कै अवै म्हनै कठै जावण री इच्छाई कोनी होवै। ईया समझो कै म्हैं कठै जावण जोगो ई कोनी रैयो। आप सगळा वार–वार याद आय रैया हो।

आपरी ओळू मे
दुखीराम

(पडूतर)

मानीता भाई

आपरो भाव भर्‌यो कागज पायनै म्हैं गळगळो होय गयो। म्हारै कनै आप जिसी भाषा तो कोनी पण हिवडे रा भाव तो म्हैं भी लिख सकू। थे फालतू ई म्हारी इत्ती तारीफ कर दीधी है म्है तो इणरै योग्य कोनी। आ तो आपरी लायकी है। म्हनै तो अपूठो पछतावो है कै आपरी खातरी म्हैं ढगसर नी कर सक्यो। आपरो पूरो फायदो म्है लोग उठा ई नी सक्या भौत थोडो फायदो उठायो। म्हैं बारबार खुद नै लताड रैयो हूँ कै अेक सुनहरो मौको हाथ स्यू निकल गयो। ठाह नी बी टेम म्हानै की होय गयो थो कै आपरै थोडे सानिध्य सू ई म्है लोग सतुष्ट होय गया। फायदो तो म्है घणकरै साहित्यकारो रो उठाओ है अर पूरो राजी भी हूँ, पण जैडो मौको आप दीनो वो तो 'न भूतो न भविष्यति'। वै साहित्यकार भी हरबगत म्हनै याद करै पण आपरी पूरी सेवा करण री इच्छा पूरी नी व्हैयी। मौको मिलसी तो कसर काड लेसू।

आपरी पूरी सेवा नी व्हैयी इण सू घरआळा भी दुखी है पण म्है वानै समझायो कै कळपीजणो बेकार है म्है खुद वारै घरे चाल र कसर काड लेवाला। अवै वै राजी है। बठै आवण री सूचना देस्यू।

आपरो ईज
सुखीराम

✿ ✿

म्हारै (अ) साहित्यिक जीवण री गोल्डन जुबली

लोग केवै है कै ऊँट चढे नै कुत्तो खाए अणहोनी को के उपाय। आ अणहोनी ई टी कै बारह बरस सू ई म्है लिखण लाग्यो। कूकर तो बारह बरस ई जीवै – बारह बरस लै कूकर जीवै तेरह बरस ले जीवै सियार' (परमाल रासो) पण म्हैं इण बरस सू कागद काळा करण सरू कर्‌यो। अबार म्है बासठ बरस रो (हाई स्कूल सर्टीफिकेट रे मुजब) होवण आळो हूं। मतबळ ओ है कै लारलै पच्चास बरसा सू साहित्य का असाहित्य की रचना कर रैयो हू। यानी कै म्हारो ओ गोल्डन जुबली बरस है। कमाल री बात है कै साहित्य–ससार माय कोई कळळणो ई कोनी। बिगर कळहळ रै लेखक नै मजो ई कोनी आवै। म्हनैं तो ई मे कोई षडयत्र निजर आवै। नींतर आजकाल तो एकाध रचना करण रै बाद ही लेखक सम्मान रो पात्र बण जावै का खुद रो सम्मान करा लेवै। इण रो मतबल साफ है कै म्हारो कोई हिताळू कोनी।

भारतीय परम्परा आहीज है कै रोवण स्यू ई मा दूध पावै। म्है जाणू कै म्हारै इण लेख रै छपण रै बाद साहित्य माथै ऊण्डो असर होवैलो। ठौर–ठौर माथै इण बाबत चरचावा चालैली समितिया बणैली लेख इत्याद छपैला म्हारा इटरव्यू लेवण नै टी वी आकासवाणी अर बीजा सचार माध्यम म्हारै अठै पूगैला। म्है खातरदारी सारू त्यार हूँ, किणा ने भी शिकायत रो मौको नीं देवूला।

अबै म्है खुद रै रचनाकर्म माथै कीं लाइट नाखू। बात आ है कै म्हारी पहलडी रचना स्यू लेय'र इण रचना ताई सगळी पाण्डुलिपिया सुरक्षित है अर किणी पुरालेख विभाग रै रिकार्ड दाई म्है बानै सुरक्षित रख छोडी है क्यूकै म्हैं जाणू कै म्हारै बाद शोध कर्तावा नै परेसाणी हुसी अर बानै म्हारै माथै रिसर्च करण सारू अळी–गळी भटकणो पडसी। जिण भात महाकवि प्रसादजी खुद री 'कामायनी' री पाण्डुलिपि सभाल'र राख छोडी थी इण भात म्हैं भी खुद री रचनावा री फोटो स्टेट करा'र राख दीनी है इत्तो जरूर कर्‌यो है कै सम्पादका री स्लिपा बठै सू हटा दी है – गलती करी नीतर ओ भी शोध रो विषय हो कै म्है किण–किण पत्रपत्रिकावा मे रचना भेजी अर पाछी आई। खैरसला। म्हैं रचनावा री टाइप–कापी राखी है क्यूकै इणा रो ऐतिहासिक महत्व है।

इण महताऊ रचनावा नै म्हैं बठै–बठै टाइप करयो है जठै–जठै म्हैं टाइपिस्ट रैयो। आखो दिन टाइप करण सारू खपायो अर इणभात राजस्थानी भाषा–साहित्य अर सस्कृति री सेवा भी करी। बाकी जणा तो दफतरा मे ई कोनी बैठै म्है बठै दफतर

शोध निर्देशक रो दस नम्बरी कार्यक्रम

म्हू हिन्दी रो शोध–निर्देशक हूँ। बी ए अेम ए पी–एच डी सू लेय'र नौकरी हासल करण सारू म्हैं जका शोध–मार्ग तलाशया हा उवा आधुनिक विद्यारथया खातर घडा उपयोगी है। अबार म्हूँ वारी चरचा कोनी करणी चावू (इसारो कर दियो है थे लोग घरै आय'र मिल सको।) हिन्दी री बावत म्हारो स्नेव सरूपोत सू है अर फेर नौकरी री वजह सू भी उण रै प्रति अनुराग जाहिर करणो जरूरी होय जावै है। आ अलगी बात है कै बी ए मे म्हारै कनै अग्रेजी साहित्य हो अर गुरुलोग म्हारी प्रतिभा सू घणा प्रभावित भी हा अर उवा म्हानै अग्रेजी रो प्रोफेसर बणण री सलाह भी दीनी ही पण म्हारी बणिक वृत्ति (वकौल श्री मैथिलीशरण गुप्त) ई बात नै परख ली ही कै रिसर्च रै फील्ड' मे अग्रेजी भाषा मे 'स्कोप' नी है इण खातर म्हू हिन्दी मे आयो जठै अकलमदी दिखावण रो खासो स्कोप' है।

हिन्दी मे शोध–कार्यां री दुर्दशा देख'र ई म्हूँ इण कानी आयो हूँ। हिन्दी मे शोध–निर्देशका री आर्थिक हालत माडी ही। तद म्हैं वारी दशा सुधारण रो बीडो उठायो। अबै म्हू शोध–निर्देशक रै रूप मे हिन्दी जगत् मे छायोडो हू। दूजै शोध–निर्देशका नै म्हारै धधे' री ठाह है ईं खातर म्हैं खुद रै व्योपार मे कामयाव हुँवतो आयो हूँ। म्हारी कामयावी रो रहस्य जाणण सारू मोटा–मोटा दिग्गज एडी चोटी रा जोर लगा चुक्या है पण किणी रै भी सफलता–सूत्र हाथै नीं आयो है। जिण भात नुवी सरकार आवण सू, जूणी सरकार रा रहस्य सामैं आ जावै उण भाँत म्हैं नवे सूत्रा री त्यारी रै बाद जूणै रहस्या नै आप रै सामै राखण री बात सोच ली है। इण मे शक कोनी कै जूणा सूत्र आज भी कारगर है फेर भी बहुशाध निर्देशक हिताय' म्है ईं आजमायोडा नुस्खा नै आप रै सामैं राखू। दस नम्बरी (सख्या आळा) सूत्र इण भात है–

1 शोधार्थी रो चुनाव सतर्कता सू करणो चाहिजै।, जदै ताई होय सकै उण शोधार्थिया नै लियो जावै जका कॉलेज का विश्वविद्यालया मे व्याख्याता है जिण सू शोध–निर्देशक आपरी अर आपरै लाडेसरा री पोथिया री खरीद करा सकै नींतर उण शोधार्थियो रा चुनाव करणो चाहिजै जका खुद री जेब सू शोध निर्देशक री पोथिया खरीद सकै।

2 शोध–विषय रो चयन शोध–निर्देशक ही करैलो। विषय रो सम्बन्ध निर्देशक रै ग्रथा उवारी डी लिट सू जुडयोडी सामग्री सू हावणो चाहिजै। अेक बात

रै टेम रै बाद भी रैयो अर खुद री रचनावा टाइप करी। म्हारा वा अफसरा (जिला प्रशासन रा) नाव भी नी काड सक्या कै फलाणै दफतर ओ बाबू गायब हो।

म्है जल्दी निरास होवण आळो मिनख कोनी (गोल्डन जुबली मनावण आळा मिनख नोट करो)। म्है सगळै सम्पादका नै आजमायो वारी खुसामद भी करी सरकारी अखबारा मे सरकार री तारीफ भी करी सेठ री पत्रिका मे वारा गुणगान भी कर्‌या क्यूक म्हें वगत रै मुजब चालू (फेर नोट करो)। फेर भी काम नीं बण्यो। मन उमराव करम दाळदी।

इण रै बाद म्है पोथया छपवावण रो विचार कर्‌यो। पण दमडी का काम फलसै ताई चालै। जिणा प्रकाशका म्हारी पोथ्या छापी वा पीसा म्हारो लगायो अर नाव खुद रो। फेर म्हें धारावाहिक रूप सू छपावण री कोसिस करी पण वा रचनावा भी बुद्धू दाई पाछी घरै आई। फेर भी म्है हीमत कोनी छोडी (नोट करो) अर पाछी आयोडी रचनावा रो मनोवैज्ञानिक अर सामाजिक अध्ययन भी कर्‌या खासकर सम्पादका री स्लिपा रा। पण नीतर सम्पादका म्हारे अध्ययन री तारीफ करी अर न ई शोधकर्तावा।

फेर म्हें रचनावा भेजण ई बद करदी क्यूकै केई पत्र–पत्रिकावा म्हारी रचना न छापण रै गम मे खुद ई छपणो बद कर दियो। भलो मिनख परदु:खकातर' हुवै।

म्है मानू के म्हारै सू चोखी तारीफ लिखण आळा कोनी पण बै तो सम्पादका–मालिका नै जल्दी पटा लेवै। इण सारू पगडी गई भैंस कै पेट म्हारी लिख्योडी तारीफा सू सम्पादक राजी कोनी व्हे।

इण तथाकथित गोल्डन जुबली रै मौकै माथै आपसू अरज है कै म्हानै न तो नोबल पुरस्कार री दरकार है (क्यूकै इत्तो नोबल भी म्है कोनी) अर न ई ज्ञानपीठ पुरस्कार री दरकार है (क्यूके म्है हालताई ज्ञान नै पूठ कोनी दिखाई) न ई सूर्यमल्ल मिश्रण रै पुरस्कार री आसा है (क्यूकै वीर सतसई जिसी रचना नी कर सकू) पण आ सगळी बाता इण खातर लिखी हे के कालने शोधार्थिया नै काई दिक्कत नी हुवे अर म्हारी टाळवी रचनावा वानै एकर ई मिल जावे।

शोध निर्देशक रो दस नम्बरी कार्यक्रम

म्हू हिन्दी रो शोध–निर्देशक हूँ। बी ए अेम ए पी–एच डी सू लेय र नौकरी हासल करण सारू म्हैं जका शोध–मार्ग तलाशया हा उवा आधुनिक विद्यारथया खातर बडा उपयोगी है। अबार म्हूँ वारी चरचा कोनी करणी चावू (इसारो कर दियो है थे लोग घरै आय र मिल सको।) हिन्दी री बाबत म्हारो स्नेव सरूपोत सू है अर फेर नौकरी री वजह सू भी उण रै प्रति अनुराग जाहिर करणो जरूरी होय जावै है। आ अलगी बात है कै बी ए मे म्हारै कने अग्रेजी साहित्य हो अर गुरुलोग म्हारी प्रतिभा सू घणा प्रभावित भी हा अर उवा म्हाने अग्रेजी रो प्रोफेसर बणण री सलाह भी दीनी ही पण म्हारी बणिक वृत्ति' (बकौल श्री मैथिलीशरण गुप्त) ई बात नै परख ली ही कै रिसर्च रै फील्ड' मे अग्रेजी भाषा मे स्कोप नी है इण खातर म्हू हिन्दी मे आयो जठै अकलमदी दिखावण रो खासो स्कोप' है।

हिन्दी मे शोध–कार्यां री दुर्दशा देख'र ई म्हूँ इण कानी आयो हूँ। हिन्दी मे शोध–निर्देशका री आर्थिक हालत माडी ही। तद म्हैं वारी दशा सुधारण रो बीडो उठायो। अबै म्हू शोध–निर्देशक रै रूप मे हिन्दी जगत् मे छायोडो हू। दूजै शोध–निर्देशका नै म्हारै धधे' री ठाह है ईं खातर म्हैं खुद रै व्योपार मे कामयाव हुँवतो आयो हूँ। म्हारी कामयावी रो रहस्य जाणण सारू मोटा–मोटा दिग्गज एडी चोटी रा जोर लगा चुक्या है पण किणी रै भी सफलता–सूत्र हाथै नी आयो है। जिण भात नुवी सरकार आवण सू, जूणी सरकार रा रहस्य सामैं आ जावै उण भॉत म्है नवे सूत्रा री त्यारी रै बाद जूणै रहस्या नै आप रै सामै राखण री बात सोच ली है। इण मे शक कोनी कै जूणा सूत्र आज भी कारगर है फेर भी बहुशोध निर्देशक हिताय म्हैं ईं आजमायोडा नुस्खा नै आप रै सामैं राखू। दस नम्बरी (सखया आळा) सूत्र इण भात है–

1 शोधार्थी रो चुनाव सतर्कता सू करणो चाहिजै। जठै ताई होय सकै उण शोधार्थिया नै लियो जावै जका कॉलेज का विश्वविद्यालया मे व्याख्याता है जिण सू शोध–निर्देशक आपरी अर आपरै लाडेसरा री पोथिया री खरीद करा सकै नीतर उण शोधार्थियो रा चुनाव करणो चाहिजै जका खुद री जेब सू शोध निर्देशक री पोथिया खरीद सकै।

2 शोध–विषय रो चयन शोध–निर्देशक ही करैलो। विषय रो सम्बन्ध निर्देशक रै ग्रथा उवारी डी लिट सू जुडयोडी सामग्री सू होवणो चाहिजै। अेक बात

साफ करणी जरूरी है कै शोधार्थी रै विषय नै एप्रूव करावण खातर शोधार्थी रै खर्चे माथै शोध–निर्देशक विश्वविद्यालय जावैलो।

3 शोध–विषय स्वीकृत होवण रै बाद शोध–निर्देशक (गाइड) रै सगा–सम्बन्धिया मितरा इत्याद नै बडी पार्टी देवण रो खर्चो भी शोधार्थी ही उठावैलो। वीं बगत फोटो इत्याद री प्रबन्ध भी करणौ पडैलो।

4 शोधार्थी नै गाइडजी रै अठै सप्ताह मे कम सू कम चार दफै आवणो पडसी अर अठै खाली हाथ पूगणो अपशुकन मान्यो जासी। शोधार्थी नै निर्देशक रै मूड पसद अर सुविधावा रो पूरो ध्यान राखणो पडैलो।

5 जे शोधार्थी दूजै शहर रो वासी है तो जळवायु बदळ सारू वो निर्देशक जी नै सपरिवार आपणै शहर ले जावैलो अर बठै री खास चीज–वस्त इणा नै भेट करैलो।

6 शोध–निर्देशक रै घर–बाहर रा कामकाज शोधार्थी ई देखैलो। जे गाइडजी मकान बणावण रो विचार करेला तो ऊपरली भागदौड शोधार्थी ही करेलो। जरूरत मुजब धन रो प्रवध भी करैलो।

7 शोध–ग्रथ जल्दी खतम करण खातर शोध–निर्देशक आपरै ग्रथा रो साराश लिखावैलो (थीसिस मितरा कनै ई तो जाणी है) लाइब्रेरी री पोथिया माथै नकल करण सारू निसान लगावैलो अर नकल री अकल भी देवैलो। इण सगळी मेनत सारू निर्देशक जी दस सू पदरह हजार री रकम का रगीन टी वी वी सी आर इत्याद री माग करैलो। माग पूरी न होवण सू मौखिकी री परीक्षा रोकी जाय सकै है।

8 शोध–ग्रथ जाचण सारू शोधार्थी नै रिफिल पैंसिल कागज इत्याद रो प्रबन्ध करणो पडैलो – बो स्टेशनरी गाइड जी सू भी खरीद सकै है।

9 *शोध प्रबन्ध टाइप करावण रो भारी काम उदारमना शोध निर्देशक ही करैलो* बो आपणे शिष्य नै पीसै रै अतिरिक्त बीजा कष्ट नही देवणो जावै। टाइपिस्ट सू बो ही बात करैलो रकम अर खुदरो कमीशन तय करैलो। एक बात याद राखणी जरूरी कै थीसिस 2 हजार पन्ना सू कमती नी हुवणी चाहिजै।

10 शोध निर्देशक रै काधै माथै ही ओ भार रैवैलो कै बो विश्वविद्यालय मे थीसिस भेजी जावण रै बाद बाह्य परीक्षका अर विश्वविद्यालय कै अधिकारया सू बातचीत करै (पीसा शोधार्थी रा लागसी)। मौखिकी री त्यारी इत्याद मे भी निर्देशक रो पूरो सहयोग रैसी।

म्हने पूरो पतियारो है कै देश–विदेश रा शोध छात्र (खासकर शोध–छात्रावा) इण सूत्रा रो लाभ उठासी अर हिन्दी साहित्य रो (सागै म्हारो भी) भण्डार भरसी।

✿✿

स्वर्ण जयंतिया तो गई परी

म्हारी जलमभौम डेराइस्माइलखा (अबै पाकिस्तान) री बोली सिरायकी (लहदा) मे अेक कहावत ही – गये शिराध आये नुराते वाहमण शोदे चुपचुपाते। यानी सराध पख तो गयो अर नवरात्रा आया (अबै) ब्राहमण बापडा चुप होय गया है। श्राद्धपक्ष मे बामण जीमण–जूठण में ई व्यस्त रैंता पण अबै नवरात्रा मे चुपचाप बैठया है। इया ही स्वर्ण जयती रूपी महोत्सव गया परा अबै साहित्यकार–कवि–भाषाविद् इत्याद भी चुपचाप बैठया है। वीं टेम घणी व्यस्तता ही।

भारत री स्वर्णजयती राजस्थान वणण री स्वर्णजयती राजभाषा हिन्दी री स्वर्णजयती इत्याद मोकळी स्वर्णजयतिया देश भर रै बुद्धिजीविया सारू कळळ–हूकळ जिसी रैई। केई साहित्यकारा–कविया सारू अै जयतिया कल्पतरू अर केई सारू कळखारी ही पण कुल मिलाय'र अै सगळी जयतिया कमज्या री प्रतीक ही। कविया मे कठै–कठै कनखल भी रैयो क्यू कै 'यथा राजा तथा प्रजा। राजनीति मे तद कमजादा टटा–फसाद रैवै तद बुद्धिजीविया मे भी करडाई जरूरी है।

1997 सू लेय'र अजताई साहित्यकारा सारू स्वर्णिम अवसरा री कमी नी रैयी है। वा दिना वारी याछा खिळी रैहती ही। किणी भी बुद्धिजीवी नै फुर्सत ही नही ही। घणकरा लोग तो फुलटाईम' इणा जयतिया मे लाग रैया हा पार्टटाईम' री गिणती तो कर ई कोनी सका। मुख्य सडका माथै वारी टोलिया च्यारूमेर निजर आवती ही। दुकाना माथै वारो जमघट ई नी हो बठै तौ वारो अस्थायी निवास हो। वा रा सूटकेस गाभा बठैई त्यार रहता हा। जिणभात फौजी हर वगत त्यार रैवै उण भात अै सगळा साहित्यकार भी कूच करण सारू हर टेम फिट' रैंवता। फौजिया दाई अठै भी कमान' सभालण वाला कवि न्यारा–न्यारा हा। स्सै खुद रै दळ–बळ समेत पूगता अर स्वर्णजयति रा जैकारा बोलता। लारै रैया नुवा बुद्धिजीवी इणा माथै नूवे ढग सू आलोचना शास्त्र त्यार करता। मतलब ओ है कै सगळा जणा व्यस्त का त्रस्त हा।

भारत री आजादी री स्वर्णजयती माथै बुद्धिजीविया कितो खोयो अर कितो पायो – इण रो हिसाब–किताब ही कोनी कर सकया कै राजस्थान री स्वर्णजयती आयनै ढूकी। फेर सारी व्यस्तता। बच्चन जी कैयो है – दिन को होली रात दीवाली सदा मनाती मधुशाला। पण अठै तो सीमित समै री बात ही फेर भी घणकरा बुद्धिजीवी

खुल र आणद मनायो। भारत महान री जागा म्हैं भी राजस्थान महान' कविता सुणाय र श्रोतावा नी दोस्ता री वाह वाही लूटी। आम रा आम गुठलिया रा दाम। घणी जागा सागी कवितावा सुणाय र याद भी कर लीनी। पढणरो झझट भी मुकग्यो। असफल अर हूट होवण वाला भी सफल अर शूट होय गया।

राजभाषा हिन्दी री स्वर्णजयती सागै ही प्रकट व्हैयी। इण माय बै बुद्धिजीवी भी सामिल हुया जका पेलडी दोय जयतिया सू महरूम रहग्या हा। हिन्दी तो घर री भाषा है – इण मे काई नुवी बात कैहणी। स्कूल मास्टरा सू लेय र यूनिवर्सिटी मास्टरा ताई सगळा जणा बैंवती गगा मे हाथ–पग ई नी पूरो स्नान कर लियो। अग्रेजी भाषा री चीथीजणी करता–करता अे सुपातर हि दी री चींध (पताका) फैराता गया। हिन्दी रो छपकाळो पेस करता–करता बै छप्पनभोग भी करता गया रिटायरमेट रै पच्छे बच्छ बारस री गाय दाई। हिन्दी दिवस माथै म्हने भी नूत मिली तो हिन्दी भाषा माथै बोलण री इत्ती त्यारी कर ली के अबै हर साल सागी बाता बोलण मे कोई शरम नी है। दूजै विषया वाळा अध्यापक भी हिन्दी भाषा री महत्ता माथे ढगसर बोलण लाग्या। बै भी अबै हर साल हिन्दी री 'विनम्र सेवा' करण सारू त्यार है।

अबै स्वर्ण जयतिया तो गई परी। बुद्धिजीवी साहित्यकार कवि शिक्षाविद् भाषाविद् स्सै जणा अमूझ रैया था। तद अेक जणै कैयो आपा सारू तो महापुरुषा री जयतिया नेतावा री जयतिया अकादमिया रा थरपणा दिवस विविध विधावा रा समारोह नाटय समारोह इत्याद री कमी कठै है ? अभिनदन ग्रथा स्मारिकावा पोथिया रा लोकार्पण इत्याद कौ कठै टोटो है ? नीतर खुद रा अभिनदन तो करा ही सका। नर हो न निराश करो मन को।

सगळा जणा नामदार बणण सारू त्यार होयग्या।

भाड़ा-सस्कृति

आज भाडा-सस्कृति रो जुग है। च्यारूमेर भाडै री चीजा अर मिनखा री दरकार है। भाडै रा सैनिक भाडै रा मिनख-वम भाडे रा गवाह भाडै रा भिखारी भाडै रा मकान स्सै भाडै रा ई है। अठै ताई के धणी-लुगाई भी (फिलमा में) भाडे रा मिले। शादी व्याव मे वडे सहरा मे सगळो इन्तजाम भाडै माथै हुय जावै वर-कन्या रै घरवाळा नै हाथ-पग भी हिलाणा नी पडै। पीसा फेक तमासा देख'रो जुग है।

भाडै रा मिनखा नै 'ट्रैंड' करणो पडै। जिया भाडे रा सैनिका नै सिखायो जावै कै – (1) निहत्था माथै वार करणो है वारा अग-भग करणा है (2) दूजा री इळा खुदरै वापूरी इळा समझणी है (3) वार-वार मार खाय'र भी मार खावण रो अभ्यास जारी राखणो है (4) मिनखपणो इत्याद कब्र मे दफनाय'र जाणो है (5) भूखा-तिसा रैवण रो अभ्यास करणाँ है (6) हुकुम रो गुलाम ई वणो रैवणा है (7) खुद रो दिमाग सरू सू ई अडाणै राखनै काम करणो है इत्याद।

भाडै रा मिनख-वम भी लूठी ट्रेनिग लेवै। जिन्दगी मे भाडै री दरकार जिन्दगी सू वेसी है। खुद सारू जागा भलै ई कमती रैवै पण किराया-भाडा आणौ चाहिजै। जठै किरायो नीं आवै वठै नुवी बीनणी सारू सासु-सुसरो भी भाडै रा ई है अर काम वदलै अनाज' री नीति रा पालन करनै बीनणी राजी व्है।

भाडै रै सैनिका अर दूजै मिनखा मे केई खूविया हुवै। वा नै नीतर नौकरी री चित्या व्है अर ना ई घर-परिवार री। उणा माथै खरचो-पाणी जरूर करणा पडै।

म्हारी भी अेक समस्या है अर आप सिरदारा सू अरज है कै म्हारी समस्या नै हल करौ। बात आ है कै म्हैं फोरी किस्मत आळो हू। टावर पणै सू लेय'र हालताई म्हनै साचौ मितर नी मिल सक्यौ है। जिता भी मितर बणाया स्सै कन्नी काट गया। म्हैं ओछव सू वा नै मितर वणायो पण वै ओछाई दिखा गया। जद भी म्हैं आपरै मितरा रा परिचय दूजै मितरा सू करायो तद स्सै म्हारो साथ छोड गया। 'दोस्त दोस्त ना रहा। आज आ हालत है कै म्हारो तो कोई दोस्त कोनी पण जिणा सू परिचय म्हैं करायो वा रा खासम खास दोस्त है।

लारलै दिना म्है आपरै अेक स्टूडेट नै अेक प्रशासनिक अधिकारी सू जैपर मे मिलायो। अबकाळै देख्यौ कै वीं स्टूडेट रो लाडेसर उण अधिकारी रै घरै रहनै राजस्थान

विश्वविद्यालय म भण रैयो है। म्हारै सू तो वो अधिकारी भी कन्नी काट गयो। इसा पचासू उदाहरण है।

थे कैवोला कै म्हारै में ईज कोई कमी है। होसी। कोई भी मिनख दूधरो धुल्यौ कोनी। म्हैं खुद री कमिया नै मानू –

(क) लोग–बाग पी.एच.डी. करावण सारू घणा पीसा लेवै अर स्टूडेण्ट भी उणारा घोटी कटया सिस्य बण्या रैवै। म्है 21 पी.एच.डी. मुफ्त में कराई अर डिग्री मिलण रै बाद वै सगळा जणा ईया गायब होता गया जिया काव्यगोष्ठी मे श्रोता गायब होता जावै।

(ख) वै सगळा 21 पी.एच.डी. चोखी नौकरया में है वानै म्हारी दरकार कोनी जद कै दूजै लोगा रा पी.एच.डी. सिस्य हालताई नौकरी सारू भटक रैया है इण खातर भी वै गाइड सू मिलता रैवै।

(ग) म्हारी घरनार रै देहावसान रै पछै म्हारै अठै जलपान री सुविधा भी नीं रैयी।

(घ) म्हनै मितर बणावण री कला भी कोनी आवै। न तो म्हारो कोई क्षेत्र है जठै सू पुरस्कार–सम्मान बीजा मिल सकै अर न ई कोई लूठै नेता सू ओळखाण। न ई किणी लूठी संस्था अकादमी इत्याद रो अध्यक्ष/सचिव हूँ।

पण म्हैं ईमानदारी सू दोस्ती निभावण री कोसिस जरूर करी फेर भी सगळा मितर साथ छोड गया। आजकाल रा मितर फायदा देखै।

अवै म्हनै भाडै रै सैनिका सू प्रेरणा मिली है। सिस्य मितर भी भाडै रा राखणा चाहिजै। इणा माथै करयो गयो खर्चोपाणी अकारथ कोनी जासी। अफसोस भी नीं रैसी कै मौकै माथै दगा देग्या – इया इसा लोग दगा कोनी देवै। आ बात जरूर है कै भाडै रै दोस्ता माथै भी तथाकथित साचै दोस्ता रो असर पड रैयो है फेर भी कोसिस करी जाय सकै है। आप सिरदारा नै भाडै रै मितरा सिस्या रो पतो ठैकाणो ठा हुवैतो म्हनै लिखण री तकलीफ जरूर करया। जिन्दगी रा लारला दिन भाडै रा दोस्ता सागै ई काटस्यू।

✿ ✿

पाछी आयोड़ी रचनावां माथै रिसर्च

बी दिन अेक पुराणो चेलो आयो। काईं कर रैयो हो ? म्हैं पूछ्यो। पी–एच डी करण रो विचार है बो बोल्यो। म्हैं कैयो – पी–एच डी नी पी–एच डी। बो हँस्यो – अेक ई बात है म्हनै तो डिग्री सू मतबळ है।

विषय काईं है ? म्हैं फेर पूछ्यो।

'राजस्थानी आलोचना मे म्हारो स्थान'।

म्हैं हैरान व्हैयो। 'राजस्थानी आलोचना मे म्हारो यानी थारो स्थान ? म्हैं समझयो कोनी।

बीं समझायो – आज म्है प्रो कालूजी रै घरै ग्यो। प्रो साहब ई विषय दियो – 'राजस्थानी आलोचना मे म्हारो स्थान' सागै ई कैयो कै म्है खुद इण विषय माथै पी–एच डी कोनी करा सकू।

म्हैं फेर हॅस्यो – अरे भई प्रो साहब रो मतबळ हो कै राजस्थानी आलोचना मे वारो यानी कालूजी रो स्थान अर थू खुदरो स्थान बता रैयो है।

गुरुजी म्है तो पी–एच डी करणो चावू। विषय थे ई बता दो। आपरै खनै ई करणो चावू। कालूजी री फीस धणी है।

मैं फीस बीजी कोनी लू। म्हैं बी सू कैयो।

म्हैं हिन्दी अर पत्रकारिता दोनू मे पी–एच डी कर सकू। थे कोई विषय तो बताओ।

अबकलै पी–एच डी कैयो तो म्है ठोकूला' म्हैं हसता थको कैयो।

जेठालाल (चेलो) नाटकीय ढग सू म्हारो पग झाललियो। बो नाटकियो भी है। म्हैं बीनै कुरसी माथै बैठाया अर कैयो – किण विषय माथै पी–एच डी करणी चावै ?

बस फटाफट डिग्री मिल जावै इसो विषय बताओ।

बी टैम पोस्टमैन (डाकियो) डाक देय र गयो। म्हारै हाथ सू लिख्योडो पतो देख'र म्हैं चिटठी फाइल मे नाख दीनी।

इया करो। अेक नूवो विषय दे रैयो हूँ – पाछी आओडी रचनावा रो मनोविज्ञानिक अर समाजशास्त्रीय अध्ययन।

भोत मोटो विषय है। बो बोल्यो म्हारै तो कीं पल्ले नीं पडयो।

आज ताई थारै की चीज पल्ले पडी है ? म्हनै रीस आई।

गुरुजी वो फेर पग झालण सारू उठयो।

बैठ बैठ म्हैं कैयो। इया है लिखारा लोग खुद री रचनावा अखबारा मे भेजै पण सम्पादक वानै पाछी मेल देवै। वी टैम सम्पादक री काई मनोदशा व्है वी टैम सामाजिक परिवेश काई व्है – इणा वाता माथै रिसर्च होय सकै है। म्है रचनावा रा साहित्यिक मूल्याकन भी कर सका।

पण गुरुजी जिकी रचनावा पाछी आई है उणारो साहित्यिक मूल्याकन कोई व्है सकै है। वी मे काई डोळ हौवतो तो सम्पादक जी छाप नीं देवता ? वात साची ही म्हारो ध्यान फाइल माथै गयो जठै म्हारी टटकी रचना लुक्योडी ही।

आदमी तो समझदार है म्हैं मन ई मन वीरी तारीफ कीनी।

म्हैं कोइ लेखक कोनी म्हारो ओ अणभव भी कोनी। अबै आप ई बतावो कै काई करणो है ?

इया है म्हैं कैयो आपानै उणा स्लिपा नै भेली करणी पडसी जकी सम्पादक लिखारा नै टिकट लगायोडै पता लखियोडै लिफाफे मे रचना रै सागै भेजै।

काई लिखै ? जेठालाल पूछयो।

न्यारा-न्यारा सम्पादक न्यारी-न्यारी भाषावा मे लिखै। कोई सम्पादक तो आपरै पत्र मे पैली सू लिख देवै – 'रचनावा रै साथै टिकट लाग्यो लिफाफो नी भेजो। रचना री एक प्रति आप आपरै कनै जरूर राखौ। रचनावा पाछी भेजणै मे दिक्कत आवै।

'रचना लिफाफे मे मेलण मे भी दिक्कत ? वीं पूछयो। फेर खुदई कैयो – गोंद भी तो लगावणी पडै। इत्तो टैम कठै ?

फालतू री बाता छोड म्है कैयो।

बीं फेर पगा रै हाथ लगायो। म्है कैयो – पाछी आयोडी रचनावा रै सागै सम्पादका री टीप इण भात है –

(क) सम्पादक रै अभिनदन अर खेद साथै।

(ख) म्हानै खेद है कै रचना रो उपयोग ई पत्र मे नीं होय सकै इण सारू आ पाछी भेजी जाय रैयी है।

(ग) इण रचना रो उपयोग अन्यत्र कियो जाय सकै है।

(घ) 'रचना पाछीकरण रै लारै कई कारण है – पत्र री रीति नीति स्थान री कमी इत्याद।

(च) आ वात कोनी कै आप री रचना कम महताऊ है पण इण पत्र मे छप कोनी सकै। पण आपरो सहयोग सदीव चाइजै।

अेक शर्त इसी भी

म्हैं शर्त लगाय'र कह सकू कै शर्त लगावण रो शौक स्सै जणा नै है। सायत ई कोई मिनख आपनै इसो मिल सकै जिण आपरी जिन्दगी मे शर्त नी लगाई हुवै। फिल्मा मे नायिका सारू शर्त लगाई जावै चुनावा मे हार–जीत सारू शर्त लगाई जावै क्रिकेट रै दिना मे तो शर्त ई शर्त रो बोलबालो रैवै – लोगबाग ईनै 'सटटो कह'र बदनाम भी करै पण शर्त री मानता तो कोर्ट–कचहरी मे भी है जणैईज लोगबाग शपथ री शर्त सागै साच रै सिवा कीं नीं कहवण रो कथित वादो करै। जीवण रो अेक भी क्षेत्र नी है जठै शर्त री गूज नीं हुवै। शर्त रै खुडकै सू ई बडा–बडा गिरण–गहला भी सही होय जावै।

आपा रा दफ्तर कॉलेज पाठशालावा इत्याद शर्तो री प्रयोगशालावा है जठै शर्ता रा नुवा–नुवा प्रयोग रोजीना हुवै। शर्तां सू धडक भी बधै अर धजरेल (चोखो) भी धकै (साम्है) आवे। चुनाव क्रिकेट पुरस्कार मान–सम्मान सगळी बाता माथै शर्त लगावण वाला अठै है। पण आ अफसोस री बात है कै ई विश्वविख्यात विषै माथै कोई पोथी का कोई लम्बा चौडा आलेख ई कोनी लिख्यो मिलै। म्हैं विनम्र सरूआत इण छोटैसीक व्यग्य सागै कर रैया हूँ।

जद म्हैं कॉलेज मे हो तद म्हारो वेतन नोशनल (कल्पित) रूप सू बधतौ हो ग्रेड भी नोशनल' हो – साची री तनख्वाह तो कदैई मिली कोनी। ई सारू सायत पढाई भी नोशनल व्हैती। साइस वाला चित्रकला सगीतकला टयूशन कला रा लोग फेर होम्योपैथी मे पारगत होय जावता अर आर्टस वाला शेयर बाजार ज्योतिष नेतागिरी का टीमा सागै जात्रा करणी सरू कर देवता। वारी जैवार दूजै विभागा नै चोखी कोनी लागती। खैर म्है भी बठै कीं न की शर्त लगावतो ई रहतो – खुदरै 'सब्जैक्ट' माथै चर्चा करण री रिस्क' तो कोई कोनी लेतो पण राजनीति क्रिकेट सिलेमा शेयर इत्याद री चर्चा स्टॉफ रूप मे आम ई। म्हारो थोडो–घणो ज्ञान' सिलेमा मे हो। फिल्मी गीता माथै म्हैं कई शर्तां भी जीती पण म्हारी जीत भी नोशनल ई रैयी। कदै ई म्हनै जीत रो सुख कोनी मिलयो। चेला–चाटा भी म्हारै सू दुखी हा वानै नकल करण री छूटनी ही। जद वै नेता मत्री बण्या तद वा म्हनै (ट्रासफर कर करनै) आखौ राजस्थान री सैर (सरकारी खर्चे माथै) कराई। चेला तो गुरुवा रा शुभ चितक हुवैई है। जोगानजोग म्हैं

रिटायर होय'र घरै आयो अर कई लायकी वाला अध्यापक कुलपति जोगीसर आयोगा रा सदस्य इत्याद बण गया। म्है तो डॉखलो ई रैयो बै कलपतर होय गया। रिटायरमेट रै पछै फिल्मी पहेलिया भरी शर्ता रो पालन करनै पहेलिया बीजी भी जीती पण कुल मिला'र पीसा घर सू ई लाग्या। कई पहेलिया दूजै नावा सू उण तर्ज माथै भरी जिण तर्ज माथै नेतागण फार्महाउस बैक खाता कीमती सामान मकान इत्यादि दूजै नावा से लेवै। पैट्रोल पम्पा गैस एजेसिया इत्याद री बाता तो जूनी होयगी है।

शर्ता रो इतिहास महाभारतकाल सू भी पहला रो है। शर्त लगावण मे आज आखो विश्व जुटयोडो है पण भारत तो इणा रो गुरु' रैयो है। आचार्य मम्मट आपरै 'काव्य प्रकाश' मे यशसे अर्थकृते लिख'र यश नै अर्थ सू बेसी मान्यो है पण आज जमानौ उलटफेर रो है इण सारू अर्थप्रधान विश्व करि राखा' ई कहणो चाहीजै इण रो ओ मतबल नी है के यश री महत्ता कमती है। यश सारू तो अर्थ भी खर्च्यो जाय रैयो है। म्हैं अेक मिदर मे आपणै परिचित सू मिलण नै गयो वो बठै रो सचिव हो अर महत जी रै चरणा मे बैठयो हो म्हनै भी बठै बैठण रो इशारो करयो – मोबाइल सू महत जी बात कर रैया हा – भई आपरै अखबार मे घणी छोटी न्यूज आई है औरा मे तो म्हारी फोटू भी छपी आपरै अठै तो बा भी नी छपी भई म्हारो ख्याल राख्या करो। म्हैं हैरान रह गयो –साधुवा ने भी इत्ती लोकैषणा ?

घणा ई वैद्य हकीम शर्तिया इलाज' करै वै शर्त पूरी करै का नी आ बात दूजी है पण विज्ञापन मे तो शर्तिया बात कैवे।

अबै म्हैं लेटेस्ट शर्त' री बात करू। आ शर्त आचार्य मम्मट रै छहौ काव्य प्रयोजना सू विरोध राखै। औ यश अर्थ शिवेत्रक्षतये काता सम्मित उपदेश इत्याद सू परे है। व्यवहार विदे होय सकै है क्यूकै इण शर्त रै लारै आतक डर नीति इत्याद बाता होय सकै है। आप लोग अखबारा मे पढताई होवोला कै फला समाचार री जाणकारी थीं अफसर नाम ना छापण री शर्त माथै दीनी। जद सगळा जणा नाव छपावण सारू ताबडतोड कोसिस कर रैया है तद फला अफसर इण सू परै भाज रैयो है। कमाल है आज रै बगत पीसा देयनै लोगबाग खुद रा नाम छपवा रैया है साधु–सत प्रचार–प्रसार सारू तडफडाट कर रैया है नुवा लिखारा टिप्पस भिडा रैया है टाचकियोडा मिनख इज्जत खातर खुद पर लेख छपवा रैया है केई वीर नेतावा री टहल–बदगी करै वारै सागै खुद री फोटू छपवा रैया है चोरी चकारी तस्करी बेईमानी करनै लाइम लाइट' मे आय रैया है। अठै इसा करमठोक अफसर भी है जिका प्रचार–प्रसार मे ई कर–माठो (कजूस) वण रैया है – शर्त लगाय रैया है कै नाव नी छपणो चाहिजै। इया तो अै चमचावा सू आवरत रैवै पण प्रचार– टेम शर्त' बाध देवै। भाई आपनै तो फोकट री पब्लिसिटी मिल रैयी ही

रैया हो। काई आफत है ? भाया इण देस री धरती जठै सोनो उगलै वठै पोल भी उगलै। आज नी तो काल आपरै सुभनाव री ठाह तो लोगा नै पढ ई जासी सागी शहर मे तो सागी दिन ई पड जासी दूजे सहरा मे थोडी देर सू पडसी तो फेर काई फायदो इसी निकमी शर्त रो ? तीजीताल नी तो आप माथै तीरवारी बाद मे होयजासी होसी तो जरूर तो फेर इसी शर्त राखण री काई दरकार है ? बाद मे जनता ई आपनै पिछाण लैसी कै नाव ना छपावण री शर्त राखण वाळा ओहीज है। ईयैनै उर्दू मे कैवै – गुनाह बेलज्जत इसो गुनाह करणो ई क्यू जिण मे मजो ई कोनी मिलै। नाव छपवासो तो तीजीताल आपरो नाम होय जासी आ म्हारी शर्त है।

उडीक ऐक प्रस्ताव री

राजनीति में 'प्रस्ताव' रो जबर महत्त्व है। आप तो अखबारा में पढताई होवोला कै 'फला जागा तापघर खालण रो प्रस्ताव है' 'वठै ताई रेल सुविधा बधावण रो प्रस्ताव है' 'मन्त्रिमडल बधावण रो कोई प्रस्ताव कोनी' इत्याद–इत्याद।

औ सगळा प्रस्ताव राखणिया कुण हुवै ? प्रस्ताव रै बिगर कोई काम–काज कोनी होय सकै काई ? प्रस्तावा रौ इतिहास काई है ? कद सू सरू होया औ खुसभगती वाळा प्रस्ताव। तौ कोई भी काम करण सू पहली 'प्रस्ताव' करयौ जावै फेर बी पर अमल करयौ जावै। म्हैं गुलाम देस रो जायो–जळमियो हूँ, बी बगत आजादी री लडाई चाल रैयी ही। बी बगत खुद रै बलबूते माथै ई नेतावण जावता हा। गाधी जी का नेहरू जी रै नाव रौ प्रस्ताव कुण करयौ। म्है टाबर भी उणा दिना जाणता हा कै देस री आजादी मिल्या पछै गाधी जी का नेहरूजी ई देस रा कर्णधार होवैला। अबै तो फेर भी ठा पडन लागगी है कै मुख्यमत्री कुण बणैला हालाकि इणा प्रस्तावा मे भी फर्क आय सकै है। लारलै दिना तौ प्रधानमत्री रौ भी कोई पतो नी हो कै कुण बणैलो अर कद बणैलो। ऐन बगत ई 'प्रस्ताव' व्हैतो अर कोई अणजाण भी गादी सभाल लेतो। 'भगवान जद देवै तौ छप्पर फाड'र देवै' कहावत अबै ढगसर समझ मे आय रैयी है।

म्हारो आखणो ओ है कै 'प्रस्ताव' मे घणो वजन है। जद सुणा कै 'पैट्रोलियम पदार्थ मे वढोतरी रो कोई प्रस्ताव नी है' 'रेल भाडा बधावण रो कोई प्रस्ताव नी है' तो घणी खुसी हुवै पण दूजै–तीजै दिण ई ठाह नी कठै 'प्रस्ताव' आ बळ जावै अर कीमता मे बधोतरी होय जावै। सवाल ढगसर प्रस्ताव रो नी शक्तिशाली मिनखा रै प्रस्ताव रो है। जे ताकतवर प्रस्ताव राखै तो तुरत पास होय जावै अर अमल मे आय जावै। प्रस्ताव पास होवणो ई जरूरी नी है बिल्कुल जरूरी है बीरी क्रियान्विति।

आप भी जाणौ कै लारलै तीसेक बरसा सू हरेक गोष्ठी मे राजस्थानी मानता रो प्रस्ताव सर्व सम्मति सू पारित होवै पण आगै काई हुवै ? बस सागी झगडा–झगडी। गुघळी आपारी जीवण शैली है। अमीर खुसरो री मुकरिया आपा रै साम्ही काई दम राखै?

राजनीति मे जठै महताऊ प्रस्तावा माथे खुल र विचार हुवै बठै समाज अर

साहित्य मे प्रस्तावा माथै चुपचाप विचार हुवै। राजनीति रौ छेत्र बडो है ई सारू प्रस्तावा रा विचार साम्ही आय जावै पण समाज मे थोडा–घणा प्रस्ताव ई चौडै आवै अर साहित्य मे तो विल्कुल ही चौडे नी आवै। ह्वै गोष्ठी रै सभापति खास मिजमान आद रो नाव चौडे आवै भी तो काई फर्क पडै – इणा बाता सू कोई योजनावा री रूपरेखा कोनी वण सकै।

साहित्य मे प्रस्ताव' राखण रै पच्छै वा पर ठीमराई सू विचार करणो जरूरी है। साहित्य मे अभिधा लक्षणा अर व्यजना – तीन शब्द शक्तिया रो प्रयोग हुवै। म्हैं अेक व्यग्य लिख दियौ – म्है ज्ञानपीठ पुरस्कार कोनी लेवू अवै थे सिरदार तो जाणौ ई हो के व्यग्य व्यजना शब्द–शक्ति रो खेल है पण म्हैं करमठोक ई रैयो अर आपणा लोगा ई म्हारो नाव पुरस्कार सम्मान सारू प्रस्तावित' करणो ई बद कर नाख्यौ के ईयैनै किणी पुरस्कार री दरकार कोनी। भाया थे व्यजना नै अभिधा क्यू समझ'र म्हारै आडी आवण लाग्गया ? म्है तो शराफत मे आ बात लिखी ही थे तो यथार्थवादी बण गया। अबै म्है पुरस्कार नी लेवण रो (खुदरौ) प्रस्ताव पाछो लेय रैयो हूँ। नोट कर ल्यो। हालाकै म्हैं जाणू कै म्हारै नाव रौ प्रस्ताव' भी हुवैलो। जद मध्यप्रदेश मे होयेडै 'वाक आऊट नै दूजै दिन पाछौ लियौ जाय सके है तद म्हारै नाव रौ प्रस्ताव' री सभावणा तो रहवणी ई चाहीजै।

साहित्य मे नामा री सभावना ई लिखारा नै आक्सीजन' देवै। ना जाणै किण भेस मे सम्मान का पुरस्कार मिल जावै ना जाणै कुण प्रस्ताव' भेज देवै हालाकै प्रस्ताव' भेजणो ई पुरस्कार/सम्मान री गारटी नी है। म्है किती दफा खुद रौ नाव किणी–न–किणी पुरस्कार/सम्मान सारू युद्ध–स्तर माथै सस्थावा इत्याद मे भिजवायो पण वा तै कर राख्यो है के इण बदै नै निहाल नी करणौ। आज ताई बिगर लूठै पुरस्कारा रै जिदगाणी नै धका रैयो हूँ।

प्रस्तावा नै भूलण री आदत घणी जूणी है। जरूरी भी है। शोक प्रस्ताव' नै कुण याद राखै ? स्कूल कॉलेजा मे तो शोक–प्रस्ताव पारित हुवण सू पहला ई कैद सू छूटयोडै कैदिया दाई छोरा–छडा पार होय जावै। वानै सिलेमा री उडीक रैवै। इया आपा नै इण गमी नै भूलणो भी चाहीजै गम रै माहौल सू भाजणो भी चाहीजै। आपा रौ दशर्न आशावादी है।

आपा प्रस्तावा नै ठीमराई सू कोनी लेवा। ठीमराई सू लेवण रै बाद प्रस्ताव रो चमत्कार देखौ। प्रस्तावकर्ता अर अमलकर्ता दोनू ई गभीर होवणा चाहीजै। अभिनेत्री श्रीदेवी री फिल्म सोलहवा सावन पिटगी ही पण जद वारी नाक री शल्य चिकित्सा रो प्रस्ताव के राघवेन्द्र राव करयौ अर वा अमल करयौ तद हिम्मतवाला' सू सुपरहिट होयगी। दिल्ली उच्च न्यायालय भी अेक प्रस्ताव राख्यौ हो कै डेगू रोग रै जनक

एडीज – एजिप्टी मच्छरा नै मिनखा नै काटता थका री टक टीवी माथै दिखायौ जावै। चोखी बात है मच्छर शरम सू पाणी–पाणी होय भाज जावैला।

जिण दिन सरकार राजस्थानी भाषा री मानता रो प्रस्ताव गभीरता सू लेवैली बी दिन राजस्थानी भाषा राज्य री दूजी भाषा भी बण जावैली अर आठवीं सूची मे भी इणरी ठौर पक्की होय जावैली।

फिलहाल आप लोगा सू अरज है कै न्यारी–न्यारी जगावा माथै न्यारी –न्यारी सस्थावा माय म्हारै नाव रो प्रस्ताव भेजो जिण सू म्हैं न्यारी–न्यारी ठौर जाय सकूलो क्यूकै ओ म्हारो रिकाड रैयो है कै कवि–सम्मेलना / भाषणा का पत्रवाचन सारू जिकी सस्था म्हनै अेक दफा नूतो भेज देवै म्हारै पूगण रै पच्छै बा म्हनै फेर नी बुलावै। थे अेक दफा तो प्रस्ताव भेजौ।

✿ ✿

दैनिक पत्रा मे पतौ-ठिकाणौ

आजकाल घणाक पत्र–पत्रिकावा मे लेखका रो नाव छपयोडौ नी मिलै। लारलै दिना म्हारौ अेक व्यग्य किणी दैनिक पत्र रै परिशिष्ट मे छप्यौ। कोटा सू अेक कागद आयौ कै म्हारे कनै आपरो पतौ हो इण सारू आपनै लिख रैयो हूँ – आपरो पतो अखबार मे क्यू नी छप्यौ ? आप रौ व्यग्य इणिया–गिणिया चोखे व्यग्या मे है पतो–ठिकाणौ होतो तौ बीजा पाठक भी आपनै लिखता।

अवै म्हे काई केवू ? पतो छापणो नही छापणो तो सम्पादका रा विशेषाधिकार है लिखारा काई कर सकै है ? अवै म्हे सोच मे पडग्यो के सम्पादका आ काई नीति बणा लीनी है कै लिखारा रा पता नी छापैला। म्हे उण सभावनावा माथै विचार करण लाग्गयौ कै लेखका रा पता–ठिकाणा क्यू कोनी छाप्या जाय रैया ? मासिक पत्रिकावा मे तो बरोबर (पतो–ठिकाणो) छप रैया है फेर अठै काई बात है ? सरू मे तौ विचारकण हाथ कोनी आया फेर विचारकणा रै सागै ई भावकण भी मिल गया।

सपादकगण घणा उदार हुवै। आज रै उदारीकरण रै बगत लिखारा रै कारण और भी उदार होय गया है। खासकर वानै डूप्लीकेट लेखका' री चित्या है। म्हारै भाई साहब (अवै स्व0) अेक दफा बतायौ के अेक कवि–सम्मेलन मे बै लेट पूग्या। बठै अेक कवि भाई साहब री कविता मा मुझ को अगार बना दे सुणा रैयो हो अर वाह–वाही भी लूट रैयो हो। कविता सुणाय र जद बी केयो के आ कविता म्हैं स्टूडेट लाइफ मे लिखी ही तद भाई साहब नै घणी रीस आई क्यूकै बारी आ कविता अखबार मे छप चुकी ही। भाई साहब नै कविता–पाठ सारू मच माथै बुलायौ गयौ तौ भाई साहब कैयो – म्हारी अेक कविता मा मुझ को अगार बना दे तौ म्हारो मितर सुणा ई दूक्यौ है म्हे दूजी कविता सुणा रेयो हूँ। लोगा खूब मजो लीनो। सायत इण सारू भी पतो नी छप रैयो है के क्यू डूप्लीकट री फजीयत कराई जावै। सपादक वगत रै मुजब ई चालै।

थे खुद ई विचार करौ कै डूप्लीकेट' कवि/लेखक दूजा री रचनावा खुद रै नाव सू छपवा'र आफत क्यू मोल लेसी ? सम्पादक भी वानै धर्मसकट' मे कोनी घालणो चावै। इसा गजवी कम है फेर भी सावचेती जरूरी है। इया डुप्लीक्टेट वीर चढती–पडती ~ मकाबलो भी करै है। पण रचना रै हेठै पतो नी होवण सू 'वीरा रा जल्दी पतो भी

नी लागै। सपादक होशियार घणा।

इया हेराफेरी रो इधकार मिनख रो मूल इधकार है। इलमी अर फिलमी दुनिया मे ई नी आखै कार्य क्षेत्रा मे इण इधकार रो प्रयोग करयो जावै। हालीवुड अर बालीवुड री खुरपी तौ कहाणिया गीता सवादा शीर्षका माथै सदाई चालती रैवै। पण आ खुरपी खबरदारी सू ई चालै नीतर अदालत त्यार है। सगळा खेमाअवतार कोनी। आजकाल तौ फिल्मा रा नाम जूनै फिल्मी गीता री ओळया सू धडाधड लिया जाय रैया हैं। किण गीत सू किसो शीर्षक लियो गयो हे – ओ रिसर्च रो विसय है। भगवान निर्मातावा–दिग्दर्शका नै शीर्ष–बुद्धि देवे।

होय सकै है कै चिटठी–पतरी सू परेसाण होयनै महिला–लेखकावा सपादका सू निवेदन कर'र नाव रै सागै पतो ना छपण री शर्त राखी हुवै। शर्त माथै म्है न्यारो व्यग्य लिख रैयो हूँ। महिलावा रै अनुरोध नै सम्पादका भी विचार करयौ होसी अर फेर न रहसी बास न बाजसी बशी री तर्ज माथै सैंग लिखारा रा पता ई काट दिया हुसी मतबळ कै अेक पथ दो काज री बात हुई। अबै थे जाणो थारो काम (का राम) जाणै। महिलावा भी राजी कै बेमतबळ प्रशसको रै कागदा रा जवाब देणा पडै। डाक कित्ती मूघी होयगी है। वारा घरवाळा/वाला भी खुश। आ बात जरूर है कै लुगाया रै नाव सू लिखण वाला जाबाजा नै फोडा पडया होसी। बै दोहथ्थड मारनै रोया होसी। बाकी लोगा (लेखका) रा भी पतो–ठिकाणो नी हुसी तो पाठक घणो तसियो भी कोनी करसी।

पतो–ठिकाणौ नी छापण सू सम्पादका नै फायदा घणा है। अखबार मे स्पेस (जागा) बचसी छापै रा खर्चा बचसी पण मानदेय रै बगत लेखक रो पतो तलाशणो पडसी। छपाई (पतै री) रो सागै ई पाठका री तकलीफ बधसी। लेखका नै जरूर राहत मिलसी तारीफ करण आळा कमती हुवै आलोचका री सख्या बेसी हुवै बै निदका सू बचसी। डाकघर नै जरूर नुकसान रैसी। उणा गणितज्ञा' ने भी अमूझणी आसी जिका रौ काम ओ देखणो है के अखबार मे किसी जाति रा कित्ता प्रतिशत लेखक छपै अर किसी जाति रा लेखक नी छपै अखबार आळै शहर रा किता लेखक छपै अर दूजै सहरा रा किता ? पतो–ठिकाणो नी छपण सू छेत्रीयता' माथै भी अकुश लागसी।

कुल मिला'र अखबारा मे लिखारा रा पता नी छपण सू लिखारा नै भी फायदा है। दूजै शहरा रा पाठक लेखका रै अठै डाइरेक्ट कोनी पूग सकै मेहमान नी बण सकै अर लेखक भी मेहमाना री चाहिजवाणा नै पूरा करण सारू उछळ–कूद सू भी बच सकै। फेर लेखक केई झझटा सू बच सकै अर खूटीताण'र सो सकै।

✿ ✿

गिनीज बुक सारू

सुण्यो है कै गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस' मे दुनिया भर री नोखी चीजा का वर्ल्ड रिकार्डस' री बाता नै ठाण मिलै। गजब री बात है कै म्हारै जिसो रिकार्ड तोड–भाग करणियो मिनख हालताई गिनीज बुक मे सामिल कोनी कर्यो गयो। ओ म्हारै सागै अन्याव है। लोग–बाग तो एक ई दिशा मे रिकार्ड भागै पण म्हैं तो मोकळे क्षेत्रा मे रिकार्ड तोडयो है। म्हनै खुद नै भी याद कोनी कै समझ (!) आवण सू लेय'र 65 बरसा ताई म्है कित्ता वर्ल्ड रिकार्ड तोडया है।

म्हारो पैदल चलण रो रिकार्ड ई म्हनै गिनीज बुक मे ठौर दिरा सकै है। 28 बरस री उमर मे म्है मुम्बई मे (तद बम्बई) अधेरी (पूर्व) से चाल'र पैदल ई चर्चगेट रै फ्लोरा फाऊँटेन ताईं पूग्यौ। पाछो जरूर लोकल ट्रेन मे आयो। इण भात 63 बरस री उमर मे जयपुर मे ओ टी एस (हरिश्चद्र माथुर प्रशासनिक प्रतिष्ठान) सू सुभाष चौक तक पैदल आयो अर कित्ती बार हवामहल रोड सू ठेसण (स्टेशन) पैदल गयो। औ कमती रिकार्ड कोनी। ईंया तो उदयपुर मे भी कित्ती दफा स्टेशन सू राजस्थान साहित्य अकादमी हिरणमगरी सेक्टर–चार ताईं पैदल गयो हूँ। पैदल जावण रौ रिकार्ड तो घणौ पुराणौ है। दिल्ली मे मोरी गेट सू इडिया गेट तक रोजीना दो महीना ताई पैदल घूमण नै जावतौ रैयो। कटरा (जम्मू) सू वैष्णव देवी ताईं पैदल तो लोग जावै ई है पण म्हैं आदिकुमारी ताईं पगोथिया सू गयो–आयो।

दिसम्बर महीना मे बेमार पडण रो भी म्हारो रिकार्ड है। लारलै साठ बरसा सू तो म्हनै याद है कै दिसम्बर महीना मे म्हैं मादो पडू ई चावै कोई कित्ती कोसिस कर लेवै। डाकदर भी जाणै है कै ओ दिसम्बर मे जरूर आसी बळसी ईं खातर जाणकार डाकदर भी पहला सू ई रुको बणा'र राखै। लाडेसर शरद (अबै घरनार तो रैयी ई कोनी) अक्टूबर सू ई त्यारी सरू कर देवै। जद सू म्हैं अेक नाटक लिख्यो है – बेमार होवण री इछा' (दे0 आधुनिक राजस्थानी रा तीन नाटक') तद सू बेसी बेमार रहवण लागग्यो हूँ। दिसम्बर री पहली तारीख सू ई घरवाळा इन्तजार करण लागै कै अबै पडयो बेमार अबै पडयो बेमार अर बै फल–फ्रूट आद रो इन्तजाम करण लाग जावै। डेट फिक्स तो कोनी पण बिचाळै दिसम्बर री घणी सभावना रैवै। च्यार दफा दिसम्बर मे म्हारा आप्रेशन होय चुक्या है। गडका भी दो दफा दिसम्बर मे ई म्हनै

काटयो। इण रो अेक फायदो का नुकसान हो गयो है कै पूरो साल मितर लोग पूछता ई रैवै कै अवै तवीयत किया है ? बेमारी सू उठण रै पछै म्हैं साहित्यकारा सू मिलता ई कै देवू – अवै तवीयत ठीक है। पण इग्यारा महीना ताई सागी जवाब देणो पडै।

कानाबाती (टेलीफोन) सू तो म्हैं अपनी जलम भौम डेरा इस्माईलखा (पाकिस्तान) सू अठै आवण रै बाद ई परिचित व्हैयो पण आ बात भी रिकार्ड करण जोगी है कै म्हैं 64 बरस री उमर ताई खुद टेलीफोन रा नम्बर नी लगाया औरा नै ई कह देतो कै नम्बर लगाय'र दीजो। आज रै बगत ओ कित्ती नोखी बात है के 64 बरसा ताई मिनख खुद फोन कोनी करै का कोनी कर सकै लारली बात माथै म्हू चुप हूँ।

सरकारी नौकरी मे जल्दी–जल्दी ट्रासफर हुवै हवै कालेज मे जल्दी तो कोनी हुवै पण पदोन्नति रै टेम जरूर व्है जावै। म्है 1961 मे लोक सेवा आयोग सू अपरूव होय'र डूगर कॉलेज बीकानेर मे लेक्चरर लाग्यो। इण सू पहला अस्थायी रूप सू डीडवाना कॉलेज मे हो। डूगर कालेज मे ई लेक्चरर सीनियर लेक्चरर अध्यक्ष हिन्दी विभाग सलेक्शन ग्रेड फेर उप–प्राचार्य ताई बण्यो। पाच महीना रो एक्सटैंशन फेर मिल्यौ। आ बात भी नोट करण जोगी है कै सरकारी कॉलेज मे भी 32–33 बरसा ताई एक जागा रैयो जाय सकै है। अेक दिन भी ट्रासफर होय'र दूजी जागा कोनी गयौ।

गिनीज बुक मे नेगेटिव–नकारात्मक रिकाडो से भी उल्लेख हुवणौं चाहिजै। 52 बरसा री साहित्य साधना रै बाद भी म्हनै हालताई राज्य का राष्ट्रीय स्तर रो कोई पुरस्कार कोनी मिल्यौ। जठै मिलण री उम्मीद हुवै बठै यार–लोग ई आडी आ जावै। उर्दू में शे'र है – इस घर को आग लग गई घर के चिराग से। इसा कोई छराळो कोनी मिल्यौ जको म्हनैं पुरस्कार दिरा सकै है। घरोघर देख चुक्यौ हूँ। गिनीज बुक मे इण रो भी उल्लेख हुवणो चाहिजै कै जठै घरोपो हुवै बठै पुरस्कार मिल ई कोनी सकै।

छेवट ओ कैवणो चावू कै म्हू गिनीज बुक सारू लूठो पात्र हूँ। म्हारै कनै सकारात्मक रिकार्ड तो है ई पण घणकरा नकारात्मक रिकार्ड है। जद आ बात रिकार्ड में आय सकै कै पिटसबर्ग मे दो हजार 49 मिनखा आर्केस्ट्रा मे हिस्सा लियो तद आ बात क्यू कोनी आ सकै है कै राजस्थानी रो अेक लिखारो जिन्दगाणी मे पाच हजार दफा न्यारा–न्यारा कामा मे हिस्सो लियो अर फेल हुयो। (अवै बो क्रिकेटर दाई प्रथम श्रेणी क्रिकेट सू नीं लेखण (?) सू सन्यास लेय रैयो है।)

वै पूजाघर मैं है . .

आपा रै महान् देस मे नेता वणता ई लोग जिकी आदत स्रौ सू पैला घालै वा है पूजा–पाठ करण री। भलाई जिन्दगी भर भगवान रो नाव नीं लियो हुवै पण नेता रै पद माथै आवता ई भगवान नै याद करण री एक्टिग' करण लागै अर आ एक्टिग' वडा–वडा एक्टरा नै मात देवण री हुवै। सायत नेतागीरी अर पूजा–पाठ मे घी–खीचडी रो मेळ है। नेतावा सारू पूजा–पाठ 'कम्पलसरी' है। भगवान अर धरम–नेम रै नाव माथै कुडण आळा मिनख भी नेता वणता ई आपरै घर मे फिलमा दाई अेक पूजाघर वणा लेवे। अेक अदद मूर्ति का वडीजू तसवीर धूप दीया अर दूजी चीजा ई मोसर माथै रख लेवै। अेक आसण विछायो जावै जठै नेताजी विराजै अर वाकायदा (वेकायदा) वठै वैठ'र थितियो गळो फाडतो रैवै। यीं वगत मिलण आळा मिनख कमती ई हुवै ई खातर वै कमती वगत मे ही पूजा–पाठ कर'र उठ आवै। कदै–कदै आ पूजापाठ नीं भी हुवै क्यूकै लक्ष्य तो हालताई परै ही है।

एम एल ए हुवता ही पूजा घर रो वेव ई पलटो खा जावै। जिया पण पायोडो मिनख डाक्टर नै जोवै विया नेताजी पूजा घर नै जोवै। पूजा–पाठ नियमित होय जावै और वठै टेम भी घणी लागण लागै। विया आ वात मोटा अफसरा माथै भी लागू हुवै। वे भी आ हावी राखै जिण सू हेठालै मिनखा रै वीचालै वा री भगति भावना' री चर्चा चालै। वै पूजा–पाठ रै कारण सू ही रिश्वत आदि रै मामले मे पातरियोडा रैवै। अफसरा रै घरै पूगण आळा री सख्या कम ही रैवै फेर भी जद वठै फोन करयो जावै तद वठै सू पडूतर आवै कै साहव पूजा कर रैया है। छुट्टी रै दिन तो वै आखा दिन ही पूजा–घर मे काडै क्यूकै जद ई फोन करयो जावै तो वठै सू वठोठ साथ अेक ही जवाव मिलै – साहव पूजा घर मे है। अफसर जनता सू कोनी डरै ई खातर वै मोकळी ताळ ताई पूजा घर मे रैणो अफोर्ड कर सकै।

जनता नै प्रभावित करणै मे धरम री खास भूमिका है। नेतावा रा धर्माचरण वडै वर्ग नै तो तुष्ट करै ही है दूजै वर्गां ने भी उदार धार्मिक रै रूप मे प्रभावित करै है। अैडा मिनख वेसी उदार' हुवण रो अभिनय करै है अर सै वर्गां अर सम्प्रदाया रै धार्मिक रीतिरिवाजा मे वारै सू खुल'र हिस्सा लेवै अर माय ई माय वै धमीडा लैवता रैवै।

पूजा घर नेतावा रा भोत वडा शरणस्थल' है। मिजमाना रो वडो हिस्सो तो

आ सुण'र रवाना हुय जावै कै वै अबार पूजा घर मे है थै घण्टा भर बाद आयजो। घण्टा भर पछै आ सुणन नै मिलै कै वै किणी समारोह मे गया परा। जे आप वा सू सम्बन्ध बणा लियो है अर अगद दाई वांरै ड्राइग रूप मे जम्योडा हो तद पूजा घर सू आवण आळी खुशबू आपरो कालजो ठण्डो करैली। सै नेतावा सू स्सै मिनख प्रभावित हुवै है। अफसर तो खाली गाव आळा ने ही प्रभावित करण री कोसिस करै है। अर आप बारी धार्मिक सहिष्णु वृति' रो बखान ज्यादा सू ज्यादा मिनखा मे आपो आप करण लागोला। ईं हथियार' रो प्रयोग सगळा नेता करै है। ईं सू सहरी का ग्रामीण। एक दफा म्है एक 'ऊचे अफसर' नै पूजा मे रत देख्यो। वै मई (विनीत) अर भगति–भाव सू भरित भगवान री पूजा कर रैया था – म्हैं बैनै बचपन सू जाणतो हो वो कट्टर नास्तिक हो अर ईं टेम ... म्हैं चमगूगे दाई बीनै देखतो ई रैयो। म्हारो सिर झुक्योडो हो बी म्हारी ओर देख्यो अर कैयो – आखा दिन जनता नै तो मूरख बणावा ही हा थोडा टेम भगवान नै ई अर बो मुळक्यो।

आप नै जे नेताजी सू मिळ र ही जाणो है तद थे टैक्सी माथै आवण री ना सोचो अर न ही आवण–जावण रो भाडो तय करिजो। टैक्सी नै तो आवता ई रवाना करणी चाहिजै भावै आपनै पगा ही क्यू नी चलणो पडै क्यू कै जे आपनै बठै राख्योडी कुरसिया माथै जागा मिलगी तो आप बडा पौरसी अर मुणिसाळ हो जे नेताजी रा घर आळा सामै आ जावै तद आप अगज (अजय) हो नींतर थे घण्टू ऊभा रैवो का गोता खावता रैवो कोई पूछण आळा कोनी। नेताजी रै रोब रो परिवेस्टन इत्तो बडो है कै आपरी बारी ही कोनी आवै आप बारै ई ऊभो रैवोला अर बीजा मिनख आवता–जावता रैवैला। माय सू आवण आळो आपनै हिकारत री निजरा सू देखेलो अर (आपरी सवाळया दीठ नै देख'र) कैवैलो – अबार वै पूजाघर मे है।

✿ ✿

म्हनैं सभापति वणाओ !

आज तो लाग रैयो हो कै काम वण जासी

आप सिरदार सोच रैया होस्यो कै म्हैं नौकरी री बावत बात कर रैयो हू का दफ्तर मे किणी काज नै पूरो करावण सारू बात कर रैयो हू, पण इसी बात कोनी। नौकरी तो मर खप'र किणी भात लागगी ही अर घणा पापड ई बेलण री जरूरत नीं पड़ी ही क्यूकै वीं वगत ताई चादी रा चम्मच लेयनै जलम लेवण वाळा मिनख नौकर्‌या सू नफरत करण लाग्या हा अर बीजी कोई परेसानी ई नीं ही   बाकी रैई दफ्तरा मे काम करावण री बात जिकी आपा रै बस री बात कोनी। हकीकत री दुनिया में मोटा काम करण री हिम्मत म्हारै जिसा अहदी कोनी कर सकै।

म्है काम री बात कर रैया हो। पैली अेक बात कैवणी है। म्हैं हिन्दी मे एम ए करी है इण वास्तै लेखक वणण रो म्हनैं जन्मजात हक है – आ बात म्हैं इवछळ रूप सू कैय सकू। नौकरी लागण रै बाद साहित्य–रचना रा कीटाणु कीं बेसी कळळ–हूकळ करण लाग्या हा। जणै ई म्हनैं ठा पडयो कै साहित्य मे सून क्यू वापरै है ? तद म्हैं जिती ताकत सू साहित्य सरोवर मे कूदयो विती ताकत सू भायला म्हनैं बारै काढ नाख्यो।

अेक दिन अचितै ख्याल आयो कै इत्ता लाम्बा साहित्यिक जीवन जीणै रै बाद अब म्हनैं सभावा मे सभापति री 'पोस्ट' मिलणी ही चाइजै। सभापति वणण मे फायदा ई फायदा है – अेक तो वीनै नूवा विचार देणा नीं पडै लारली बाता नै ई खुद रै लखण सू नूवैं ढगसर कैय सकै दूजै घणा बोलणों नी पडै क्यूकै ओ वाक्य वीरी मदद करै – म्हैं कैवणो तो खासो चावतो हो पण वगत री कमी रै कारण बस इतोक ई कैसू   इत्याद अर जे थे बोलण ने मर रैया हो तो अछेह बोल सको सभापति नै कुण टोक सकै ? आप रै पछै तो कोई बोलसी कोनी अर जे चाय बीजी रो इन्तजाम है तो लोगा रा कान प्याल्या री मधुर धुनि नै सुणण सारू अछोर वगत ताई हैराण रैसी। सभापति बणण मे एक लाभ ओ है कै भलेई लोग कित्ता चोखा बोलै पण फोटू अर नाव तो सभापति रो ई अखबार मे आवैला। बाकी लोगा रा नाव फिलमा रै अेक्स्ट्रा लोगा दाई कट होय जावैला। जे अखबार वाळा सू आपरी मितरता है तो फेर थारी पाचू घी मे है   ।

पण सभापति वणावण री वात दरकिनार किणी आपारै तथाकथित साहित्यिक जीवण रै बीस बरसा मे आपा नै खास वक्ता ई कोनी वणायो पण म्हैं ई अडीखभ हूं। अडी–भिडी मे ई अडाकी वण्यो रैवू। म्हैं ई सभावा मे जावण लाग्यो जिण मे अेक–दो वक्ता अर दरी उठावण वाळा मौजूद रैंवता। हौळे–हौळे आपा नै 'खास वक्ता' रो 'प्रोमोशन' मिळग्यो अर ओ सिलसिलो लाम्बै टेम ताई चाल्यो पण आपणो लक्ष्य तो अर्जुन दाई सभापति रो आसण हो। दो चार वक्तावा वाली सभावा मे ई कोई 'वरिस्ठ साहित्यकार' आ पूगतो तो म्हारै दिल रै अरमा आसुवा मे तो नीं हिवडै मे जरूर वैय जावता। दोचार दफा अैडी वात ई होई कै किणी छोटी गोस्ठी में जावता थका म्हनैं दो चार 'भारी भरकम' साहित्यकार दीसग्या अर म्हैं वानै मोटी गोठ री याद दिराय'र वहीर कर्‌यो पण अफाला खाणो ई रैयो क्यूकै वीं छोटी गोठ मे ई म्हारै सू मोटा साहित्यकार मौजूद हा अर म्हनैं सभापति वणण रो मौको नीं मिल्यो।

अेक दफा इया होयो कै छोटी गोस्ठी मे सयोजक रै अलावा सिरफ चार जणा हा। म्हैं मन मे सभापति रै रूप मे बोलण सारू त्यारी सरू कर दी पण सयोजक इण पद सारू किणी गैर–साहित्यिक आदमी रो नाव लियो तो म्हनै भींत रो सायरो लेणो पडयो। आखा दिन अफसोस रैयो। इसो अरडो नूवै सभापतिया नै मिलै ई है।

थोडे दिना बाद ठा पडयो कै सभापति रै अलावा 'खास मिजमान' रो पद ओर 'क्रिएट' होयो है। म्हैं घणो आरतवान होयो अर छोटी–मोटी सै सभावा मे जावणो सरू कर्‌यौ पण ठा नीं आयोजका रो ध्यान म्हारै जिसै नेम–धरम वाळै स्रोता माथै जावतो ई नीं हो। आळूधो हिवडो लेय'र म्हैं सभावा में बैठयो रैवतो। जाणै म्हारै सानिध्य सू ई आयोजका नै 'अेलर्जी' ही। म्हनैं दूजी सस्थावा माथै ई रीस आवती कै एकाध पुरस्कार ही दे बाळती तो सभापति रो पद तो सुरक्षित होय जावतो। पण नीं तो आपा नै पुरस्कार मिलण री गुजाइस ही अर न ई सभापति रो पद मिळण री।

खासा वगत इया ही गमा दियो। अेक दिन फेर कीं उम्मीद वणी। होयो औ कै कारड मे छप्यो सभापति टेमसर नीं आयो एक घटा ताई इन्तजार रै पछै म्हैं सयोजकजी सू कैयो – थे कारवाही सरू करो घणी जेज होयगी है। ठड वध रैई है आ कैय'र म्हैं सभापति रै आसण रै बिल्कुल नजदीक आय'र वैठग्यो। सयोजकजी पैला म्हारै कानी सागी उपेक्षा सू देख्यो जिसी उपेक्षा सू फेरा रै बाद घराती बरात्या नै देखै फेर वीं सगी–साथ्या सू सलाह करी तो म्हनैं कीं उमेद वणी। आज मैदान साफ हो घणकरा लेखक अर स्रोता उम्र अर लेखण मे म्हारै सू जूनियर हा। दिल धडकण लाग्यो परेवो चुवण लाग्यो आख्या चौड होयगी। जीभोटो सयोजक हालताई मितरा सू चतळ कर रैयो हो अर म्हारी धडकण 'राजधानी एक्सप्रेस' दाई तापडण कर रैई ही। अेक अेक मिट भारी लाग रैयो हो। चोखो बगड फसणो होयो। म्हैं बैडाई सू सयोजकजी ... फेद खुदरी घडी कानी। वेगति रै वगत घडी कानी

देखणो ठीक रैवै। केई लोग तो आखो दिन ई घडी री सूइया गिण–गिण'र काढ लेवै। म्हैं फर सयोजक नै इसारो कर्‌यो अर सभापति रै आसण कानी थोडो और सरक्यो। सयोजक ऊभा होय र आज रै विसय माथै बोलणो सरू करयो म्हनैं बडी रीस आई। ईयैनै म्हारै सभापतित्व री फिकर ई कोनी। ओ मुणिसाळ पैली सभापति रो नाव प्रस्तावित करतो फेर विसय माथै निवैडो करतो पण ईयैनै तो जीभोटा कर टेम खराब करणो हो। वो आपरै भासण री गहराई वीरी लम्बाई सू नाप रैया हो। म्हैं रोवण वाळो ही हो कै वो म्हारै कानी देख'र बोल्यो — म्हैं आज री अध्यक्षता सारू डॉ - ठीक वी टेम स्रोता बोल्या -- आज रा सभापति पधार गया है अर म्हैं सभापति बणण सू वाल–वाल बच्यो आपा री फौरी किस्मत मे दूजा खातर हथाळी बजाणी लिखी है।

आजकाल अेक और पोस्ट बणी है विसिस्ट मिजमान। आ सभापति अर खास मिजमान' सू न्यारी पोस्ट है। पण आपारी बारी तो आवणी ई नीं। आपा इत्ता करम प्रसाद नी हा। कित्ती दफा म्हैं सभापति रै आसण रै बिल्कुल नजदीक बैठ'र झूठा साचा लिखतो रैयो हू कै सयोजक रो ध्यान म्हारै पासी जासी पण वो करतबी तो म्हारै अस्तित्व नै ई नकार गयो।

केई दफा सभा सरू होवण सू पैली ई सयोजकीय टीम सू म्हनैं बडी गलतफहमी होई है। सगळा जणा बैठया है सिरफ सयोजकजी ऊभा है अर केय रैया है — आज री सभा री अध्यक्षता सारू म्हैं आमन्त्रित कर रैयो हू, हास्य–व्यग्य रा चावा–ठावा लिखारा डॉ हू गळो साफ कर'र उठण री कोसस करतो तो वो किणी और डाक्टर' रो नाव लेय लेवतो। म्हैं सरूपोत रो डाक्टर' हू, अबै तो कुटीर उद्योग री किरपा सू घणा ई होयग्या है। सयोजक नै नाव पैली बोलणो चाइजै इसी अळूझयोडी भूमिका री काई जरूत ही ? ई बगत म्हारी तो डेळी ई काम कोनी करै?

खैर आज तो लाग ई रैयो हो कै काम बण जासी।

दिनूगै 9 बजी सोय'र उठयो तो दो जणा पधारया अर सिझया री सभा मे आवण रो नूतो दियो। हालताई म्हैं सभापति पद लेण मे पख उखळ चुक्यो हो अर केई महीणा सू किणी गोष्ठी मे नी गयो हो। म्हैं पूछयो — सभापति कुण होसी ? एक बघैल साहित्यकार बोल्यो — कार्यक्रम एकदम बण्यो है इण खातर नी सभापति नै तै कर सक्या हा अर नी ई कारड छपवा सक्या हा। सोच्यो है कै जिसका साहित्यकार टेम सर पूग जासी वानै सभापति बणा देसा। हिवडो गा उठयो सभापति बणण सारू कित्ती तगड करी है ? टेमसर पूगतो रैयो हू पण की न कीं ठाठी आवती ई रैई।

सिझया नै साढी चार बजी ई म्हैं सभास्थल माथै पूगग्यो। लोग कनाता अर बैनर लगा रैया हा। च्यारूमेर देख्यो सभापति पद लायक कोई निजर नीं आयो अेकलो म्हैं ई उम्मीदवार हो। ठावो होयो। आज करमठोक नी रैवूलो। सयोजक आय'र कैयो — आपनै थोडो इन्तजार करणो पडसी।

देखणो ठीक रैवै। केई लोग तो आखो दिन ई घडी री
म्है फेर सयोजक नै इसारो कर्यो अर सभापति रै आ
सयोजक ऊभा होय र आज रै विसय माथै बोलणो सर
ईयैनै म्हारै सभापतित्व री फिकर ई कोनी। ओ मु
प्रस्तावित करतो फेर विसय माथै निवैडो करतो पण ई
करणो हो। वो आपरै भासण री गहराई वीरी लम्बाई र
ही हो कै वो म्हारै कानी देख'र बोल्यो -- म्हैं आज री
वी टेम स्रोता बोल्या -- आज रा सभापति पधार गया
बाल--बाल बच्यो आपा री फौरी किस्मत मे दूजा खा

आजकाल अेक और पोस्ट बणी है विसिस्ट
खास मिजमान' सू न्यारी पोस्ट है। पण आपारी बारी
करम प्रसाद नी हा। कित्ती दफा म्हैं सभापति रै आसण
साचा लिखता रेयो हू कै सयोजक रो ध्यान म्हारै पासी
अस्तित्व नै ई नकार गयो।

केई दफा सभा सरू होवण सू पैली ई र
गलतफहमी होई है। सगळा जणा बैठ्या है सिरफ सर
है -- आज री सभा री अध्यक्षता सारू म्हैं आमत्रित
चावा--ठावा लिखारा डॉ हू गळो साफ कर'र उठण
और डाक्टर' रो नाव लेय लेवतो। म्हैं सरूपोत रो 'डाव
री किरपा सू घणा ई होयग्या है। सयोजक नै ना
अळूझयोडी भूमिका री काई जरूत ही ? ई बगत म्हार

खैर आज तो लाग ई रैयो हो कै काम बण

दिनूगै 9 बजी सोय र उठयो तो दो जणा प
आवण रो नूतो दियो। हालताई म्हैं सभापति पद लेण मे
महीणा सू किणी गाष्ठी मे नीं गयो हो। म्हैं पूछयो -- स
साहित्यकार बोल्यो -- कार्यक्रम एकदम बण्यो है इण
सक्या हा अर नी ई कारड छपवा सक्या हा। सोच्यो
सर पूग जासी वानै सभापति बणा देसा। हियडो गा
कित्ती तगड करी है ? टेमसर पूगतो रेयो हू पण की

सिझया नै साढी चार बजी ई म्हैं सभास्थल
बैनर लगा रैया हा। च्यारूमेर देख्यो सभापति पद लायव
म्हैं ई उम्मीदवार हो। ठावो होयो। आज करमठोक नी
-- आपनै थोडो इन्तजार करणो पडसी।

अबै खुद–व–खुद लिखणो दोरो लागै तद म्है वानै घरेलू उत्पादका कनै भेज देतो। फेर भी कई छात्रा नै पी–एच डी कराई ई है।

पी–एच डी री मौखिकी (वाइवा) भी हुवै। कई शोधार्थी तो उस्तादा रा उस्ताद हुवै। जाणे ई है कै आपरी इज्जत सारू गुरुजी म्हनै पी–एच डी डिग्री दिरासी ईज। दूजा शोध निर्देशक तो शोधार्थी कानी सू विशेपज्ञा रै सागै–सागै रिसर्च अनुभाग रै कर्मचारिया नै भी जीमण जूठण प्रेसेट इत्याद दिरावता। लेडी कर्मचारिया नै साडियॉ बीजी मिलती पण म्हैं कदै इण चक्करा मे कोनी पडयौ। नतीजो भी साम्है हो – म्हारो टी ए डी ए वेगा पास नी व्हैता ओब्जेक्शन लागता अर पीसा लेवण सारू अकाउटस विभाग रा फोडा पडता अर दूजा रिसर्च गाइड नै पीसा बठै कमरे मे ही का अकाउट विभाग मे जावते ई मिल जाता। यगत रै सागै चालणौ श्रेष्ठ लोगा री निसाणी है म्है तो यगत सू पिछडयोडौ वळू।

फेर भी दोरो–सोरो पी–एच डी री डिग्री दिरा देवतो। युनिवर्सिटी मे मौखिकी (वाइवा) रै पच्छै शोधार्थी इण भात गायव हो जावता जिण भॉंत केई वक्ता नै देख'र श्रोता गायव होय जावै। वाइवा रै बाद शोधार्थिया नै तलाशणो वितो मुश्किल होय जावै जितो वडै अस्पताला मे चाह्यो डाकदर नै। थावस राखणौ पडै कै होली–दीवाली तो आवैलो ई। पण इतरा मॉंहै यो नौकरी लाग जावै अर सदा सारू गायब होय जावै। विज्ञापन भी देवै तो निर्देशक गुरु रो नाव देवणौ भूल जावै।

सगळा इसा नी हुवै। वारा घर आळा नै कदै–कदै आवण रो मौको मिल जावै। छोर्‌या रा वापू तो दुखी होय र आवै। अेक छोरी री मा आयनै रीस बलण लागी –

थे चोखी पी–एच डी करा नाखी म्हारी छोरी नै। छोरा आळा सादी खातर आवै तो वा कहवै म्हू तो पी–एच डी डिग्री धारी सू ई शादी करस्यू। आपा रै समाज मे इता पढया लिख्या छोरा कोनी मिलै अवै म्हू काई करूँ। थे चोखी आफत करा दी है म्हैं साची ई आफत मे चढग्यौ।

दूजी छोरी री मा आयनै ओळभो दियो – गुरुजी म्हारी छोरी नै समझाओ। आ पीएच डी काई करी है खुद नै लाटसाहव मान रैयी है। कल छोरै आळा आया तो छोरै सू पूछण लागगी – म्हैं अग्रेजी मे कमजोर हूँ। कमजोर री हिन्दी काई हुवै ? गुरुजी छोरो पीएच डी हो पण इण वाक्य मे कमजोर री हिन्दी कोनी वता सक्यौ। अवै म्हारी छोरी बी सू शादी करण सारू त्यार नीं है। थे ई समझाओ आपरी बात मानै।

म्हैं सोच्यो कै पी एच डी करावण सू तो मैरिज ब्यूरो खोलणो सोरो है। अेक छोरी तो चावै मैडिकल डाक्टर रो रिश्तो भी तोड चुकी है। छोरा भी कमती नी है। अेक तो पी–एच डी री उपाधि मिलण रै पच्छै अग्रेजीदा वण गयो है हालाकि बी री अग्रेजी जे अग्रेज 1947 सू पैली सुणता तो देस नै छोड जावता परा। इता फोडा ई नीं पडता।

प्रभाव पी-एच.डी. रो

हिन्दी मे पीएचडी (डाक्टरेट) करणौ घणौ सोरो है इण सारू म्हैं भी घणा डाक्टर' बणाया अर वानै नौकरी माथै लगावण सारू भी त्यार करया। पण घणकरा री हिन्दी मे सुधार कोनी आयौ। म्हारा कुछ शोधार्थी तो ठीक--ठाक रैया पण क्युइक री पी--एच डी उपाधि आज भी म्हारै जी रो जजाळ वण्योडी है -- वा रो स्तर ई इसो है।

पण सगळा डाक्टरा' माथै पी--एच डी रो ऊडो नशो है। अेक जणा तो आज भी पीएचडी नै पी--एच डी कहवै। आज म्है इणा बाबत (नावा नै छोड'र) साच लिखूलो -- साचरै अलावा की नी लिखूलो। देस रै डाक्टरा (पी--एच डी) मे 90 प्रतिशत डाक्टर' हिन्दी रा है। इण सारू हर घर मे काम' होय रैयो है। थोक रै भाव सू थीसिसा त्यार होय रैयी है। विश्वविधालय रिटायर्ड शोध निर्देशका रा ज्ञान अर अणभव' रिटायर सामझ र वानै शोध निर्देशका रै रूप मे मान्यता खतम कर चुक्या है जिण सू बाकी लोगा रै घर कुटीर उद्योग ढगसर चाल सकै।

पी--एच डी रो विषय अप्रूव' व्हैते ई शोधार्थी रो रग--ढग बदल जावै। वो खुद नै सुपीरियर समझण लागै अर बाकी ने टटपूजिया। जद विषय री सरूआत ई इसी हुवै तद पी--एच डी मिलण रै पच्छै काई होसी इण बात री कल्पना थे आपैई कर सकौ हो। पी--एच डी करणवाळा शोधार्थी विनम्र अर आत्मीय निजर आवै है कठै भी देखाऊ शिष्य नी लागै। वी बगत चढती-- पढती मे काम भी आवै अर अवचळ रह'र घर रा सगळा काम बीजा भी करै -- घर रो अेक अपणायत आळो सदस्य वण जावै। गुरु रै अजपौ नै दूर करण सारू वो प्राण--पण सू लाग्यौ रैवै। वो आपरी भापा रहण--सहण इत्याद मे भी क्रातिकारी वदलाव लावण री कोसिस करै। अेक छात्र म्हनै थीसिस रा अेक अध्याय दिखावण नै लायौ। भापा घणी ओपती अर सुगड ही।

ओ अध्याय आप खुद लिख्यौ ? म्है पूछ्यौ।

वा थोडो घवरायौ -- लिख्यौ तो म्हैं खुद हो पण इण रो करप्शन' वापू करयौ हौ। वो करेक्शन' नै करप्शन' कह रैयो हो। अग्रेजी रा शब्द बोलण मे आवणा ई चाईजै।

म्हैं जद पी--एच डी करणिया नै डॉट र ढगसर लिखण सारू कहतो तो वै कैंवता कै अेम अे ताई वा पढाई तो पीसा देय'र प्रश्न मगा'र करी है। रट'र लिख्यो है

अबै खुद-ब-खुद लिखणो दोरो लागै तद म्है वानै घरेलू उत्पादका कनै भेज देतो। फेर भी कई छात्रा नै पी-एच.डी. कराई ई है।

पी-एच.डी. री मौखिकी (वाइवा) भी हुवै। कई शोधार्थी तो उस्तादा रा उस्ताद हुवै। जाणे ई है कै आपरी इज्जत सारू गुरुजी म्हनै पी-एच.डी. डिग्री दिरासी ईज। दूजा शोध निर्देशक तो शोधार्थी कानी सू विशेषज्ञा रै सागै-सागै रिसर्च अनुभाग रै कर्मचारिया नै भी जीमण जूठण प्रेसेट इत्याद दिरावता। लेडी कर्मचारिया नै साडियॉ बीजी मिलती पण म्हैं कदै इण चक्करा में कोनी पडयी। नतीजो भी साम्है हो -- म्हारो टी.ए. डी.ए. वेगा पास नी व्हैता ओब्जेक्शन लागता अर पीसा लेवण सारू अकाउटस विभाग रा फोडा पडता अर दूजा रिसर्च गाइड नै पीसा बठै कमरे मे ही का अकाउट विभाग मे जावते ई मिल जाता। वगत रै सागै चालणो श्रेष्ठ लोगा री निसाणी है म्हैं तो वगत सू पिछडयोडो वळू।

फेर भी दोरो-सोरो पी-एच.डी. री डिग्री दिरा देवतो। युनिवर्सिटी मे मौखिकी (वाइवा) रै पच्छै शोधार्थी इण भात गायब हो जावता जिण भॉंत केई वक्ता नै देख'र श्रोता गायव होय जावै। वाइवा रै बाद शोधार्थिया नै तलाशणो वितो मुश्किल होय जावै जितो वडै अस्पताला मे चाह्‌यो डाकदर नै। थावस राखणो पडै कै होली-दीवाली तो आवैलो ई। पण इतरा मॉंहै वो नौकरी लाग जावै अर सदा सारू गायब होय जावै। विज्ञापन भी देवै तो निर्देशक गुरु रो नाव देवणौ भूल जावै।

सगळा इसा नी हुवै। वारा घर आळा नै कदै-कदै आवण रो मौको मिल जावै। छोर्‌या रा वापू तो दुखी होय र आवै। अेक छोरी री मा आयनै रीस बलण लागी --

थे चोखी पी-एच.डी. करा नाखी म्हारी छोरी नै। छोरा आळा सादी खातर आवै तो वा कहवै म्हू तो पी-एच.डी. डिग्री धारी सू ई शादी करस्यू। आपा रै समाज मे इता पढया लिख्या छोरा कोनी मिलै अबै म्हू काई करूॅ। थे चोखी आफत करा दी है म्हैं साची ई आफत मे चढग्यौ।

दूजी छोरी री मा आयनै ओळभो दियो -- गुरुजी म्हारी छोरी नै समझाओ। आ पीएच.डी. काई करी है खुद नै लाटसाहब मान रैयी है। कल छोरै आळा आया तो छोरै सू पूछण लागगी -- म्हैं अग्रेजी मे कमजोर हूॅं। कमजोर री हिन्दी काई हुवै ? गुरुजी छोरो पीएच. डी. हो पण इण वाक्य मे कमजोर री हिन्दी कोनी बता सक्यौ। अबै म्हारी छोरी बीं सू शादी करण सारू त्यार नी है। थे ई समझाओ आपरी बात मानै।

म्हैं सोच्यो कै पी. एच. डी. करावण सू तो 'मैरिज ब्यूरो' खोलणो सोरो है। अेक छोरी तो चावै मैडिकल डाक्टर रो रिश्तो भी तोड चुकी है। छोरा भी कमती नी है। अेक तो पी-एच. डी. री उपाधि मिलण रै पच्छै अग्रेजीदा बण गयो है हालाकि बी री अग्रेजी जे अग्रेज 1947 सू पैली सुणता तो देस नै छोड जावता परा। इता फोडा ई नीं पडता।

बोर रस री शास्त्रीय व्याख्या

भरत मुनि आपरै नाटय शास्त्र मे आठ रसा रौ वर्णन करयौ है। नवैं रस – शात रौ वर्णन कोनी करयौ। बाद रै आचार्यां वात्सल्य अर भक्ति रस नै भी इण पेटै शामिल कर्यौ अर रसा री सख्या इग्यारह तक पूगा दी। फेर भी अेक रस री चर्चा कोनी कर सक्या – वो है बोर रस – आज रौ सर्वाधिक चर्चित रस।

बोर' अग्रेजी भाषा रो शब्द है जिण रो अर्थ है ऊब खिन्नता परेसाणी इत्याद। ओ शब्द भारतीय वातावरण रै अनुकूल है। इण शब्द रै प्रयोग सू पहला ई इण री साकेतिक अभिव्यक्ति हर कोई करता हा बी रा हाव–भाव बोरियत' नै प्रकट कर देवता हा पण अवै तो इण री अभिधात्मक अभिव्यक्ति हुवण लागगी है। बोर–बोर' कहनै श्रोता–दर्शक आपरै भावा नै साफ तौर सू प्रकट करण लाग्गया है। सूफी साधक जिणभात परमतत्व मे लीन होय र हाल' री अवस्था मे आय जावै उणभात श्रोता भी बोर–बोर कहवण लागै (आ तो साधारणीकरण री थिति है) फेर बै बोर रस मे लीन होय'र रस रो परमानद लेवै। इयै नै ब्रह्मानद सहोदर' भी कैयो गयौ है।

रस-सामग्री

भरत मुनि रस री निष्पति' सारू विभाव अनुभाव व्यभिचारिभाव (सचारी भाव) अर स्थायीभाव नै जरूरी समझै। इणा रै बिगर रस ई पैदा कोनी होय सकै। बोर–रस रै सदर्भ मे आ सामग्री इण भात है –

(क) स्थायी भाव – बोरियत (अमूझणौ)।

(ख) विभाव (1) आलम्बन – वक्ता उपदेशक आद।
आश्रय – श्रोता दर्शक पाठक।
(2) उद्दीपन – नीरस वातावरण लाम्बा भाषण
माईक री खराबी सभा मे शोर।

(ग) अनुभाव – बोर बोर रौ शोर चिल्लाणौ जूतो रगडणौ।

(घ) सचारी भाव – आलस्य आवेग अमर्ष निद्रा इत्याद।

रस सामग्री माथै विगतवार लिख्यौ जाय रैयौ है।

(क) स्थायी भाव – इयै नै कोई भी विरुद्ध–अविरुद्ध भाव लुको कोनी सकै। बोरियत स्थायीभाव आपरै मूडै हाव–भाव चेष्टावा सैंग यू झलकण लाग जावै। ओ

अेक दिन बो आय'र पूछण लागौ – आजकाल सिनेमा मे स्टूडेंटस नै कनसेशन मिलै काई ? म्हैं फिलमो रै पात्रा दाई कैवण आळो हो कै – म्है कुछ समझयो नहीं फेर समझ गयो कै ओ कनसेशन' कैवणो चावै। फेर वो जदैई आवतो खोटी अंग्रेजी जरूर बोलतो।

अेक शोधार्थी धीमी गति रै समाचारा दाँई बात करतो मौखिकी तांई वो इसी रगत मे रैयो पण पी–एच.डी डिग्री मिलण री उम्मीद रै सागै ओ किरणाळो होय गयो अर राजधानी एक्सप्रेस' दाई तेज अर जोर से बोलण लाग्गयौ। गलै मे जिया लाउडस्पीकर फिट होय गयौ होवै।

अेक शोधार्थी पी–एच.डी री खुशी मे चार सौ री नौकरी नै लात मार दी। बीरो बापू आय'र म्हारै कनै कूकियौ – निकमो बैठण सू चार सौ रिपिया तो लावतो हो अबै म्है पी–एच.डी नै चाटूँ काई ? अर वो रीसा बळतो गयो परो। म्हैं बी शोधार्थी ने समझायौ भी हो कै पी–एच.डी री डिग्री नौकरी रो प्रमाण–पत्र कोनी। कई पापड़ बेलणा पडै पण बी म्हारी सलाह बिया ई कोनी मानी जिया आज रा टाबर माईता री सलाह कोनी मानै।

म्है सोच ई रैयो थो कै रिटायरमेंट रै पच्छै पी–एच.डी नी कराऊलो पण विश्वविद्यालय पैली ई ओ नियम बणा दियो कै रिटायर्ड प्रोफैसरा रा अनुभव व ज्ञान भी रिटायर होय जावै।

बोर रस री शास्त्रीय व्याख्या

भरत मुनि आपरै 'नाटय शास्त्र' मे आठ रसा रौ वर्णन करयौ है। नवैं रस – शात रौ वर्णन कोनी करयौ। बाद रै आचार्यां वात्सल्य अर भक्ति रस नै भी इण पेटै शामिल कर्यौ अर रसा री सख्या इग्यारह तक पूगा दी। फेर भी अेक रस री चर्चा कोनी कर सक्या – बो है बोर रस – आज रौ सर्वाधिक चर्चित रस।

'बोर' अग्रेजी भाषा रो शब्द है जिण रो अर्थ है ऊब खिन्नता परेसाणी इत्याद। ओ शब्द भारतीय वातावरण रै अनुकूल है। इण शब्द रै प्रयोग सू पहला ई इण री साकेतिक अभिव्यक्ति हर कोई करता हा बी रा हाव–भाव 'बोरियत' नै प्रकट कर देवता हा पण अबै तो इण री अभिधात्मक अभिव्यक्ति हुवण लागगी है। 'बोर–बोर' कहनै श्रोता–दर्शक आपरै भावा नै साफ तौर सू प्रकट करण लाग्गया है। सूफी साधक जिणभात 'परमतत्व' मे लीन होय'र 'हाल' री अवस्था मे आय जावै उणभात श्रोता भी *बोर–बोर कहवण लागै (आ तो साधारणीकरण री थिति है)* फेर बै *बोर रस मे लीन* होय'र रस रो परमानद लेवै। इयै नै 'ब्रह्मानद सहोदर' भी कैयो गयौ है।

रस-सामग्री

भरत मुनि रस री 'निष्पति' सारू विभाव अनुभाव व्यभिचारिभाव (सचारी भाव) अर स्थायीभाव नै जरूरी समझै। इणा रै बिगर रस ई पैदा कोनी होय सकै। बोर–रस रै सदर्भ मे आ सामग्री इण भात है –

(क) स्थायी भाव – बोरियत (अमूझणौ)।

(ख) विभाव (1) आलम्बन – वक्ता उपदेशक आद।
आश्रय – श्रोता दर्शक पाठक।
(2) उद्दीपन – नीरस वातावरण लाम्बा भाषण
माईक री खराबी सभा मे शोर।

(ग) अनुभाव – बोर बोर रौ शोर चिल्लाणौ जूतो रगडणौ।

(घ) सचारी भाव – आलस्य आवेग अमर्ष निद्रा इत्याद।

रस सामग्री माथै विगतवार लिख्यौ जाय रैयौ है।

(क) स्थायी भाव – इयै नै कोई भी विरुद्ध–अविरुद्ध भाव लुको कोनी सकै। बोरियत स्थायीभाव आपरै मूडै हाव–भाव चेष्टावा सैंग यू झलकण लाग जावै। ओ

भाव हरेक मे उण भात लुक्योडौ रैवै जिणभात माटी मे गंध। मौकै माथै औ व्यक्त होय जावै।

(ख) विभाव – आ स्थायीभाव रा कारण हुवै। आलम्बन तो प्रभावित करै अर आश्रय प्रभावित हुवै। जिया वक्ता आलम्बन है तो श्रोता/दर्शक आश्रय है। बोर रस री सृष्टि अर वृष्टि मे आलम्बना री कोई कमी नी है। लाम्बा भाषणकर्ता नीरस बोलणिया/उपदेशक धीमी गति रा समाचार पढणिया ज्यो कवि अध्यापक इत्याद रै रस' रो रसास्वादन सामूहिक रूप सू कर्‌यौ जावै। व्यक्तिगत रस सू भी बोर रस री सृष्टि/वृष्टि करावण आळा मे आत्म–प्रशसक मिनख रिटायर्ड कर्मचारी थोडै बगत तक मौन व्रत राखणियौ वृद्धजन सम्मान पावणियौ इत्याद घणा लोग है। बानगी –

म्है अखिल भारतीय स्तर रो विद्वान हूँ। का

जद म्हैं पुणै मे हो तद बठै मिलिट्री आळा रै साथै शूटिग – स्विमिग करतौ हो जद शिमला/मसूरी मे हो तद स्केटिग रौ अभ्यास करतौ हो मुम्बई में तो हीरो–हीरोइना रै सागै टेम रौ पतो ई नी चालतौ हौ पण अठै म्है बोर होय गयौ हूँ। पाछौ न्यूयार्क जावणौ चावू इत्याद।

इण रस मे बापडै आश्रय री आफत है। बो हर तरै सू परेशान होय जावै। भाजणौ चावै पण आलम्बन बी नै झाल'र आपरी बात सुणातौ ई जावै। अेक दफा अेक सज्जन' म्हनैं आपरौ आलेख फोन माथै सुणावणौ सरु कर्‌यौ। आधा घटा ताई सुणण रै बाद म्हैं परेशान होय गयौ कान–हाथ दर्द करण लाग्गया। तद म्हारै बेटे फोन झाळ र पत्रवाचक सू कैयौ – अकल पापा तो बेहोश होय गया है म्हैं आप रौ आलेख सुण रैयो हूँ। पण बो अडकीलो भी आलेख सुणावतौ रैयौ।

डोकरा रै साम्हे भी सुणणवाळा (आश्रय) टिक नी सकै। वा री स्पीच (सस्मरण अणभव आपरी गतिविधिया) कदैई मुकै ई कोनी।

उद्‌दीपन विभाव मे आलम्बन री न्यारी–न्यारी चेष्टावा बी रो चींपियौ बणणौ नीरस वातावरण आत्म–प्रशसक डोकरा रो भेळो होवणौ इत्याद घणी बाता है जकी इण विभाव रौ काम करै है। ज्यादा टेम रौ लगणौ भी उद्‌दीपन रौ काम करै।

(ग) अनुभाव – लारै सू आवण आळा भाव अनुभाव कहीजै। आ केई तरै रा हुवै –

1 कायिक – हिवडै री बात काया री चेष्टावा सू प्रगट होय जावै। सीटिया जूता री रगड अधबीच मे तालिया इत्याद इसा अनुभाव है।
2 वाचिक – वचना रा प्रयोग जिया बोर–बोर बद करो बैठ जावौ इत्याद इसा अनुभाव है।
3 मानसिक – मन रौ तनाव बोरियत मे मूडै माथै आय जावै।

4 आहार्य – रूमाल टोपी आद उछालण रौ काम भी करयौ जावै। जूता भी पटक्या जाय सकै है।

5 सात्विक – इण अनुभाव री सागोपाग प्रभाव श्रोता/दर्शक माथै देख्यौ जाय सकै है। परेशानी सू जड होणौ (स्तभ) पसीनौ छूटणौ (स्वेद) रू–रू ऊभौ होवणौ (रोमाच) गळगळियो होणौ (स्वरभग) कापणो पीलौ पड़णौ प्रलय (मूर्छा) इत्याद थितिया सभावा मे निजर आ ई जावै। अठै विगतवार लिखणौ मुश्किल है।

(घ) सचारी–भाव – अै भाव सदीव स्थायी भावा मे आवता–जावता निजर आवै घणी ताल ताई टिकै कोनी। इणा री सख्या तैंतीस मानीजी है। अठै पूरौ विवरण देणौ सभव नी है। दो–चार री बानगी काफी है –

1 चिता–श्रोतावा नै इण बात री चित्या हुवै कै वै अठै बोर हुवण नै क्यू आया है। अठै आय'र टेम ई खराब कर्‌यौ है।

2 आलस्य – थोडी देर बाद ई बानै आलस्य आवरित कर लेवै वै उबास्यो लेवण लागै। केई बार मूडै सू हाय बोय' भी निकलण लागै।

3 विषाद – बानै विषाद घेर लेवै कै इणी टेम होवण आळी दूजी मीटिग मे क्यू नी गयौ परौ।

4 औत्सुक्य – आलम्बन रै पूगण ताई श्रोतावा रौ औत्सुक्य बण्यौ रैवै फर तेजी सू उतरण लागै।

5 जडता – इन्तजार करणै सू भी जडता आवै अर भाषण सुणणै रै बाद भी।

6 चपलता – केई श्रोतावा मे जडता री जागा चपलता रा दीदार हुवै जिया शोर करणौ जोर–जोर सू बतळ करणी आवण–जावण री क्रियावा करणी आद।

7 निद्रा – घणकरा श्रोता सोवण मे ई आपरौ कल्याण समझै।

8 मरण – सभा रौ माहौल देख'र वै सोचै (खुद वास्तै) – सापुरूषा रा जीवणा थोड़ा ही भल्लाह।

इण आलेख नै भण'र आप भी बोर रस' रौ आस्वादन' कर लियौ हुसी।

भ्रष्टाचार, पक्को इरादो अर मोतियाबिंद

आप शीर्षक पढ'र जरूर समझोला के ओ धूधलौ कठै चूथौ (गडवड) कर रैयो है। म्हारी दोनू आख्या मे मोतियाबिद है पण म्है आप्रेशन कोनी कराणौ चावू कै थोडौ–भौत दीस रैयौ है फेर बो भी नी दीसैलो। म्हारी निजरा जद चोखी ही तद म्हैं (अध्यापकी री वजै सू) हर दफ्तर मे काम करा लेतो हो। चेला भी सगळी जागा मौजूद हा। यै खुद ई म्हनै पिछाण जावता अर काम कर देता। म्हैं खुद नै खुशनसीब समझतौ हो कै चारूकानी म्हारा शिष्य बैठया है। शिष्यावा तो परीक्षा रै दिना नै छोड'र गुरुवा नै पिछाणै ई कोनी। अफसरा अर डागदरा नै छोड र शिष्य तो आज भी गुरु नै पिछाण जावै। नेतागण भी पिछाण जावै काम चावै नी करै।

रिटायरमेट रै वाद मोतियाबिद होयौ अर लोगा री शक्ला–सूरता पिछाणणी मुश्किल होयगी। गली–बाजार सू निकलणौ ओखौ होय गयौ। स्कूटर–साइकिल तो चलावणी मुश्किल होयगी। पैदल आवण–जावण री आदत घाली। पण आवारा कुत्ता नै म्हारौ पैदल चालणौ पसद कोनी आयौ – वानै म्हारी शक्ल ई पसद कोनी आई। बारै निकलता ई भूसण लाग जावता। दो बार काट खायौ। अबै पैदल चालणौ भी छूट गयौ है।

पण जिन्दगाणी रा काम कोनी रुकै। बिजली पाणी फोन आयकर रसै दतरा मे जाणौ पडै तो कदै–कदै बाजार भी पगफेरौ करणौ पडै। जद ताई जिन्दगाणी है तद ताई आपच–कूटौ है। आसग (सगती) अर आसका तो जीवण रै पग–पग माथै काम करै। केई विभाग तो मरणै रै बाद भी तग करता रैवै। म्हैं दुनियादारी मे सदीव सू कमजोर रैयो हूँ, उम्र भर चेला–चाटा ई काम करता रैया है – इण खातर म्हैं आलसी अर निकमो बण गयौ हू। भ्रष्टाचार सू कदैई पालो ई कोनी पडयौ। रिश्वत इत्याद री वाता सिर्फ अखबारा मे ई पढी ही। भायला कैंवता ई हा – चोखी नौकरी कर रैयो हो – मैया मैं नहीं माखन खायौ' पढाओ अर तनखा जेब मे। ठाठ री नौकरी है। पण म्हैं तो अनाडी ई रैयो होशियारी कदैई आईज कोनी।

रिटायरमेट अर मोतियाबिद री वजै सू दफ्तरा मे जावणौ कम कर दियौ है। वी दिन लाडेसर आय'र पैली दफा नूवी सूचना दी – पापा बी दपतर गयौ थो पण

वानै खर्चो–पाणी चाहीजै। म्हैं हैराण होय गयौ। चालीस साला ताई हिन्दी मे द्वद्व समास पढायौ है पण 'खर्चा–पाणी' रौ औ किसो अर्थ है समझ मे कोनी आयो।

कीं देवण री जरूरत नी है म्हैं चिल्लायौ म्हैं बठै जाय र काई सैधो आदमी देखू।

पापा अबै बो जमानौ कोनी रैयो। लाडेसर हकीकत वखान करी अबै हरेक चाय–पाणी' चावै।

फेर द्वद्व समास – चाय–पाणी'। आ नूवा–नूवा पारिभाषिक शब्द कठै सू आय गया है? साची ई जमानौ बदल गयौ है। आपा रा दफ्तर चाय–पाणी' खर्चा–पाणी' जिसे शब्दा री बैसाखिया रै सहारै चाल रैया है नीतर बद होय जावता।

थोडै दिना पच्छै घर रै आगै रो नल टूट गयौ। ट्रैफिक रो भारी दबाव हौ। जलदाय विभाग गयौ – बठै अेक जणै बतायौ कै आपरौ काम चौतीना कुआ आळै दतर सू हुसी दूजै बतायौ कै स्टेडियम वाळै दफ्तर सू हुसी तीजै समझायौ कै सादुलगज वाळै दफ्तर सू पतौ करौ कै ओ काम किण दफ्तर सू हुसी? म्हैं घरै आयग्यौ। चार घटा खोटी करया पण थिति सागी री सागी। जठै जावौ बठै रा चतुर्थ श्रेणी अधिकारी छाती री कनली जेब कनै इशारौ करै का बाबू साफ शब्दा मे लूखी कुर्सी रौ रोवणौ रोवे। अबै याद आ रैयो है कै बो रेलवे री आरक्षण खिडकी माथै घटू ऊभ'र भी आरक्षण कोनी करा सकतो हो अर दूजा लोग बेगाई आरक्षण करा परा जावता हा। बो खुद रै जीवण मे ई आडायत बण्यो रैयौ।

आदिकालीन कविया नै शिकायत ही के जनम अकारथ ही गयो गोरी लगी न गल्ल' केशवदास नै शिकायत ही कै चद्र बदनी मृग लोचनी बाबा कहि–कहि जाय। पण आज रै जनमन री चित्या है कै अफसरशाही–लालफीताशाही–भ्रष्टाचार सू किमकर छुटकारौ मिलै?

घरै जद पूग्यौ तद लाडेसर समझ लियौ कै बापू खान्नी हाथ पाछा आया है। बो चुप रैयौ कै बापू नै खुद ई लखण आय जासी। अखबार लेय'र बैठयो–आख्या सू सटा'र पढयौ – भ्रष्टाचार सारू पक्को इरादो चाहीजै। हैराण होयगयौ कै सगळा जणा कह रैया है कै भ्रष्टाचार' पक्कै इरादै सू करणौ चाहीजै।

अचाणचक विचार आयौ कै फालतू ई परेशान होय रैयौ हू। म्हनैं भी पक्को इरादो करणौ पडसी दिल नै करडौ करणौ पडसी। म्हैं ठीमराई सू विचार कर्‌यौ। म्हनै लाग्यौ कै हालताई म्है खुद भी जनम अकारथ' कर रैयो थो अर पुत्र नै भी 'साची राह' नी दिखा रैयो थो। वगत रै सागै चलण में ई फायदौ है।

रैया है वा घरा मे लाइट–फोन काटण आळा मुस्तैदी सू पूग रैया है जठै बिजली रो करट है बठै मीटर बद पडया है। जठै ईमानदारी सू बिजली–पाणी रा मीटर चाल रैया है बठै जुर्माना भरण रा कागद पूग रैया है।

ओ मोहल्लौ आदर्श मोहल्लौ बाजे इण री पिछाण आ है कै अेक किलोमीटर दूर सू नाक सडण लागै तो समझ जावौ कै आदर्श मोहल्लौ आसै–पासै है।

काल अेक भायलो आयो – यार किसे सडयोडे मोहल्लै मे रह रैयो है? अठै तो रुकणौ ई मुश्किल है।

भाया' म्हैं कैयो ओ आपा रो सहर है अठै स्सै जागा अेक सरीसी है। अफसरा का नेतावा रै मोहल्लै री बात अठै कठै मिलसी? ओ नामी–गिरामी मिनखा रौ नी नामुराद मिनखा रौ मोहल्लौ है। अठै लोगा रो जीवण है – नामो बाळणो (बकाया रकम नै जमा करणौ)। फेर थारौ मोहल्लौ भी तो म्हैं देख राख्यौ है। स्सै जागा नाजोगा लोक भरया पडया है।

जे थारो भाषण मुक गयौ हुवै तो म्हैं की अर्ज करू?

थू चाय पावण री बात करसी। म्हैं कैयो। बो हसयौ।

सावण रै आधै नै हरौ–हरौ ई दीसै।

आ बात किणी आधै नै प्रूव' करी है काई कै बीनै हरो दीस रैयौ है कै काळौ? आजकाल स्सै जागा अस्पताल रै नाव सू रिसर्च सेटर' खुल रैया है बठै कित्ती रिसर्च' व्है ओ तो कोनी कह सकू, पण जका आप्रेशन रै बाद अधा' बण रैया है वानै तो हरौ कोनी दीसै।

थू आज भाषण देवण रै मूड मे है। बी कैयौ।

साची बात खारी अर भाषण लागै। खैर थारै वास्तै चाय बणावू।

नहीं बी जोर देय र कैयौ – चाल म्हारै अठै चाय बीजी बठै पीवाला।

आज मरूथल मे जळ कठै सू आयौ म्हैं मसखरी करी।

अबार थू गदगी रै मानवीकृत रूप ई मोहल्लै मे यानी नरक मे रह रैयो है। सहर मे करीब–करीब इसा ई मोहल्ला है। अब थू खुद ई चाल र देख।

वी री गली मे प्रवेश करता ई मनै लाग्यौ कै म्हू नुवै सहर मे आयग्यौ हू। पैली तो अठै सू म्हू नाक री खैर मना'र बहीर होतो हो फैल्यौडै पाणी अर कीच सू बच र निकलण री बेकार कोशिश करतौ हो। टूटयोडी नालिया अर अबोर्शन' करावण आळी सडका सू सगळी लुगाया डरती ही। मच्छरा–मक्खिया री बठै हुकूमत ही। अठै भी टाचकियोडा मिनख बसता हा।

पण अबै? ओ कुलाच कठै सू भरी है? गडक भी सयाणा होय गया है। पैली तो बै हू–हू (कौन–कौन) फेर हाउ–हाउ (किया–किया) अर अत मे व्हाई–व्हाई

(क्यू–क्यूं) कह'र गली मे पटक देवता हा अबै घरा मे जजीरा सू बध्याडा सभ्य तर
सू बैठया हू–हू (कौन) पूछ रैया है। बारा सलीका अर बर्ताव किणी अफसर रै कु
सरीसा होय गया है जका सिर्फ इशारै माथै काट खावै।

जठै कचरा पटटी' ही बठै अबै पार्क हो। टाबर बठै रम रैया हा – पण क्रि
जिसा निकमा अर टाइमखाऊ खेल नी झूला झूल रैया हा स्लाइडाउन कर रैया ह
लाउड स्पीकरा रो शोर नी हो टीवी री कळळ–हूकळ नी ही। सफाई री वजह
मोहल्लौ चिळक रैयो थो। म्हैं भायलै सू पूछयौ – थारो मोहल्लौ भी नागोभूगो हो अ
इण रौ दुरभाग किया खतम होयग्यौ है?

बी बतायो – अठै रोजीना सफाई हुवै। कचरा पात्र भी राख्योडा है। शा
कम्पलैक्स अर पेट्रोल पप भी बण रैया है। स्कूल तो चालू भी होय गयौ है। सग
सुविधावा होयगी है।

पण ओ कायाकल्प होयो किया? म्हैं हैराण हो।

अठै मत्रीजी रौ भतीजौ रैवण लाग्गयौ है। केई जणा डरनै मकान बेच'र ग
परा है। भतीजै नै सफाई पसद है।

✿

आ भी अेक कला है

जूनै शास्त्रा मे चौसठ कलावा नै मान्यता दिरीजी है। इणा मे गीत वाद्य नृत्य इत्याद खास है। प्रसिद्ध बोद्ध ग्रथ 'ललित विस्तार' माय कलावा री सख्या छयासी मानीजी है। आचार्य क्षेमेद्र सैकड कलावा री चर्चा करी है जिणा मे 64 जनोपयोगी कलावा 64 सुनार री कलावा 64 वेश्यावा री कलावा री गिणती करी है पण इणा सगळी कलावा मे आज री ठावी कला रौ नाव ई कोनी मिलै – आ कला है रिश्वत।

कलावा रा किताक वर्गीकरण मिलै है – इणा मे प्राकृतिक कला अर अभ्यासगत कला नाव सू वर्गीकरण भी कर्यौ गयौ है। अबै ओ शोध रौ विषय है कै रिश्वत लेवणी प्राकृतिक कला है का अभ्यासगत कला। आ बात तो स्पष्ट है कै प्राचीन काल मे इण कला री विगतवार व्याख्या कोनी करीजी हे। होय सकै है के इण रौ सागोपाग विकास आधुनिक काल मे हुयो हुवै। 'उत्कोच' शब्द प्राचीन साहित्य मे मिलै तो है पण इण रै बाबत सूक्ष्म दीठ सू विचार कोनी हुयो।

रिश्वत कला रो भरपूर विगसाव होमण सू आज ईं कला माथै काफी गहराई सू विचार कियौ जाय रैयौ हे। हर्बर्ट स्पेसर कला नै 'फालतू उमग' का खेल रौ रूप बतायौ है। पण अबै आ कोरी कल्पना अर खेल री परिधि मे कोनी आवै आ तो जीवण–मूल्य बण चुकी है। साहित्यकारा इण कला माथे घणी बारीकी सू लिखणौ–सोचणौ भी सरू कर दियो है। परसाई जी री रचना 'भोलाराम का जीव' इण कला माथै ठीमराई सू विचार करै। मोहन राकेश भी उण कलेक्टर री चर्चा करी है जको घूस लेय'र आवणियै नै कैंवतो – 'चूल्हे मे नाख'। लोग बापडा डर जावता कै ओ रिश्वत रौ विरोधी है पण बी रौ पी ए जावता लागा नै समझावतौ के कनले कमर म साफ–सुथरो चूल्हौ राख्योडो है बी मे पीसा नाख द्यो। नूवा–नूवा प्रयोग हे। जिन्दगाणी भी तो प्रयोगशाला बाजै।

कलाकार जन्मजात हुवै। पण रिश्वत कला मे जन्मजात प्रतिभा रै सागै अभ्यास री घणी जरूरत हुवै। अनाडी तो तीजीताळ कपडीज जावै। साचा कलाकार बो होवै जका दूजा नै फसा'र खुद बारै आय जावै। रिश्वत जिसी अभिव्यजना–पद्धति मे माहिर होणो दोरौ काम है क्यूके आजकाल लोग कयामत री निजरा राखै। जणैईज रोजीना डाकदर बाबू, अफसर कोई न कोई चक्कर मे आई जावै। अखबारा मे इणा नूवै कलाकारा री चर्चा सुणा ई हा। इण कला म परिपक्व होवण सारू मोकळै अभ्यास री जरूरत हुवै। कडी मेहनत रै सागै पक्कौ इरादौ भी चाहिजै। आसगीर होणौ जरूरी है।

डार्विन री बात साची है कै आदमी बदर ई हा। बादरियो ई बिल्लिया री लडाई मे फायदो उठावै है इण तरै आदमी दो मिनट री लडाई म फायदौ उठा लेवै।

रिश्वत कला मे अेक कमी है कै इण रौ सार्वजनिक प्रदर्शन कोनी होय सकै। पण इण सारू भी तरीका तलाश्या गया है। परीक्षा रै दिना मे पापड–भुजिया कूटनीति' सू काम करायौ का करवायौ जाय रैयौ है। लारलै दिना केई काण्ड सामै आय चुक्या है – हवाला काड चारा काड वर्दी काड चीनी काड तार काड इत्याद। वाल्मीकि अर तुलसीदास तो 'रामायण/रामचरित मानस' मे ही काडा री रचना करता रैया अबार तो दुनिया भर रा काड सामै आय रैया है।

महात्मा गाधी कैयो है – कला जिन्दगाणी नै अधारै सू प्रकाश मे ले जावै। कला सू ई जीवण रौ महत्व है। केई लोगा अठै कला रो मतलब रिश्वत कला' सू ई लियौ है। वा ई जीवण नै रौशनी मे ले जावै अर इण सू जीवण री सार्थकता है। बिन रिश्वत सब सून। अेक आदमी दफ्तर रै बाबू कनै जाय र आपरै बेटै री नौकरी सारू उण रै साहब सू बात करणै री बात कैयी। म्हैं तो आगळै हफता सारू साहब रौ रिजर्वेशन करावण वास्तै स्टेशन जाय रैयो हूँ। वो लापरवाही सू बोल्यौ। रिजर्वेशन म्हू करा'र आऊँ थे बात करल्यौ।

'ठीक है अबार साहब रो मूड भी ठीक है। म्हैं आपरै छोरै री बात करू तद ताई थे एसी री टिकट दिल्ली री बणा'र आआ। पीसा आपनै बाद मे मिलसी जद टीए डीए पास हुसी।

थे अबार बात करल्यौ पीसा री चित्या छोडौ बेटे रै बाप कैयो म्हैं अबार टिकट बणावण नै जाय रैयो हूँ। वो गयो परो। साहब री निजी यात्रा ही। वा बाबू नै पैली ई पीसा देय राख्या हा। इसी कला मे हरेक पारगत कोनी हुवै।

आ बात जरूर है कै कलाकारा री ऊची–नीची श्रेणियाँ हुवै। कोई इण कला री हेठली जमीन नै ई छू सकै अर कोई घणी ऊँची उडान भर लेवै। कोई तगडा गिराग कपड लेवै तो कोई गिराग सू ई मात खा जावै। हरेक री कलाबाजिया न्यारी–न्यारी हुवै। कोई इण कला सू असैंधो बण परा भी काफी लूट लेवै अर कोई कलावत अजाणपणै मे ही धोखौ खा जावै। कोई मीठी बोली सू लूट लेवै तो कोई अडकबोलो बण'र लुट जावै – खुद रो नुकसान करा बैठै।

इन्टरव्यू आळी ठौर घणा दलाल मिल जासी जका चोखा पीसा लेय'र काम करावण रौ वायदौ करै सागै ई काम न होवण री स्थिति मे पीसा पाछा करण रौ भी वादौ करै। वै की कोनी करै। परीक्षार्थी खुद रै बलबूतै माथै सलेक्ट होय जावै तो पीसा जेब मे अर जे नी भी व्है तो पीसा पाछा करण मे काई दिक्कत है? वा री ईमानदारी' री वजह सू हर इन्टरव्यू मे वै हजारू रिपिया फोकट मे कमा लेवै। ईनै कैवै – हीग लगै न फिटकरी ।

✿ ✿

सतजुग अर आलोचना

बी दिन प्रो कालूराम जयहिद रेस्तरा मे चाय रो तीजौ कप मुकावता थका बोल्या – घोर कलजुगी जमानौ आय गयौ है। साची वात ना तो कैवै अर ना ई कोई सुणणौ पसद करै। कूड ई कूड बोल्यौ जाय रैयौ है।

आप री बात साची है म्हैं मुळक्यो दूजा भायला भी मुळक्या। कालूराम रौ मूडौ वेसी काळौ हो गयौ। थू म्हारौ समर्थन कर रैयौ हे का विरोध? थू अभिधा मे बोल रैयौ है कि व्यजना मे?

आप भायलै री बात नै किण तरै सू समझ रैया हो? अेक जणै पूछयौ। म्हैं हाल भी मुळक रैयो थो।

आज री औलादा माईता नै आख्या दिखा रैयी है। आ बात साची है कि झूठी? कालूराम उण सू ई पूछयौ।

आ बात अेक कानी सू सिद्ध कोनी करी जाय सकै है। आलोचना तो दोनू पखा नै साम्है राखै। बो सत–असत सही–गलत खरौ–खोटै सैंग री बात करै। माईता रो पख भी कमजोर होय सकै तो टाबरा रो भी। बी यानी गौतम जोर देय र कैयौ। सगळा गौतम री बात रा समर्थक दीस रैया हा।

सुधीर बाबू केयौ – सगळी भाषावा री आलोचना सतजुग लाय रैयी है।

ठीक बात है म्हैं सुधीर बाबू रौ समर्थन करयौ। लारलै हफ्तै म्हारी कहाणी छपी ही। अेक पाठक लिख्यौ – आपरी कहाणी गोलमाल पत्रिका मे पढी। पढ'र लाग्यो कै पत्रिका रौ स्तर गिर गयौ है। सगळा हॅस्या। कालूराम चुप हो – इयै मे सतयुग अर आलोचना रौ काईं सम्बन्ध है? स्तर गोलमाल' पत्रिका रौ गिरयौ है आप री कहाणी रौ तो कोनी गिरयौ। आप साची बात क्यू कोनी समझौ?

सगळा जणा जोर सू हस पडया। कालूराम नाराज होय जावण लाग्या तो वानै झाल'र बैठायो। वा सू ई सभा री रौनक ही। कालूराम फेर कैयौ – आजकाल खारी बात कोई भी नी सुणणौ चावै। म्हारै कनै परवाना' जी आपरो नाटक लेय र आयौ कै आप नाटका माथै काम कर रैया हा इण नाटक माथै भी की लिखौ पण आगलै हफ्तै म्हूॅ इण नै लेय जास्यू, क्यूकै म्हारै कनै आहीज कापी है। दूजी होती तो आपनै भेट जरूर करतो। म्हैं कैयो – कोई बात नहीं। इया भी म्है चोखी किताबा नै ई सागै राखू। बो बोल्यौ – फेर तो म्हारौ नाटक आप रै कनै हुवणौ चाहीजै।

कालूराम कैयो – अबै आप ई फैसला करो कै आलोचनात्मक दीठ सू म्है आपणी बात राखी कै परवाना जी?

सगळा जणा आलोचना रै इण रूप माथै सोचण लाग्गया। म्है बठै दस साहित्यकार हा अर आलोचना जी नूवी प्रवृत्तियो माथै चाणचक कालूराम चर्चा शुरू कर दीनी ही। सबनै चुप देख'र धुरधर' जी 3 बट्टा दस कप चाय रो आर्डर दियौ। म्हैं कैयो – चाय पीणी है का उण रौ इन्जेक्शन लगाणौ है। हसण सू वातावरण सहज हुयौ।

आज री साहित्यिक आलोचना तो विचारधारावा री आलोचना बणगी है। आहीज जुग सत्य है। खूमाराम पैली बार बोल्यौ।

जुग सत्य री बात करौ विनोद चिड्यौ गुटबदी सू तो ऊचौ कोनी उठ सकौ दूजा री रचनावा खारी जहर लागै।

म्हैं आप री पोथी री कदैई समीक्षा कोनी करी। म्हैं स्तर री पोथिया री आलोचना करूँ।

फेर कालूराम जिसी समस्या। म्हैं कैयो साची ई आलोचना मे सतजुग री थापणा होय रैयी है।

इतै मे कूणै सू अेक गाव आळौ उठनै आयौ – भाया म्हनैं माफ करजौ। म्हैं लिखारा तो कोनी पण पत्र–पत्रिकावा खूब पढू। आप किसै सतजुग री बात करौ? आज तो आलोचना मे का तो पार्टी जुग है का मित्र जुग है। ढगसर आलोचना कित्ताक जणा लिख रैया है? जूनी पोथिया पढ'र लिख रैया है फ्लैप पढ'र लिख रैया है दूजा री आलोचनावा नै खुद री भाषा मे लिख रैया है म्हैं थनै चाटू थू म्हनैं चाट री शैली मे लिख रैया है थोडैसीक शब्दा रा प्रयोग कर रैया है – सामाजिक सरोकार' परिप्रेक्ष्य' अस्मिता' पर्यवेक्षण' कुल मिला'र इत्याद इत्याद। ओहीज सतजुग है अर ओहीज जुग सत्य आहीज आलोचना री भाषा है अर आहीज भाषा री आलोचना। फेर म्हारै कानी मुड'र पजाबी मे कैयौ – मैं कोई झूठ बोल्या? म्हारै मूडै सू निकल्यौ – कोई ना।

✿ ✿

सिफारिश सूं परहेज

आज स्सै लोगा आ बात साची मान लीनी है कै भ्रष्टाचार आज रो शिष्टाचार है। आज भ्रष्टाचार दुपहियो वाहन है जिण रौ अेक पहियौ रिश्वत है तो दूजौ भाई भतीजावाद (सिफारिश)। रिश्वत (उत्कोच) रौ वर्णन तो जूनै साहित्य मे भी मिलै है। राजावा मे उत्कोच रा नवा–नवा प्रयोग मिलै है विषकन्यावा री चरचा भी मिलै है अग्रेजा रै टेम डालिया रौ जिक्र भी मिलै है – इण सारू रिश्वत नै जीवण री सहज प्रक्रिया मान'र लोग बाग लेण–देण करता आया है। अबै तो औ थापित जीवण–मूल्य बण चुक्यौ है।

पण सिफारिश। इण माथै पूरौ लिटरेचर अजुलग उपलब्ध नी होयो है। रिसर्चा चाल रैयी है प्रयोगशालावा भी थापित हो चुकी है पण सही निष्कर्ष हालताई सामै नी आयौ है। केई विद्वान सिफारिश सहिता' री रचना भी करण री कोशिश करी है पण हालताई ठोस नतीजा सामै नी आया है। कोशिश चालू आहे'। जद लग मतैक्य' कोनी बणसी तद तक लोग सिफारिश सू परहेज भी करसी अर सिफारिशा भी करता रैसी। सिफारिश भाषायी नीति दाई ढुलमुल चालती रैसी।

आपा आदर्शवादी हा। आदर्शवाद ही सिफारिश' जिसी यथार्थवादी प्रवृत्ति नै पसद कोनी करै। आपा माय सू आदर्शवादी हा कै नी आ दूजी बात है पण मुखौटा आदर्शवाद रा लगा'र बारै जावा। अेक दफा लोक सेवा आयोग मे इन्टरव्यू रै टेम तद अेक उम्मीदवार रौ नाव लियौ गयौ तद अेक विशेषज्ञ (इन्टरव्यू लेवणियो) आ बात कै'र बारै गयो परौ कै म्हारै नालायक बेटे भी फार्म भर्‌यौ थो म्हनै कैयो ई कोनी। म्हैं बेटे रो इन्टरव्यू कोनी लेवू अर बीरौ नालायक बेटो चुणीज गयौ।

सिफारिश करणै रा अर करवाणै रा तरीका अर अदाज न्यारा–न्यारा हुवै। साहित्य मे अभिधा लक्षणा अर व्यजना शब्द शक्तिया सिफारिशा मे घणी काम आवै बस वारौ प्रयोग सही जागा माथै हुवणौ चाहीजै। मत चूकै चौहान' जिसी उक्ति ई इसी जागा काम आवै पण घणकरा लोग–खारा तौर सू भावुक साहित्यकार तो चूक ई जावै। म्हारै अेक साहित्यकार मितर नै अेक बडै नेता (सागी भाई जिसौ) सू कैयौ – अबकलै आपरै भतीज बादसाह नै भी नौकरी दिराऔ। नेतौ मुळक्यौ तो म्हारौ दोस्त राजी होय गयौ पण नौकरी नेता रै भतीजै नै मिली तो म्हारै मितर याद दिरायौ तद *नेताजी कैयौ – था ई तो कैयौ हो कै अबकलै आपरै भतीज बादसाह नै भी नौकरी*

दिराऔ' म्हैं दिरा दी। साहित्यकार आ बात कोनी कह सक्यौ कै शराफत मे म्हैं खुद रौ बेटौ ना कह'र आपरौ भतीज बादसाह' कह दियौ। अबै वो बादसाह' गलियो री धूल फाक रैयो है। लक्षणा-व्यजना मे सिफारिश कोनी चालै। नेता लोग अभिधा मे ई काम करै अर करावै। म्हैं अेक दफा इन्टरव्यू लेवण नै जाय रैयो थो – अेक नेता आयनै म्हनैं कैयौ – कुमारी .. .. नै हर हालत मे सलैक्ट करणौ है म्हैं ई आपरौ नाव इण कमेटी मे राख्यौ है। नेतागण ज्यादातर महिलावा री सिफारिश करै।

आजकालै लोगा रै हिवडा सू सवेदना बियाई प्रचलन सू हट रैयी है जिया बाजार मे छोटा सिक्का प्रचलन सू हट रैया है। अबै भावुकता मिनखपणौ इत्याद बाता नै पुरातत्व विभाग रै पुस्तकालया मे ई जाण्या जा सकै है।

सिफारिश करणै री कला जबर है। कदै तो जी की लाठी बी की भैंस' री लोकोक्ति चालै अर कदै आयौ शरण तिहारी री उक्ति चालै। लोगबाग मौकौ देख'र बात करै। आजकालै सैंग जणा मनोविज्ञान रा पडित बन रैया है। पण हरेक सिफारिश मे रिश्तौ का पीसौ ई काम आवै। घोडो घास सू यारी कोनी करै।

सिफारिश रौ छेत्र घणौ व्यापक है। स्थानीय सम्मान/पुरस्कार सू लैयनै नोबल पुरस्कार तक इण रौ प्रभाव छेत्र मान्यौ गयौ है – सच है का झूठ ओ चितन रौ विसै है। स्थानीय स्तर पर बणायोडी पुरस्कार कमेटिया रा तीन सदस्य बतळ कर रैया है –

क (कविता कमेटी वाला) – यार इण दफा म्हारै बापू नै कथा रौ पुरस्कार मिलणौ चाहिजै। लारली दफा म्हैं आपरै बडै भाई साहब नै काव्य-पुरस्कार दिराऔ। बारी कवितावा सू लोग परिचित भी नी है।

ख (कथा कमेटी वाला) – इया तो आपरा बापूजी भी कथा माय काई लिख्यौ है पण आपा नै तो दान घर सू ई शुरू करणौ है। ओहीज बगत रौ तकाजौ है।

ग म्हैं व्यग्य विधा कमेटी मे हू। व्यग्य रौ सिरनाम लेखक भी हू। आप लोगा म्हनै इण कमेटी मे रखायौ कै आप दोनू रै लोगो नै पुरस्कार दिरा सकू। म्हैं ओ काम ढगसर करयौ भी है पण म्हनै खुदनै पुरस्कार तो मिल ई कोनी सकै क्यूकै म्हैं खुद इण कमेटी मे हू। देश भर रा साहित्यकार खास-खास सस्थावा सू पुरस्कृत होवण रै बाद उण सस्थावा री पुरस्कार कमेटी में आपने खुद रै लोगा नै ओबलाइज करै। म्हनैं ना तो खुदा ई मिल्यौ अर ना ई विसाले सनम। आप लोग पुरस्कार लेय र कमेटी मे बढया।

क देख भाया पुरस्कार ना तो सिरैनाम लेखक नै मिलणौ जरूरी है अर ना इ गुमनाम लेखक नै। पुरस्कार प्राप्ति रा न्यारा-निरवाळा तरीका है। थू भी अबै जाण गयौ हुसी।

ग (रीसा बळतौ) म्हे स्तै सू शुद्ध भाषा लिखू।

क (हँस'र) ओ वाक्य ई अशुद्ध है कै शुद्ध लिखणियै नै पुरस्कार मिलै। खैर इण दफा थू व्यग्य मे म्हारी लुगावडी नै पुरस्कार दिरा।

ग पण दुनिया जाणै है कै थारी तरफ सू थू ई लिख्यौ करै।

क (मुळक र) थारी तरफ सू पुरस्कार लेवण नै म्हैं ही जासू। बस थू आडी ना आयै दूजै मेम्बरा सू म्हैं बात कर लीनी है। थू बाद मे इण कमेटी सू इस्तीफो दे दीजौ म्हारौ बेटो थारी जागा आय जासी आगळै साल थारौ पुरस्कार पक्कौ। अबै तो राजी है।

तीनू राजी होयनै गया परा।

कहावत साची है – अधो बाटै रेवडी। आ रोग च्यारूकानी फैल्योडो है। सिफारिश बिगर जीवण–गाडी चीला माथै नी चाल सकै। महाकवि बिहारी कैयो ई हो –

अनबूढे बूढ तिरे जे बूढे सब अग।

अर्थात् जका लोग सिफारिश रूपी सागर मे नी डूब्या वै साची ई डूब गया अर जे सर्वांग रूप सू (सिफारिश–सागर मे) डूब गया यानी पैठ गया वै पूरी तरिया सू (भवसागर सू) तैर गया।

फेर भी लोग कैंवता फिरै – आपा नै सिफारिश सू परहेज है। हो बो करो।

लिछमी आई है

'सुण्यौ है आपरै घरै लिछमी आई है। रेलवै मुजब अेक सीनियर सिटीजन (वरिष्ठ नागरिक) दूजै वरिष्ठ नागरिक सू पूछयौ। वै भी दिनूगै री सैर कर रैया हा अर खोळियै नै तारोताजा राख'र वृद्धा री वढोतरी कर रैया हा। दूजै डोकरै लटक्योडै मूडै नै बेसी लटकाय'र हौळै सीक कैयौ – हा पोती हुवी है।

'तो ई मे दुखी होवण री काई बात है? लिछमी सू घर–आगण पवित्र होयग्यौ है। पहलडै मिनख कैयौ।

नूवी पोती रै दादा कैयो – घर–आगण तो पहला सू ई दो पोतिया पवित्र कर राख्यौ है अबै तो इणनै मैला करण सारू पोतै री जरूरत ही। आप रा तो पोता ई पोता है आपनै काई चित्या आप तो करम प्रसाद हो।

म्हैं भी बठै ऊभ्यौ थो। लोग बाग म्हनै तो जवानी सू ई सीनियर सिटीजन' समझ रैया है जद कै नियम मुजब म्हैं हालताई रेलवे री जात्रा में तीस प्रतिशत कन्सेशन रौ हकदार कोनी बण्यौ। जे म्हैं वरिष्ठ नागरिक री टिकट लेय भी लू तो कोई एतराज कोनी करसी। काया ई इसी है। म्हैं नूवै दादाजी सू कैयौ – छोरा हुवै का छोरी काई फर्क पडै है? फेर आपा रै हाथ मे तो आ बात है ईज कोनी।

नूवै दादाजी आपरी रीस म्हारै माथै काड नाखी – 'कोरी बाता बणावौ। आज रै वैज्ञानू जुग मे स्सै कुछ आपा रै हाथ मे है। फेर छोरा–छोरी रो फर्क छोरी रै बाप सू पूछ। उपदेश देवणौ सोरो है। थू कुण? म्हूं लाडी री भुवा।

म्हैं डर गयौ। वै खासा नाराज हो गया हा। वै फेर कडक्या – आज सोनोग्राफी सू सैंग ठाह पड जावै।

पण ओ कानून री दीठ सू अपराध है। दूजै वरिष्ठ नागरिक कैयौ – भ्रूण हत्या जुर्म है। इया भी अेक हजार मर्दां रैं लारै नौ सौ इग्यारह लुगाया है। कमी पूर्ति कठै सू हुसी?

तो लुगाया री पूर्ति करणै रौ ठेकौ म्हारै परिवार लेयनै राख्यौ है काई? बाकी लोग टेडर क्यू नी भरै? वै वेहद नाराज होय गया।

वारौ रूप देख'र दूजा नागरिक तो रवाना होय गया। वा नै पछतावौ हो कै लिछमी सारू बधाई क्यू दी ही? म्हैं भी अैवास जावण री सोची। तद नूवै दादो म्हारौ हाथ झाल लियौ –

थे तो साहित्यकार हो मिनखा री भावनावा सू परिचित हो थे ई बताऔ कै आज रै टेम छोरया मुसीबत है कै नहीं? आज रै माहौल मे वा री देखभाल कित्ती दौरी होयगी है? सिनेमा अर टीवी तो बेडा गर्क ई कर राख्या है। छोटा–छोटा छोरा इश्क–विश्क री बाता कर रैया है।

बगत रै मुताबिक आपा नै चालणौ ई पडसी। आ बात साची है कै सरस्वती जी रै हस री जागा लिछमी जी रै उल्लू री इज्जत घणी बधगी है पण दुखी होवण सू भी काई हुय जासी? अर फेर छोरा का छोरी रौ जलम भाग्य री बात है। छोर्‌या री जरूरत भी समझणी पडसी। आ धमीडा तौ आपा नै लेवणा ई पडसी। म्हैं हसयौ।

वी टेम वा रौ छोरा भाजतो आयो – पापा छोरी री तबीयत खराब होयगी है। बी नै अस्पताल भरती करायी है। सगळा जणा बठै ई है। थे घरै जाय'र बैठौ। म्हैं देख लेसा।

अरे' दादाजी रोवण लाग्या – म्हारी लिछमी नै काई हुयौ है? म्हैं भी अस्पताल चाल रैयो हूँ।

छोरौ हँसण लाग्यौ -- पापा काई नी हुयौ है। अबार आपरै भायला कैयो कै थे छोरी हुवण सू नाराज हो। म्हैं कैयौ कै आ बात नी है जणै वा आ बात कह'र म्हनैं भेज्यौ।

इसौ मजाक भी नी करणौ चाहिजै। म्हनै घणी रीस आई इत्ती उमर लेवण रै बाद भी म्है डोकरा हालताई टाबरपणै सू उभर ई कोनी सक्या।

म्है दादाजी रौ हाथ झाल्यौ – चालौ आपरै अठै आयोडी लिछमी रौ दर्शन म्हैं भी करल्यू। बै आसू पोछता थका म्हारै सागै रवाना हुया।

अवकलै तो मार . ..

म्हैं काई करूँ? थे म्हनै दोस ना द्यौ। म्हारा सस्कार ई इसा है कै म्हैं लडाई–भिडाई सू काफी दूर रैवू। म्हनैं तो टाबरपणै सू ई आ शिकषा मिली है कै जे कोई तनै लपड मारै ता थू दूजौ गाल भी आगै कर दै क्यूकै तनै हिसा नी करणी है अै भौत बडौ पाप है। अबै म्हारा सैग सस्कार हिसा रै खिलाफ है अबै म्हू पिट सकू, पण मार खाता थका चू कोनी कर सकू। सागै ई आ शिक्षा भी म्हनै मिली है के सदीव लोकमत सू डरो दुनिया कठै आगली नी उठा दै कै ओ जुलमी है फेर थारी इज्जत (?) माथै बटटौ लाग जासी। इण सारू दबग नी दबकेल बण'र रैणौ पडै। म्हारा दादा–पडदादा–लकडदादा सैंग दबकेल ई रैया है अर टाबरा नै भी इसी शिक्षा दीनी है। वै सगळा जनमत सू डरता हा कै आपा सामै लडाला तो घणी बदनामी हुसी। वै मिनख पणै रा समर्थक हा कै जे आततायी रा हाथ–पग थक जावै तो वारै अगा नै सहलाणौ आपरौ धर्म है। मानवता रौ तकाजौ है कै शत्रु नै पीड नी हुवणी चाहिजै भलैई आप रौ कायाराम काया छोड दै। वै हमेशा 'डिफेसिव' बणण री सीख दीनी ओफेसिव' बणण सू दुनिया मे बदनामी हुवै। बदनामी सू तो मरणौ भलौ।

आपारा बडा–बडैरा ई नी ऋषि–मुनिया तक आहीज सीख दीनी है कै 'बिच्छू रौ धर्म काटणौ है पण आपा रौ धर्म वीनै पाणी सू बचाणौ है। आहीज शास्त्रा रो सार है। बारौ धर्म 'डक मारणौ है अर आपरौ धर्म वानै छोडणौ है।

आपनै हैराणी हुसी कै म्हनै माईता अेक शिक्षा और दीनी है कै वचने का दरिद्रता' बोलणै म कदैई कजूसी नी करणी। हमेशा बडबोलौ बण'र रैणौ है। इण मे ई बडेरपणौ है। कुटीजता बगत भी म्हनै कैणौ है – आ बात ठीक नी है। म्हनै कायर ना समझ्या। अबकलै तो मार म्हैं आर–पार री लडाई करूँलो थनै छठी रो दूध याद दिरा दूलौ। म्हनै खूटोलो ना समझ लिया म्हैं थारै सू इक्कीस पड़ू, आ बात थू भी जाणै है अर दुनिया भी पण म्हैं थारौ दोवड–तेवड़ नुकसान कोनी करणौ चावू। म्हैं सिर्फ दुनिया रै कुजस सू बचणौ चावू। दोमज (जुद्ध) सू म्हनै डर नी है म्हैं किसी भी दोट (आक्रमण) सू कोनी डरूँ। पण म्हारा सरकार सायती रा है। अर थू जाणै ई है कै तूफान सू पहला री सायती कित्ती जबर अर खतरनाम रूप धारण करै है।

बस इसी बाता सू ई म्हैं खुद नै अर घरआळा नै राजी राख रैयौ हूँ। जद म्हैं छोटौ थो तद म्हारा बडा भाई साहब कैंयता हा कै बापू रै सामै तो मार रो जवाब देणौ ठीक नी है जद म्हारै कनै हुकूमत आय जासी तद म्हैं मुँह तोड जवाब देसू – थू देख जौ।

अवै बडा भाई साहब मुखिया है। पहली जद वै मुखिया नी हा तद शत्रु सू बाथम बाथ करण री बाता करता हा थी रौ दोवड–तेवड नुकसान करणै री डींग हॉकता हा अन्याय रो दमण करणै री बात कॅवता हा पण अवै? काई होयगयौ है? म्हैं आखी जिदगी कुटीजतो रैवूलो? बापू रै बगत तो घर सू बारै ई लोग बाग म्हनैं कूटता हा अवै तो वै घर मे आयनै म्हनै कूट–काट जावै अर बारै आयनै खुद रौ नाव भी बताय र जावै पण वा रौ कोई कुछ नी बिगाड सकै। पाडोसी तो मजा देखै तरी लेवै। म्हारी थिति तो सागी ई रैई – म्हारी नियति तो मार खावण री ई रैई भावै कोई मुखिया बण'र घर मे रैवै। म्हारा कृतघण भायला भी म्हारी मदद कोनी करै। केई मितरा बडा भाई साहब सू कैयो भी है कै आपरै घर मे घुस'र आपरै लोगा नै दुश्मण मार रैया हे अर थे मुखिया होय'र वा री रक्षा नी कर रैया हो' पण मुखिया जी माथै कोई असर नी है सस्कार आडा आय रैया है –लोगा री जान जावै भलैई पण बदनामी नी हुवणी चाहिजै। शातिदूत बण'र वानै शाति पुरस्कार' लेवण री इछा जो है। वै आदर्शवाद री लीक सू हटणौ पसद ई कोनी करै। अर म्हू भी सस्कारा सू हट कोनी सकू, खुद रा सुर तीखा कोनी कर सकू। म्हनै भी वांरै सुर मे सुर मिलाणौ ई है –आ म्हारी नियति है।

लोग कैवै कै कॅवली चीज भी बार–बार दबावणै सू सख्त हो जाया करै। बार–बार कटमी करण सू कवलौ हिवडौ भी कजियौ करण लाग जावै पण म्हारै अठै तो मरघट री सायति ई निजर आवै।

अवै हालत आ है कै म्हारी जन्मकुडली मे कई तरिया री गुलामी लिख्यौडी है। बैरी मुळक भी देवै तो आपारा लोग वानै बाथा मे भरण सारू त्यार होय जावै टटाखोर सिद्ध हुवण रै बाद भी की सू हाथ मिलावण सारू म्हैं त्यार होय जावा आ बैल मनै मार री शैली मे वांरै घर–मोहल्लै मे पूग जावा। आपा हालताई नी समझ सक्या हा कै शराफत आदर्श नही कमजोरी मानी जावै है।

साची बात आ है कै आपा लोही री अेक–अेक बूद दिखा'र दुनिया सू हमदर्दी बटोरण री बेकार कोशिश कर रैया हा। कमजोरा नै सहानुभूति कोनी मिलै। दुनिया सगती री पूजा करै है। गजढाल अर गजनाळ नै सामै पैदल मिनख कोनी टिक सकै।

म्है इण बात माथै टिक्योडा हा कै चावै किता नुकसान होय जावै पण मारण री सरूआत म्हें नी कराला। दुनिया काई कैसी? दूजा लोग दबादब बदलौ लेय र हिसाब–किताब बरोबर कर लेवै पण आपा नै हर बात सोचणी पडै। था आ बात सुणी व्हैली कै अेक पहलवान अेक सीकिये नै थप्पड लगा दी। सींकिये कैयौ – थे थापट सीरियसली लगाई है का मजाक मे? पहलवान बीनै धक्को देय'र कैयौ – सीरियसली लगाई है बोल। सीकिये कैयौ जणै ठीक है म्हैं मजाक पसद कोनी करूँ।

आपा भी मजाक पसद कोनी करा।

✿ ✿

जरूरत : ओक साहित्य प्रभारी री

" आप सिरदार सायत सोच रैया होवोला कै केंद्र का राज्य सरकार किणी इसे प्रभारी री तलास कर रैयी है जिको साहित्य री ओळखाण राखतो व्है। नी भई साहित जिसे विसय नै कोई कदैई ठीमराई सू कोनी लेवै – इण सारू न्यारै विभाग री भी दरकार कोनी।

आपा नै तो जरूरत है – आपा री महताऊ अनुदानित अर टिकाऊ सस्था सारू किणी साहित्य–प्रभारी री जिको सस्था री सगळी साहित्यिक गतिविधिया रा ढगसर सचालन कर सकै। आखै बरस चलण आळा अै कार्यक्रम साहित्य रै बजाय समाज अर राजनीति मे ज्यादा महत्त्व राखै। साहित्य–प्रभारी रा केई महताऊ काम है – जिया कार्यक्रमा री गुणगट पावणावा नै तय करणी आयोजना री ठौड तय करणी खर्चे रो हिसाब–किताब निमत्रण इत्याद काम साहित्य–प्रभारी रा ई है। ईया तो सस्था रो अध्यक्ष भी है पण साहित्य–प्रभारी रो काम अध्यक्ष सू ज्यादा महताऊ हुसी। इसै गौरवशाली मिनख री केई विसेसतावा भी तय व्हैयी है –

1 साहित्य–प्रभारी रौ साहित्य सू जरा सीक भी सबध नी होवणो चाहिजै। साहित्य री थोडी–घणी जाणकारी राखण वाळा मिनख इण पद रै योग्य नीं मानीजैला। जे उण री कोई साहित्यिक रचना किणी पत्र–पत्रिका मे निगै आयगी तो बीनै सस्था सू काड दियौ जावैला। इण बाबत उणनै ओक शपथ–पत्र भरणौ पडसी कै बो साहित्य रै आसै–पासै भी नीं जावैलो। शपथ–पत्र गलत साबित होवण माथै वीं पर अनुशासनात्मक कार्रवाही करी जावैली। लिखारा इण पद सारू आवेदन पत्र भेज'र म्हानै शर्मिंदो नी करै।

2 साहित्य–प्रभारी पद रो उम्मीदवार घणौ तेजतर्रार अर चालू किसिम रो होवणौ चाहिजै वी रा सम्पर्क–सूत्र घणा मजबूत होणा चाहीजै जिणसू अनुदान चदो विज्ञापन आद रो सुभीतो होय सकै। चोखा साहित्यकार इसा काम कोनी कर सकै – वा री पूछ मत्रिया का अफसरा तोड़ी कोनी होवै। साहित्य–प्रभारी री परख पूरी तरिया सू होसी। आपा नै आ सस्था घाटै मे कोनी चलाणी।

3 साहित्य–प्रभारी प्रभावशाली अर तिकडमी होणौ चाहिजै। आज शराफत रौ जमानौ ई कोनी। साहित्य–प्रभारी बगत सारू अध्यक्ष माथै हावी होय सकै अर

मनमरजी सू कार्यक्रम अर साहित्यिक कार्यक्रम नै चला सकै साहित्यकार वीं सू डरता भी रैवै। वो इत्तो कूटनीतिज्ञ होवणो चाहिजै कै प्रभारी वणण रै बाद वो अध्यक्ष नै तो हटा सकै पण खुद अडीखभ वण्यौ रैवै। सागैई आपरै कार्यकाल मे केई रिस्तेदारा नै सस्था मे नौकरी दिरा देवै।

4 साहित्य–प्रभारी साहित्य सू नी प्रशासनिक कामा सू ई जुडयौ रैवैलो। सम्मेलन गोष्ठिया री व्यवस्था दूजै राज्या मे दूर प्रतिनिधि मडल रो नेतृत्व भाषायी मेलमिलाप उपहारा रो ग्रहण वितरण आद री सगळी व्यवस्था वो हीज करैलो।

5 साहित्य–प्रभारी बार–बार वडेरचारौ भी करैलो का सिरैपावणा वण'र साहित्यकारा नै सीख भी देवैलो। हर बात री कमान वी रै हाथा मे होवैली। वी रै भाषणा माथै जागा–जागा वैठियोडा वी रा आदमी ताळिया सू च्यारूमेर जैजैकार करावैला। वार–वार भाषण देवण सू अनाडी मिनख भी तो एक्सपर्ट होय जावै है।

6 साहित्य–प्रभारी घणौ पढयो–लिख्यो नी होवणो चाहीजै पण कागद देखण रै वगत वो चश्मो जरूर लगावैलो। वीं नै हस्ताक्षर करनै आवेदन पत्र भेजणौ है सफा अगूठो छाप भी नीं चाहीजै पण जे बडै आदमी रो रिस्तेदार हुवै तो अगूठा छाप उम्मीदवार माथै भी विचार कर्‌यौ जा सकै।

आप सिरदार तीजीताळ आपरी अरजी प्रवन्धक साहित्य द्वेषी सस्थान नै भिजवाणै री किरपा करो। घणारग।

परिशिष्ट

व्यग्य री न्यारी-निरवाळी पिछाण बणी है

(बिणजारो--22(2001) सू साभार)

(डॉ मदन केवलिया कइ भाषावा रा जाणीकार लूठा साहित्य सेवी विद्वान रचनाकार है। राजस्थानी मे व्यग्य कहाणी कविता आलोचना आद विधावा मे लगोलग आपरी रचनावा छपती रैयी हैं। 'काळी काठळ' अर 'पाणी' जैडी पोथ्या है। डॉ केवलिया डूगर महाविद्यालय सू रिटायर होय परा आजकालै केई विषया माथै गभीर काम कर रैया है। आप सू न्यारै न्यारै मुद्दा अर खासकर व्यग्य विधा नै लेयर बतळ करी है युवा कवि श्री नीरज दइया। डॉ केवलिया जी सू राजस्थानी साहित्य नै लेयर हुई इण बतळ मे सुभट निगै आवै कै आवण वाळा दिना माय राजस्थानी रौ मान वधैला अर जीवत भाषा रूप राजस्थानी माय सजोरी रचनावा आसी। आलोचना--समालोचना सू दीठ मिलैला क्यू कै जिया कै केवलिया जी कैयो है आलोचना जे खरी है तो खारी नी लाग सकै । सम्पादक)

प्रश्न न्यारी--न्यारी भाषावा--राजस्थानी हिन्दी उर्दू ब्रज पजाबी अग्रेजी आद अर न्यारी--न्यारी विधावा--कविता व्यग्य कहाणी आलोचना भाषा--विज्ञान अनुवाद आद रूपा माथै काम करता आपरी प्रिय भाषा अर प्रिय विधा कुण सी है ?

उत्तर म्हैं सगळी भाषावा नै खुद री प्रिय भाषा मानू हू। आपनै हैराणी हुसी कै अेक बगत म्हैं रूसी (रशियन) मे भी खत लिख्यो करतो हो सिंहळी (श्रीलका री) सीखण री कोसिस करी ही। साहित्य रत्न परीक्षा मे गुजराती पढी आज भी गुजराती पढ--समझ सकू। पण अवै घणी भाषावा रो अभ्यास कोनी रैयौ।म्हारी प्रिय विधा व्यग्य ई है। फेर कहाणी कविता नाटक इत्याद।

प्रश्न राजस्थानी सू लगाव लारै काई कारण मानौ ?

उत्तर घरनार स्व डॉ प्रतिमा केवलिया जद 'राजस्थानी उपन्यासो मे मूल्य सक्रमण' विषय माथै पी--एच डी करी तद राजस्थानी भाषा अर साहित्य पढण--लिखण मे बेसी तेजी आयी। इया अेम अे में भी श्री नरोत्तमदास स्वामी अर डॉ माधोदास व्यास रै सौजन्य सू राजस्थानी (वीं टेम डिंगळ) रौ पेपर भी लियो थो। श्री परमानद सारस्वत जद राजस्थानी अकादमी सचिव हा तद वा म्हनै राजस्थानी मे कहाणी सग्रै त्यार करण सारू कैयो अर म्हैं 'काळी काठळ' री पाण्डुलिपि त्यार करी।

प्रश्न राजस्थानी मे काळी काठळ' अर 'पाणी' दोय कहाणी सग्रै छप्या पछै ई अर राजस्थानी कहाणीकार--व्यग्यकार--आलोचक कवि रूप ओळख बणाया पछै ई अर आलोचक रूप था दूजै रचनाकारा माथै खूब लिख्यो है पण आपरी रचनावा माथै घणो नी लिख्यो कोई ... अर चरचा ई कमती हुई। क्यू ?

उत्तर म्हारी रचनावा माथै साचैई नीं लिख्योग्यो अर चरचा भी कमती हुई। पैली बात आप सू ई पूछू -- थारी देख--रेख म पाणी' कहाणी--सग्रै छप्यो पण प्रकासक के रूप

मे (नेगचार प्रकाशन) कित्ती चर्चावा री गोष्ठिया कराई ? सायत केन्द्रीय अकादमी मे पाणी पोथी ई कोनी मेली। आ वात थे साची कैवौ कै आलोचक रूप मे म्हैं दूजै साहित्यकारा माथै काफी लिख्यो भी है अर रिसर्च भी कराई है पण म्हनै काई हासिल हुयो। म्हैं केन्द्रीय अकादमी रै राजस्थानी विभाग रो केई साला ताई समीक्षक रैयो अर पुरस्कारा सारू भिडयो भी पण म्हारी हालत तो सागी ई है – अब तेरा क्या होगा केवलिया' (शोले' फिल्म दाई) राजस्थान साहित्य अकादमी कानी सू म्हैं 'राजस्थान के हास्य व्यग्यकार' पोथी रो सम्पादन करयो। विज्ञापना सू प्रचार करायो अर रचनावा सारू लिख्यो भी अर जद पोथी छप'र आवी तद वीं माथै गोष्ठी हुवी – दोय साहित्यकारा म्हारै सू पूछयो – इण माय रचनावा स्तरहीन है। म्हैं पडूतर दियो – साची बात है। इण मे आपरी रचना भी सामिल है। दूजै साहित्यकार अेक घटा ताई म्हारी सम्पादित पोथी री फूस खिडाई। हैवट म्हैं लोगा सू कैयो – थे कैवो तो म्हैं इण महाशय सू अेक सवाल पूछणो चावू हा हा' सगळा जणा हामी भरी। म्हैं बासू कैयो – थे सिरफ हा का ना मे पडूतर द्यो कै थे इण पोथी री सकल–सूरत भी देखी है का नी। वा रीसा बळता कैयो – नी पढी तो कोनी। इण भात दूरदर्शन जयपुर सू म्हैं 'राजस्थानी रै नाटका' री परिचरचा मे भाग लियो। आधुनिक राजस्थानी रा तीन नाटक म्हारी छपयोडी पोथी अर हिन्दी मे भी अेक नाटक है – सबधो के खडहर'। पण बठै चार–पाच जणा खुद री रचनावा माथै म्हैं सू सुपरलेटिव डिग्री मे तारीफ कराई पण वा ऐठे मूडै भी म्हारै नाटक रो नाव नीं लियो। अबै थे काई कैवो ? म्हारी फोरी किस्मत का गुटबाजी ? हां म्हू श्री नागराज शर्मा रो आभार मानू कै बै हरसाल म्हारी अेक व्यग्य रचना बिणजारो' मे छाप'र म्हनै लिखण री प्रेरणा दे वता रैवै।

प्रश्न कहाणी मे ई व्यग्य अर निबन्ध ई व्यग्य–निबन्ध कथीजै फेर न्यारी–न्यारी विधा रूप व्यग्य री काई जरूरत पडी। अर राजस्थानी मे तो व्यग्य मूल मे कथा अर निबन्ध माय मिलै।

उत्तर पैली व्यग्य रो सुतंतर रूप नीं हो। कहाणी निबध नाटक इत्याद मे तो आज भी ओ व्यग्य पसरयोडो है। हिन्दी मे भी व्यग्य इणी विधावा मे निगै आवतो हो पण पछै इण रो न्यारौ रूप थरपीज्यो है। म्हैं खुद इण विषय माथै पी–एच डी कराई ही। हिन्दी की गद्य विधाओ मे हास्य व्यग्य' पैली तो हास्य भी व्यग्य रै सागै चिपक्योडो हो अबै हास्य अन्त सलिला दाई व्यग्य मे बैवै जरूर है पण हावी कोनी हुवै।

प्रश्न काई राजस्थानी मे व्यग्य री विधा रूप न्यारी–निरवाळी ओळख बणी है ?

उत्तर निस्चैई राजस्थानी मे विधा रूप मे न्यारी–निरवाळी पिछाण बणी है। अबै तो दूजी विधावा रै उणियार ई नीं वा सू बेसी लेखण व्यग्य विधा मे होय रैयौ है। मायनली तडप व्यग्या मे ई साची अभिव्यक्ति पाय सकै है। आज री राजस्थानी व्यग्य विधा माथै आपा रो अजसणो सही है।

प्रश्न राजस्थानी माय आलोचना कमती लिखीजी है अर व्यग्य नै ई मोटै अरथा मे आलोचना रो अेक रूप मान सका। व्यग्यकार ई आलोचक हुवे .. फेर व्यग्य तो आदरीजै हास्य रै पुट सू हसावै पण आलोचना अर खरी आलोचना खारी क्यू हुवै ?

उत्तर आलोचना अर व्यग्य मे घणौ फरक है। आलोचना तो साहित्य अर वा री विधावा री हुवै पण व्यग्य तो सगळै जीवण री आलोचना है। म्हैं व्यग्य नै आलोचना रो रूप

कोनी मानू। आलोचना का समीक्षा रो जुडाव साहित्य सू हुवै आ बात म्हैं पैला ई कैय दी है। आलोचना जे खरी है तो खारी नी लाग सकै है पण आलोचक व्यक्तिगत रुचिया सू बच नीं सकै है। व्यग्य मे व्यक्तिगत रुचि अर आरोपा रा कोई ठोर नी है। म्हारी अेक हिन्दी व्यग्य रचना 'प्रिय पुरस्कार पाने का प्रयास करो' छपी तद घणा साहित्यकार नाराज होया कै ओ 'पर्सनल व्यग्य' है। व्यग्य तो सदीव ई इमपर्सनल हुवै बो समूचै परिवेस माथै प्रहार करै पण क्युइक लिखारा खुद नै ई सगळो परिवेस मान बैठै फेर काई करा ?

प्रश्न भाषा विज्ञान री दीठ सू राजस्थानी हिंदी री उपभाषा रूप ई पढाइजै। आज भाषा री पदवी लेवण खातर जद आदोलन मान्यता सारू करीज रैयो है अर भाषा रूप राजस्थानी नै विद्वाना मानी है फेर ई अवखाई आय रैयी है। इणरौ काई कारण मानो ?

उत्तर लारलै दिना जैपुर मे राजस्थानी री 'मान्यता' सारू सचिवालय मे दिनाक 29 नवम्बर 2000 बुधवार नै शिक्षा सचिव जी री अध्यक्षता मे विचार विमर्स होयो। म्हैं भाषा विज्ञान री दीठ सू राजस्थानी नै भाषा रूप ई सिद्ध कर्यो। पण मान्यता री बात राजनीति सू जुडयोडी है।

प्रश्न राजस्थानी भाषा री पोथ्या बिकै कोनी इण रो काई कारण है ? अर जद पोथ्या बिकै कोनी तद लेखक घरू खरचो लगार पोथ्या क्यू छापै ? क्यू लिखै ?

उत्तर इया तो आजकल किणी भी भाषा री पोथ्या बिकै कोनी। पाठका री रुचि पैला सू भी कमती होयगी है। फेर भी लिखण री गति रुकै कोनी। तिकडमी लोग छपवा भी लेवै। बीजा लोग घरू खरचो भी बरदास्त कर लेवै। साहित्य री धारा तो रुकै कोनी।

प्रश्न पुरस्कारा खातर कथीजै कै जोड–तोड सू मिलै। काई इण आळी नै थे ठीक मानो ?

उत्तर बिगर 'जोड–तोड' नीं भी मिले तो भी पुरस्कारा नै इण पेटै राख्यो जावै। 'नोबल पुरस्कार' तकातक नीं बच्या है। लारलै दिना राष्ट्रीय फिल्मी पुरस्कारा माथै भी धूळ उडी ही। सावर दइया जी री बात सावसाची है। "जिणनै पुरस्कार मिल्यो हुवै बो कैवै अबकलै सही निर्णय हुयो है। दूजो गुट च्यारूमेर अेक ई बात उछालै – औ पुरस्कार साठ–गाठ सू मिल्यौ है। फलाणियो पूरो तिकड़मबाज है। जिकै नै नीं मिले बो धमीडा लेवै ई है।

प्रश्न भाषा अर साहित्य पेटै काई अकादमी अर दूजी सस्थावा आपरो काम ठीक कर रैयी है ?

उत्तर अकादमया अर दूजी सस्थावा माथै अध्यक्ष रो पूरो प्रभाव हुवै अर आ पोस्ट – 'राजनैतिक' है जे अध्यक्ष साहित्यकार का साहित्यानुरागी हुवै तो काम ठीक चालै नींतर अेकलै गुट ताही सिमट'र रैय जावै।

प्रश्न लघु पत्रिकावा नै किण ढाळै मानो ?

उत्तर लघु पत्रिकावा ई साचै अरथ मे साहित्य री रक्षा अर उणरो विगसाव कर रैयी है।

प्रश्न इक्कीसवीं सदी मे केई भाषावा रै समूळ मिटण री घोषणा सुणण मे आई है ? काई राजस्थानी नै कोई खतरो है ? मीडिया रो असर ई तेज है।

उत्तर जींवत भाषा समूळ कोनी मिट सकै है। मीडिया रै प्रभाव सू भाषावा मे

विकार तो आ ई सकै है – हिन्दी मे आय रैयो है पण मीडिया भी पूरी तरिया सू भाषा नै मिटा कोनी सकै।

प्रश्न बरसा पैली राजस्थान साहित्य अकादमी खातर था व्यग्य सकलन रो सपादन करयो अर राजस्थान री विविध विधावा माथै बरोबर लिखता रैया हो। व्यग्य अर विविध विधावा पेटै राजस्थान री हिदी अर राजस्थानी री काई कोई साख जोड मे बणी है।

उत्तर बरसा पैली राजस्थान साहित्य अकादमी म्हैं सू दोय पोथ्या रो सकलन–सम्पादण करायो। 'सूर्यकरण पारीक निबन्धावली' अर 'राजस्थान के हास्य व्यग्यकार'। जठै ताई राजस्थानी री साखजोड रो सवाल है – आ घणी सबळी अर समृद्ध भाषा होवण रै बावजूद इण मे गद्य री विविध विधावा माथै भोत अधिक काम नीं हुयो है। थोडा लेखक जिका सगळी विधावा माथै लिख रैया है वा रो सही मूल्याकन नीं होय रैयो है अर बीजा लेखक कमती लिख'र 'मान्यता' सारू खुदरी सगती नष्ट कर रैया है जद कै म्हैं कैय चुक्यो हू कै ओ राजनीति रो सवाल है। जद ताई राजनेता नी चावै की कोनी होय सकै। आपानै लेखण आद मे सगती लगावणी चाहिजै। सगळी नूवी विधावा माथै लिखणी चाहिजै।

✿ ✿

आपरी व्यग्य रचनावा मैं पढतो रह्यो हू। आज रै समाज रा पाखड अर प्रपचा माथै आपरी कलम पूरी प्रखरता सू चोट करै। आपरै वक्र– व्यजना– कौसल अर धारदार भाषा रो रस पाठका नै बाधणै री क्षमता राखै। गिनीज बुक सारू' पोथी रूप में छपण सू आपरै जस नै घणो बधावै म्हारी या ही सुभकामना है।

डॉ मनोहर प्रभाकर जयपुर

जागती जोत' अप्रेल अक में आपरी नुवी व्यग्य रचना सागेडी है। यथार्थ रा सटीक अर रोचक चित्रण सारू हार्दिक बधाई। साचाणी भ्रष्टाचार रो मोतियाबिंद आपरो काम पक्का इरादा सू काड रैयो है। भ्रष्टाचार रा इण पक्का इरादा आगळ आम आदमी री मजबूरी आपरी रचना रा व्यग्य में चमके। पाठक रै हिये उतरती अर झकझोरती व्यग्य रचनावा सारू आपनै घणा रग। राजस्थानी साहित्य मे व्यग्य री आवश्यकता पूर्ति पेटै आपरी लागणी सरावण जोग है। पोथी प्रकाशन री घणी बधाई।

प्रहलाद श्रीमाली चेन्नई

"म्हनै पतियारो है – केवलिया जी रै व्यग्य–सग्रै – गिनीज बुक सारू' गिनीज बुक मे दरज व्हैणै जोग है। याका व्यग घणा ठावा काळजै नै बींधै जिसा है आपा री रास्कति आपा रा समाज रै मुजब खटमीठा सवाद ज्यू लागै अर बीकाणै री लीली मरच ज्यू तीखा तिलमिलायें'र राख देवै अर पाठक ने सोचणे नै मजबूर कर देवै। केवलिया जी रा कई व्यग घणा चरचित हुया है। व्यान भी राजस्थानी माय आच्छा अर ठावा व्यग लिखणिया व्हाळा रो घणौ टोटौ है। अै अेकला ई दस व्यगकारा रै बरोबर है। या री कलम रा व्यग पारखी इज समझ सकै।

हरमन चौहान उदयपुर